समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक : मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, अटल नगर, नवा रायपुर (छ.ग.) संख्या: 30477 शासकीय शालाओं हेतु निःशुल्क प्रदाय

छत्तीसगढ़ शासन

सत्यमेव जयते

स्कूल रेडीनेस

शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

प्रेरणा स्रोत

श्री सिद्धार्थ कोमल सिंह परदेशी (भा.प्र.से.)
सचिव
छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग

संरक्षक

दिव्या उमेश मिश्रा (भा.प्र.से.)
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

श्री संजीव कुमार झा (भा.प्र.से.)
प्रबंध संचालक
समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

मार्गदर्शक

श्री जे.पी.रथ
अतिरिक्त संचालक

सहयोग

पुष्पा किस्पोट्टा
प्राध्यापक

समन्वय

आई.संध्या रानी
सहायक प्राध्यापक

डॉ.जयभारती चंद्राकर
सहायक प्राध्यापक

सुशील राठोड़
सहायक प्राध्यापक

अकादमिक समन्वय

सुनील मिश्रा, मधु दानी

लेखन समूह

द्रोण साहू, तारकेश्वर देवांगन, विनय शरण सिंह, नेमसिंह कौशिक, उत्तम साहू, दीपेश पुरोहित, मनीष मिश्रा, योगेश्वरी महाडिक, वर्षारानी गुप्ता, वाणी मसीह, सत्येन्द्र कुमार बसंत, योगेश चंद्राकर, योगेश्वरी तम्बोली, चंद्रप्रकाश राजपूत, सत्या कौशिक, रेवा राम साहू, कुलदीप यादव, चंद्रप्रकाश साहू, मधु दानी, जागेश्वर प्रसाद साहू, सुमित पाण्डेय, मीनाक्षी राव, मिलिंद्र चंद्रा

टंकण

सत्येन्द्र कुमार बसंत, चंद्रप्रकाश राजपूत

सत्र 2025-26

दो बातें

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। इसी तारतम्य में परिषद् ने विद्यालय के कक्षा 1 के बच्चों के लिए स्कूल रेडीनेस 'विद्या आनंद' (मजा मजा म सिखबो) तीन माह का खेल आधारित शाला तैयारी अभ्यास-पुस्तिका का निर्माण किया है। इस अभ्यास-पुस्तिका में बच्चों के लिए तीन लक्ष्यों पर आधारित खेल-खेल में किए जाने वाले गतिविधियाँ दी गयीं हैं जिससे बच्चे मजे-मजे में गतिविधियाँ करेंगे और सीखेंगे। इस तरह से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन के लिए परिषद् बहुत दृढ़ता के साथ आगे बढ़ रही है।

'स्कूल रेडीनेस' तीन माह का खेल आधारित शाला तैयारी कार्यक्रम के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण संदर्शिका निर्माण परिषद् की अच्छी पहल है, क्योंकि हमारे राज्य में यह देखा गया है कि औपचारिक रूप से प्रारंभिक कक्षा में आने से पहले बच्चों को सीखने-सिखाने का माहौल नहीं मिल पाता है जिसके कारण प्रारंभिक कक्षा में आते-आते बच्चे सीखने-सिखाने से दूर भागने लगते हैं तथा पिछड़ते चले जाते हैं। इस तरह से देखा जाए तो यह स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम प्रारंभिक कक्षा में आने से पहले बच्चे की तैयारी है। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि यही वह समय है, जब बच्चा बुनियादी भाषा साक्षरता तथा बुनियादी संख्या का ज्ञान के पूर्व कौशलों को सीखता है। यदि इस समय का सही और बेहतर उपयोग नहीं किया गया तथा इस कार्यक्रम को बेहतर ढंग से नहीं समझा गया, तो बच्चे आगे जाकर प्रारंभिक कक्षा में सीखने में पिछड़ते चले जाएँगे।

प्रस्तुत संदर्शिका इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। भाषा तथा गणित दो ऐसे विषय हैं, जिन्हें सीखने-सिखाने के लिए भाषा तथा गणित पूर्व कई छोटे-छोटे कौशलों पर महारत हासिल करने की आवश्यकता होती है। तब जाकर वे पठन, लेखन तथा गणितीय संक्रियाओं में निपुण हो पाते हैं। भाषा तथा गणित पूर्व अवधारणाओं पर काम न करना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे बच्चे को सीढ़ी के सीधे पाँचवें पायदान पर पैर रखने के लिए कहना। जब तक बच्चे को स्कूल रेडीनेस के इस कार्यक्रम से गुजारा नहीं जाएगा, वे आगे जाकर बेहतर ढंग से नहीं सीख पाएँगे। हम चाहते हैं कि हमारे राज्य के 100% बच्चे बुनियादी भाषा साक्षरता एवं बुनियादी संख्या ज्ञान के कौशलों में निपुण हो पाएँ।

इस संदर्शिका में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा निपुण भारत मिशन के तहत दिए गए दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखकर सरल से सरल भाषा में स्कूल रेडीनेस के कार्यक्रम को समझाने का प्रयास किया गया है। दूसरे तरीके से कहें तो यह संदर्शिका सिद्धांतों और गतिविधियों का मिला-जुला रूप है। इसमें प्रत्येक अवधारणा को क्या, क्यों, कैसे तथा उसे एक उदाहरण के साथ समझाने का प्रयास किया गया है जिससे शिक्षक इन गतिविधियों को सरलता से बच्चों के साथ कर सकें। शिक्षक स्वयं गतिविधियों का निर्माण कर सकते हैं और बच्चों की सीखने की गति को बढ़ा सकते हैं।

यह संदर्शिका हमारे शिक्षकों, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन तथा सी.एल.आर. के अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप आपके हाथ में है जिसके लिए हम इनका हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

आशा है यह संदर्शिका हमारे शिक्षकों को 'स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम' की बेहतर समझ बनाने में मददगार होगी तथा वे हमारे नौनिहालों को प्रारंभिक कक्षा के लिए बेहतर ढंग से तैयार कर पाएँगे। इस संदर्शिका को और अधिक बेहतर बनाने के लिए यदि आपके पास कोई सुझाव हो तो उसकी हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1-	स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम; परिचय, आवश्यकता और लक्ष्य	1-24
2-	स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम में शामिल प्रमुख शिक्षण सत्र एवं गतिविधियाँ	25-91
3-	स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम का नियोजन और क्रियान्वयन	92-104
4-	आकलन, 21वीं सदी का शिक्षण शास्त्र, समावेशी शिक्षा	105-131
5-	परिशिष्ट	132-135
6-	संदर्भ सूची	136
7-	समय सारिणी	137-141

अध्याय-1 स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम; परिचय, आवश्यकता और लक्ष्य

प्रशिक्षण योजना

सत्र का नाम : राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020, निपुण भारत और बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) मिशन

सत्र का उद्देश्य : 1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 से परिचित हो पाएँगे।

2. निपुण भारत को जान पाएँगे।

3. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) मिशन के बारे में जानकारी मिल पाएगी।

सत्र का नाम	गतिविधि का नाम	समय	प्रक्रिया	आवश्यक सामग्री
राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020, निपुण भारत और बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) मिशन	छोटे-छोटे समूहों में कार्य करना और चर्चा करना	40 मिनट	1. प्रशिक्षार्थियों को तीन समूह में बाँट देंगे। 2. प्रिंटेड कापी प्रत्येक समूह को बाँटेंगे। 3. दी गई अध्ययन सामग्री को अपने-अपने समूह में चर्चा करने का निर्देश देंगे। 4. प्रत्येक समूह आपसी चर्चा करके मुख्य बिंदुओं को दर्शाते हुए प्रस्तुतीकरण तैयार करेंगे। 5. सभी समूह बारी-बारी से प्रस्तुतीकरण देंगे एवं अन्य समूह से चर्चा भी करेंगे।	1. NEP-2020, NIPUN BHARAT और FLN मिशन का चार-चार पेज का प्रिंटेड कापी 2. कोरा कागज 3. स्केच पेन
स्कूल रेडीनेस एक परिचय	बड़े समूह में कार्य करना	40 मिनट	समूह से प्रश्न पूछेंगे कि प्राथमिक विद्यालय में कक्षा-1 में प्रवेशित बच्चों के प्रारंभिक शिक्षण में आपको किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है। आपके स्कूल के बच्चों में भाषापूर्व तथा संख्या पूर्व ज्ञान का स्तर कैसा है। 1. प्रश्नों के उत्तर के आधार पर शिक्षकों से चर्चा को आगे बढ़ाएँगे। 2. PPT के माध्यम से स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी देंगे।	PPT प्रस्तुतीकरण हेतु आवश्यक सामग्री

मुख्य अपेक्षाएँ :- इस सत्र के पश्चात शिक्षक NEP-2020, NIPUN BHARAT और FLN मिशन की प्राथमिक शिक्षा के संबंध में अवधारणाओं को समझ पाएँगे।

सत्र का नाम : स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम का परिचय व महत्व।

सत्र का उद्देश्य :-

1. स्कूल रेडीनेस को समझते हुए इसकी आवश्यकता तथा संचालन के बारे में जान पाएँगे।

2. स्कूल रेडीनेस की समय सीमा एवं इसके मुख्य उद्देश्यों की जानकारी मिलेगी।

मुख्य अपेक्षाएँ:-शिक्षकों को शाला पूर्व तैयारी करने में मार्गदर्शन प्राप्त होगा तथा विद्यालय में क्रियान्वयन में मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एक परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष जोर देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसी बुनियादी क्षमताओं के साथ-साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आधारभूत सिद्धांत-

- हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना, शिक्षकों और अभिभावकों को इन क्षमताओं के प्रति संवेदनशील बनाना जिससे वे बच्चे की अकादमिक और अन्य क्षमताओं में उसके सर्वांगीण विकास पर भी पूरा ध्यान दें।
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना जिससे सभी बच्चे कक्षा-3 तक साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसे सीखने के मूलभूत कौशलों को हासिल कर सकें।
- लचीलापन, ताकि शिक्षार्थियों में उनके सीखने के तौर-तरीके और कार्यक्रमों को चुनने की क्षमता हो, और इस तरह वे अपनी प्रतिभा और रुचियों के अनुसार जीवन में अपना रास्ता चुन सकें।
- कला और विज्ञान के बीच पाठयक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं, आदि के बीच कोई स्पष्ट अलगाव न हों, जिससे ज्ञान क्षेत्रों के बीच हानिकारक ऊँच-नीच और परस्पर दूरी एवं असंबद्धता को दूर किया जा सके।
- सभी ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए एक बहु-विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु-विषयक और समग्र शिक्षा का विकास।
- अवधारणात्मक समझ पर जोर, न कि रटंत पद्धति और केवल परीक्षा के लिए पढ़ाई।
- रचनात्मकता और तार्किक सोच तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए।
- नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे, सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना सार्वजानिक संपत्ति के लिए सम्मान वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी बहुलतावाद, समानता और न्याय।
- बहुभाषिकता और अध्ययन अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन।
- जीवन कौशल जैसे, आपसी संवाद सहयोग, सामूहिक कार्य और लचीलापन।

- सीखने के लिए सतत मूल्यांकन पर जोर, इसके बजाय कि साल के अंत में होने वाली परीक्षा को केंद्र में रखकर शिक्षण हो जिससे कि आज की 'कोचिंग संस्कृति' को ही बढ़ावा मिलता है।
- तकनीकी के यथासंभव उपयोग पर जोर, अध्ययन अध्यापन कार्य में, भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने में दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा को सुलभ बनाने में और शैक्षणिक नियोजन और प्रबंधन में।
- सभी पाठ्यक्रम, शिक्षण शास्त्र और नीति में स्थानीय संदर्भ की विविधता और स्थानीय परिवेश के लिए एक सम्मान, हमेशा ध्यान में रखते हुए कि शिक्षा एक समवर्ती विषय है।
- सभी शैक्षिक निर्णयों की आधारशिला के रूप में पूर्ण समता और समावेशन, साथ ही शिक्षा को लोगों की पहुँच और सामर्थ्य के दायरे में रखना यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी छात्र शिक्षा प्रणाली में सफलता हासिल कर सकें।
- स्कूली शिक्षा से उच्चतर शिक्षा तक सभी स्तरों के शिक्षा पाठ्यक्रम में तालमेल, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल तथा शिक्षा से।
- शिक्षकों और संकाय को सीखने की प्रक्रिया का केंद्र मानना, उनकी भर्ती और तैयारी की उत्कृष्ट व्यवस्था निरंतर व्यावसायिक विकास और सकारात्मक कार्य वातावरण और सेवा की स्थिति।
- शैक्षिक प्रणाली की अखंडता, पारदर्शिता और संसाधन कुशलता ऑडिट और सार्वजनिक प्रकटीकरण के माध्यम से सुनिश्चित करने के लिए एक 'हल्का, लेकिन प्रभावी नियामक ढाँचा' साथ ही साथ स्वायत्तता, सुशासन और सशक्तिकरण के माध्यम से नवाचार और आउट ऑफ द बॉक्स विचारों को प्रोत्साहित करना।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के लिए उत्कृष्ट स्तर का शोध।
- शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा निरंतर अनुसंधान और नियमित मूल्यांकन के आधार पर प्रगति की सतत समीक्षा।
- भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहना, और जहाँ प्रासंगिक लगे वहाँ भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं को शामिल करना और उससे प्रेरणा पाना।
- शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच को प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना जाना चाहिए।
- एक मजबूत, जीवंत सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में पर्याप्त निवेश, साथ ही सच्चे परोपकारी निजी और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहन और सुविधा।

नीति का विज़न

इस राष्ट्रीय शिक्षा का विज़न भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्चतर गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराके और भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवंत और न्यायसंगत ज्ञान समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेंगी। नीति में परिकल्पित है कि हमारे संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षाविधि छात्रों में अपने मौलिक दायित्वों और संवैधानिक मूल्यों, देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न करें। नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में भी और साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए जो मानवाधिकारों, स्थायी विकास और जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो, ताकि वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सकें।

निपुण भारत

NIPUN का पूरा नाम National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy है। निपुण भारत कार्यक्रम का उद्देश्य बुनियादी शिक्षा और संख्यात्मक ज्ञान के लिए एक सुलभ वातावरण प्रदान करना है। इसके साथ ही यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाएगा कि प्रत्येक बच्चा कक्षा 3 के अंत तक 2026-27 तक पढ़ने, लिखने और अंकगणित में वांछित सीखने की क्षमता हासिल कर ले। इस पहल को शिक्षा मंत्रालय के स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग द्वारा आगे बढ़ाया जाएगा। इसमें 100% बच्चे बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान में दक्ष किए जाने का लक्ष्य रखा गया है।

नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी (NIPUN) के माध्यम से देश की शिक्षा में आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के ज्ञान को छात्रों को प्रदान किया जाएगा। निपुण भारत कार्यान्वयन प्रक्रिया के अंतर्गत सन 2026-27 तक प्रत्येक वह बच्चा जो तीसरी कक्षा पास कर चुका हो, उसे पढ़ने, लिखने एवं अंकगणित का पूरा ज्ञान होगा अर्थात् उन्हें सीखने की क्षमता प्रदान की जाएगी। NIPUN योजना के लिए 5 स्तरीय तंत्र राष्ट्रीय-राज्य-जिला-ब्लाक-स्कूल स्तर पर संचालित किया जाएगा जिसका कार्यान्वयन स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के अंतर्गत किया जाएगा।

मूलभूत भाषा एवं साक्षरता

(Basic Language and Literacy)

- मौखिक भाषा का विकास
- ध्वनि जागरूकता
- डिकोडिंग
- शब्दावली
- समझ के साथ पठन
- पठन प्रवाह
- पठन की संस्कृति

मूलभूत संख्यामकता और गणितीय कौशल (Basic Numeracy and Math Skills)

- संख्या पूर्व अवधारणाएँ
- संख्या एवं संख्याओं के साथ संक्रियाएँ
- गणितीय तकनीकें
- मापन
- आकार एवं स्थानिक समाज
- पैटर्न

FLN (Foundational Literacy and Numeracy) क्या है-

- F- Foundational (मूलभूत)
- L- Literacy (साक्षरता)
- N- Numeracy (संख्यात्मकता)

(Foundational Literacy and Numeracy) **मूलभूत साक्षरता व संख्यात्मकता** FLN का पूरा नाम है। FLN कक्षा 3 के अंत तक सरल वाक्यों को अर्थ के साथ पढ़ने और बुनियादी गणित की समस्याओं को हल करने की एक बच्चे की क्षमता को संदर्भित करता है। ये महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार कौशल हैं जो बच्चों को उच्च कक्षाओं में सार्थक रूप से सीखने में मदद करते हैं और उन्हें 21 वीं सदी के कौशल जैसे महत्वपूर्ण सोच और समस्या समाधान हासिल करने में मदद करते हैं और आगे जाकर सफल होने के लिए अनिवार्य है।

बुनियादी साक्षरता क्या है :-

भाषा के वे बुनियादी कौशल जो बच्चों के सीखने की आधारशिला तैयार करते हैं। इसमें शामिल है:-

- समझ के साथ सुनना और प्रतिक्रिया देना
- स्वयं को मौखिक रूप से अभिव्यक्त करना
- प्रवाहपूर्ण ढंग से और गहरी समझ के साथ पढ़ना
- किसी विषय पर 3-4 वाक्यों में अपने शब्दों में लिखना

बुनियादी साक्षरता में तर्क सहित चिंतन एक महत्वपूर्ण आधार है।

बुनियादी संख्या ज्ञान क्या है:-

गणित से जुड़े बुनियादी कौशल

- संख्याओं व गणितीय संक्रियाओं की समझ बनाना व उनसे संबंधित व्यावहारिक सवालों को हल कर पाना।
- गणितीय अवधारणाओं, जैसे- आकृति, पैटर्न, आँकड़ों का उपयोग, माप आदि को समझना एवं इनसे संबंधित सरल सवालों को हल करना।
- गणितीय सोच व कौशल- तर्क करना, सामान्यीकरण, समस्या समाधान, सन्निकटन, अनुमान लगाना, गणितीय संप्रेषण आदि का विकास कर पाना।
- दैनिक जीवन में तार्किक चिंतन, गणितीय अवधारणाओं व कौशलों का प्रयोग करना।

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की आवश्यकता क्यों?

- हमारे देश में ऐसे बच्चों की संख्या बहुत बड़ी है, जो बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान के कौशल हासिल नहीं कर पा रहे हैं। विभिन्न शैक्षिक सर्वे एवं शोध, जैसे NCERT द्वारा संचालित राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (NAS) व प्रथम संस्था द्वारा संचालित ASER इस बात को पुख्ता करते हैं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 द्वारा साझा किए गए आँकड़ों के अनुसार, वर्तमान में प्राथमिक विद्यालयों में 5 करोड़ से भी अधिक संख्या में शिक्षार्थी बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान हासिल नहीं कर पाए हैं।
- नतीजतन, बड़ी कक्षाओं में पहुँचने पर भी एक बड़ी संख्या में बच्चे कक्षा 1 और 2 के स्तर के पाठ को पढ़कर समझने, सवाल हल करने जैसे बुनियादी कामों में भी सक्षम नहीं हो पाते हैं। ऐसे में अपनी मौजूदा कक्षा के स्तर के अनुरूप सीख पाना व सफलतापूर्वक स्कूली शिक्षा पूरी करना लगभग असंभव हो जाता है।

स्कूल रेडीनेस प्रोग्राम क्या?

> **वर्तमान समय में ई.सी.सी.ई. की सभी तक पहुँच नहीं होने के कारण बच्चों का एक बड़ा हिस्सा प्रथम कक्षा में प्रवेश पाने के कुछ ही हफ्तों बाद अपने सहपाठियों से पिछड़ जाता है। इसलिए एन.सी.ई.आर.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. के द्वारा कक्षा-1 के विद्यार्थियों के लिए अल्पकालीन 3 महीने का प्ले-आधारित स्कूल तैयारी माड्यूल बनाया जाएगा, जिसमें गतिविधियाँ और वर्कबुक होंगी जिनमें अक्षर, ध्वनियाँ, शब्द, रंग, आकार, संख्या आदि शामिल होंगे। इस माड्यूल को क्रियान्वित करने में सहपाठियों और अभिभावकों का भी योगदान लिया जाएगा। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि हर विद्यार्थी स्कूल के लिए तैयार है।**
>
> **राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020**

स्कूल रेडीनेस प्रोग्राम बच्चों को आवश्यक शिक्षा, व्यक्तिगत प्रबंधन, कक्षा की बहुमुखी प्रतिभा और समूह सीखने की क्षमताओं सहित मौलिक शैक्षणिक कौशल में प्रशिक्षण देने पर केंद्रित है जो प्रभावी स्कूल एकीकरण के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में ढाँचागत बदलाव के अंतर्गत शिक्षा के शुरूआती चरण की रूपरेखा इस प्रकार बताई गई है-

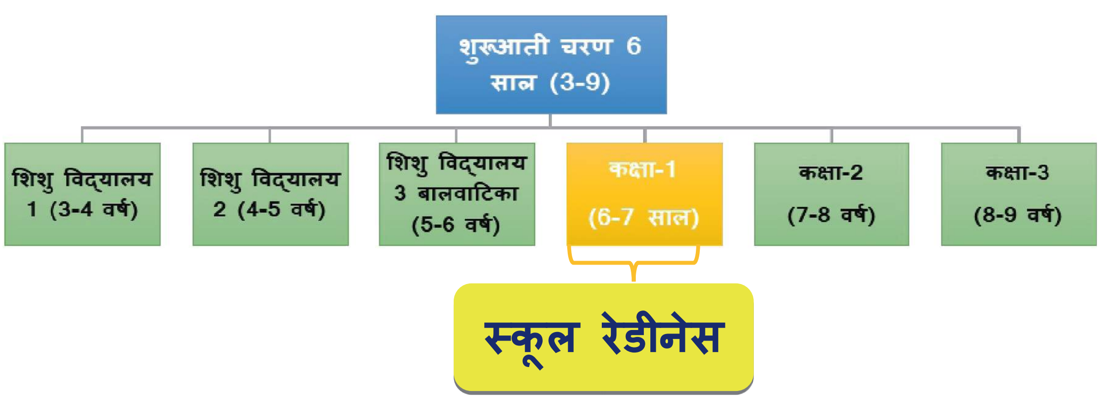

मॉड्यूल की समय सीमा- मॉड्यूल को कक्षा-1 में प्रवेश करने वाले सभी बच्चों के सीखने के अवसर को सप्ताह में छह दिन, दिन में चार घंटे, कक्षा-1 के शुरूआती तीन महीने या 12 सप्ताह की अवधि के लिए प्रदान किये जाना चाहिये। हालांकि प्रति दिन चार घंटे के कार्यक्रम की समय सीमा आसान होती है और शिक्षक आवश्यकता के अनुसार समय सीमा को कम या बढ़ा सकते है। शनिवार को चलने वाले स्कूलों में शिक्षक की गई गतिविधियों का पुनर्व्यवस्था कर सकते हैं और अगले सप्ताह की योजना भी बना सकते हैं।

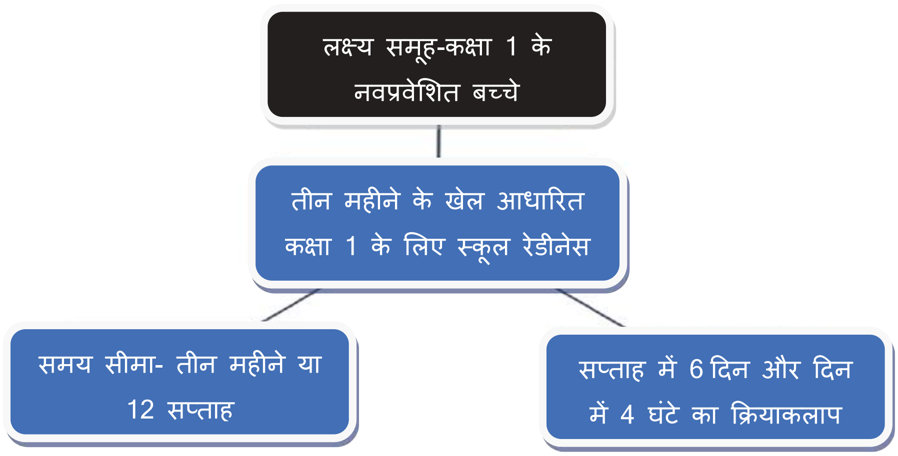

स्कूल रेडीनेस की आवश्यकता क्यों ?

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत प्रारंभिक बाल्यावस्था में बच्चों की उचित देखभाल, पोषण और उनका सर्वांगीण विकास महत्त्वपूर्ण है। इस आयु वर्ग में बच्चों का बौद्धिक व शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है। इसके लिए बच्चों को पर्याप्त अवसर व प्रोत्साहन का माहौल मिलना ज़रूरी है। राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा नीति (2013), प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, (2005) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में इस आयु वर्ग के महत्त्व को स्वीकारते हुए पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा बाल केन्द्रित व खेल कूद गतिविधि (Playway Method) पर आधारित होनी चाहिए। पढ़ने-लिखने की क्षमता और संख्याओं के साथ बुनियादी संक्रियाएँ करने की दक्षता स्कूल के साथ ही भविष्य में भी सीखने समझने के लिए एक आवश्यक एवं अनिवार्य अपेक्षा है। हालांकि कई सरकारी और गैर-सरकारी सर्वेक्षण के बाद ये स्पष्ट रूप से चिह्नित किया गया है कि वर्तमान समय में सीखने से संबंधित कई बुनियादी कौशलों से विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या वंचित है। यह संख्या 5 करोड़ तक आँकी गई है। वे प्रारंभिक शिक्षा में बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान जैसे- साधारण वाक्यों को पढ़कर समझने की योग्यता और सामान्य जोड़-घटाव करने से वंचित हैं।

कोविड-19 महामारी के दौरान बच्चों के सीखने का स्तर बहुत अधिक प्रभावित हुआ है। जिसका प्रभाव उन पर मानसिक व भावनात्मक रूप से भी पड़ा है और इस दौरान पालकों का रोजगार भी काफी हद तक प्रभावित हुआ है। जिससे पढ़ाई के

प्रति उनके दृष्टिकोण में भी परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं। वर्तमान समय में प्राथमिक शालाओं में पढ़ने वाले बच्चों का एक बड़ा हिस्सा सीखने के संकट से गुजर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में अनुशंसा की गई है कि कक्षा-1 में प्रवेश करने वाले सभी बच्चे कम से कम 2030 तक स्कूल के लिए तैयार हों।

कई अध्ययनों से पता चलता है कि वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में एक बार जब छात्र मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान में पिछड़ जाते हैं, तो वे वर्षों तक उसी स्तर पर बने रहते हैं। कई सक्षम छात्रों ने खुद को इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में पाया है। वे इससे उबरने में असमर्थ हैं। कई छात्रों के लिए, यह स्कूल में उपस्थित नहीं होने या पूरी तरह से छोड़ने का एक प्रमुख कारण बन गया है। शिक्षकों ने इस समस्या की व्यापकता के कारण अत्यधिक कठिनाईयों का सामना किया है। उन्हें किसी कक्षा के अनिवार्य पाठ्यक्रम को पूरा कराने में भी काफी मुश्किल हुई है। इस कारण बड़ी संख्या में छात्र पीछे छूट गए हैं, इसलिए बुनियादी सीखना स्कूलों में सुनिश्चित करने एवं छात्रों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देने के लिए स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम की आवश्यकता है।

स्कूल की तत्परता शिक्षा की पहुँच में गुणवत्ता और समता सुनिश्चित करने के साथ-साथ अधिगम परिणामों में सुधार करने का आधार है। स्कूल की तत्परता के लिए एक सरल परिभाषा यह हो सकती है कि एक बच्चा जो स्कूल के लिए तैयार है, उसके पास विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों में बुनियादी न्यूनतम कौशल और ज्ञान हो, जो उसे स्कूल में सफल होने में सक्षम बनाते हैं। राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) पाठ्यचर्या की रूपरेखा, जो कि महिला और बाल विकास मंत्रालय (एम.डबल्यू.सी.डी.) द्वारा विकसित है, ने स्पष्ट किया है कि "बच्चों, स्कूलों और परिवारों को तब तैयार माना जाता है जब वे अन्य आयामों के साथ जुड़ने के लिए आवश्यक दक्षता और कौशल प्राप्त कर लेते हैं और घर से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) केंद्र तथा बाद में प्राथमिक स्कूल में बच्चों के सुचारू रूप से पारगमन का समर्थन करें।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पहली कक्षा के सभी छात्रों के लिए तीन महीने के खेल-आधारित **'स्कूल रेडीनेस मॉड्यूल'** के विकास की सिफारिश की है, जो कि एक अंतरिम उपाय के रूप में यह सुनिश्चित करने के लिए है कि सभी बच्चे स्कूल के लिए तैयार हों, जब तक कि गुणवत्तापूर्ण पूर्व स्कूली शिक्षा का सार्वभौमिक प्रावधान प्राप्त न हो जाए। स्कूल तैयारी मॉड्यूल (एस.पी.एम.) अनिवार्यतः लगभग 12 सप्ताह का हो, जिसमें पहली कक्षा की शुरुआत में बाल विकास अनुरूप अनुदेश हो और जिसे बच्चे की पूर्व-साक्षरता, पूर्व-संख्या ज्ञान, संज्ञानात्मक और सामाजिक कौशल को सशक्त बनाने के लिए तैयार किया गया हो। यह उम्मीद की जाती है कि इस मॉड्यूल में अक्षरों, ध्वनियों, शब्दों, रंगों, आकृतियों और संख्याओं के बारे में सीखने संबंधी गतिविधियाँ और कार्य पुस्तिकाएँ शामिल होंगी और साथियों और माता-पिता का सहयोग सम्मिलित होगा। तदनुसार, एन.सी.ई.आर.टी. ने तीन महीने का खेल आधारित 'स्कूल रेडीनेस मॉड्यूल' विकसित किया है, जिसे राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा उनकी आवश्यकता अनुसार अपनाया जाना है। एन.ई.पी.-2020 की परिकल्पना के अनुसार, समग्र शिक्षा यह भी प्राथमिकता देगी कि 5 वर्ष की आयु से पूर्व हर बच्चा एक "प्री-स्कूल " या "बालवाडी" में स्थानांतरित हो जाएगा। इन प्री-स्कूल कक्षाओं में अधिगम मुख्य रूप से खेल-आधारित शिक्षा पर आधारित होगा, जिसमें संज्ञानात्मक, भावात्मक, और मनोप्रेरक क्षमताओं के विकास और प्रारंभिक साक्षरता और संख्या ज्ञान को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

सीखने का संकट एवं इसके मूलभूत कारण

छात्रों का एक बड़ा हिस्सा प्राथमिक स्कूल के वर्षों के दौरान पीछे रह जाता है वह वास्तव में पहली कक्षा के शुरुआती कुछ सप्ताहों में ही पिछड़ जाता है। इस वर्तमान संकट का एक बड़ा कारण बच्चों के स्कूल आने के पहले की तैयारी में कमी से जुड़ी है। यह समस्या पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों और उन बच्चों के साथ है, जिनकी पूर्व प्राथमिक शिक्षा तक पहुँच नहीं है। यह बड़ी संख्या में उन बच्चों को प्रभावित करता है जो वंचित सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। प्रारंभिक वर्षों की स्कूली शिक्षा भी बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान पर बहुत कम जोर देती है। जैसे, भाषाओं के पढ़ने, लिखने, बोलने एवं गणितीय विचारों और सोच पर। वास्तव में, प्रारंभिक ग्रेड में पाठ्यक्रम रटने और अधिक यांत्रिक शैक्षणिक कौशल की ओर बहुत तेजी से बढ़ता है, जबकि बुनियादी दक्षताओं की तरफ उचित ध्यान नहीं दिया जाता है। जबकि किया यह जाना चाहिए कि छात्रों को पढ़ने लिखने, बोलने, गिनने, गणित, गणितीय और तार्किक सोच, समस्या को सुलझाने और रचनात्मक होने की तैयारी करा कर एक ठोस आधार दिया जाए। इससे भविष्य में उनका, सभी तरह का, सीखना अधिक तेज़, अधिक सुखद और अधिक वैयक्तिकृत एवं जीवनपर्यंत आसान हो जाएगा। प्रारंभिक स्कूलों के पाठ्यक्रम और शिक्षण, शिक्षाशास्त्र के इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए ही डिजाइन किया गया है। आगामी कार्यक्रम के क्रियान्वयन के अनुभवों के आधार पर इसमें परिवर्तन किए जा सकते हैं। शिक्षकों की क्षमता भी मूलभूत कौशल की प्राप्ति में एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। वर्तमान में, कुछ शिक्षकों को ही खेल-आधारित तथा बाल केंद्रित शिक्षण शैली में प्रशिक्षित होने का अवसर मिला है। बच्चे अपने स्कूल के शुरुआती वर्षों में स्वाभाविक रूप से विभिन्न स्तरों और गति के साथ सीखते हैं, जबकि वर्तमान औपचारिक प्रणाली बहुत ही सामान्य स्तर से शुरू होती है और सभी के लिए एक जैसी ही होती है, इसलिए कई छात्र तुरंत पीछे होने लगते हैं। एक अजनबी भाषा में अवधारणाओं पर समझ बनाना बच्चों के लिए मुश्किल होता है और उनका ध्यान भी अक्सर इसमें नहीं रहता है। यह बहुत ही पहले और अच्छे तरीके से स्थापित हो चुका है कि शुरुआती दिनों में बच्चों को अगर उनकी मातृभाषा में सिखाया जाए तो वो काफी सहज महसूस करते हैं और उनका सीखना भी तेज़ और अच्छा होता है।

प्राथमिक शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य : प्रमुख चुनौतियाँ

I. **बच्चों को बोलने के बहुत कम अवसर-** हमारी कक्षाओं में बच्चों को बोलने के बहुत कम अवसर मिलते हैं। सामूहिक रूप से एक शब्द के जवाब देने के अलावा इसे ही हम चुप्पी की संस्कृति कहते हैं। यह संस्कृति सीखने की प्रक्रिया पर गहरा प्रभाव डालती है। बच्चे अपनी सोच से नहीं बोल पाते हैं। बच्चों को अपनी राय देने का अवसर कम ही मिलता है। बच्चों को पाठ का अर्थ निकालने के भी सीमित मौके मिलते हैं। बच्चे सिर्फ जानकारी वाले प्रश्नों का एक शब्द में जवाब देते हैं।

II. **शिक्षक या किसी बच्चे के पीछे-पीछे समूह में दोहरान की अधिकता-** हमारी ज्यादातर कक्षाओं में पढ़ना सिखाने के नाम पर शिक्षक या किसी बच्चे के पीछे-पीछे समूह में दोहरान ही चलता है। शिक्षक कुछ देर पढ़ाने के बाद, अच्छी तरह पढ़ पाने वाले बच्चे को बोलकर पढ़ने को कहते हैं। अन्य बच्चे उसका अनुकरण करते हैं। ज्यादातर बच्चे पढ़ने का दिखावा ही करते हैं। वे जो सुनते हैं उसे दोहरा देते हैं। ज्यादातर बच्चे लिखित सामग्री को लगभग बिना देखे सुनी हुई ध्वनियों को दोहराते रहते हैं। इसे किसी भी दृष्टि से पठन नहीं कहा जा सकता। इस तरह की पूरी प्रक्रिया में पठन के दोनों आयामों (शब्द

पहचान और अर्थ निर्माण) में से एक भी आयाम पर काम नहीं होता है। ज्यादातर समय उन बच्चों को खुद पढ़ने का मौका नहीं मिल पाता जो अभी पढ़ना सीखने से जूझ रहे हैं और जिन्हें मदद की सबसे ज्यादा आवश्यकता है।

III. **पढ़ना सिखाने में अर्थ निर्माण पर जोर नहीं-** हमारी ज्यादातर कक्षाओं में पढ़ना सिखाने का मुख्य तरीका एक-एक कर शब्द पढ़ना और अक्षरों और शब्दों का दोहरान करना है। इस तरह पढ़ाने से अर्थ निर्माण या पाठ को समझने पर ध्यान नहीं दिया जाता। अगर शिक्षक कठिन शब्दों के अर्थ बताते भी हैं, तो भी पूरे पाठ को समझ पाने के लिए बच्चों का मार्गदर्शन नहीं किया जाता। सच्चाई तो यह है कि पढ़ने का असल उद्देश्य ही लिखे गए का अर्थ निकालना है न कि प्रत्येक शब्द को डिकोड करना या वाक्य का केवल शाब्दिक अर्थ जानना।

IV. **डिकोडिंग का अव्यवस्थित शिक्षण-** डिकोडिंग का मतलब है अक्षर चिह्नों व ध्वनि के आपसी रिश्ते को मजबूती से कायम करना और इन चिह्नों की ध्वनियों को जोड़कर शब्द पहचान पाना। डिकोडिंग के कौशल को मजबूती से विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया दिया जाना चाहिए। हमारी ज्यादातर कक्षाओं में ध्वनि और चिह्न का रिश्ता सिखाने के लिए शिक्षक खुद पाठ पढ़ रहे हैं और बच्चे सिर्फ दोहरा रहे हैं। इसकी सबसे प्रमुख समस्या यह है कि यहाँ ज्यादातर बच्चों की भूमिका काफी निष्क्रिय हैं। वे इस समय अपने आप डिकोड नहीं कर रहे और इसलिए यह कार्य कितनी बार भी किया जाए, बच्चे को अभ्यास करने का असली अवसर नहीं मिल रहा।

V. **लिखना केवल नकल करने के रूप में-** यह आम धारणा है कि बच्चे केवल देख कर लिख सकते हैं, जबकि स्वतंत्र रूप से अपने शब्दों में लिखने का उन्हें अवसर नहीं मिलता।

यह साफ कर देना जरूरी है कि आज लिखना सिखने के नाम पर जो कुछ हो रहा है हम उससे भिन्न चीज की चर्चा कर रहे हैं। आजकल लाखों बच्चों को लिखना एक यांत्रिक कौशल की तरह सिखाया जा रहा है। बच्चा शुरू में अक्षरों की आकृतियाँ बारीकी से देखता है। इस रीति से पूरी वर्णमाला से निपटने में कई हफ्ते लग जाते हैं। इस लम्बी अवधि में लिखना सीखने का कैसा भी उद्देश्य बच्चों की दृष्टि में नहीं रह जाता। बाद में उनसे शब्द लिखने या और कुछ दिनों बाद वाक्य बनाने के लिए कहा जाता है तो वे शिक्षक का मुँह यह जानने के लिए ताकते हैं कि वे क्या लिखे? वे लिखने को अपनी कोई बात कहने के माध्यम के रूप में नहीं ले पाते। वे उसे एक कवायद के रूप में देखते हैं जिसे उन्होंने शिक्षक से सीखा है।

कृष्ण कुमार (लिखने की शुरुआत, 2013)

अर्ली ग्रेड रीडिंग (ई.जी.आर.) शोध ने प्रारंभिक भाषा कक्षाओं में बच्चों का भाषा सीखने से संबंधित काम में समय कम होने के लिए निम्नलिखित कारकों को जिम्मेदार बताया है-

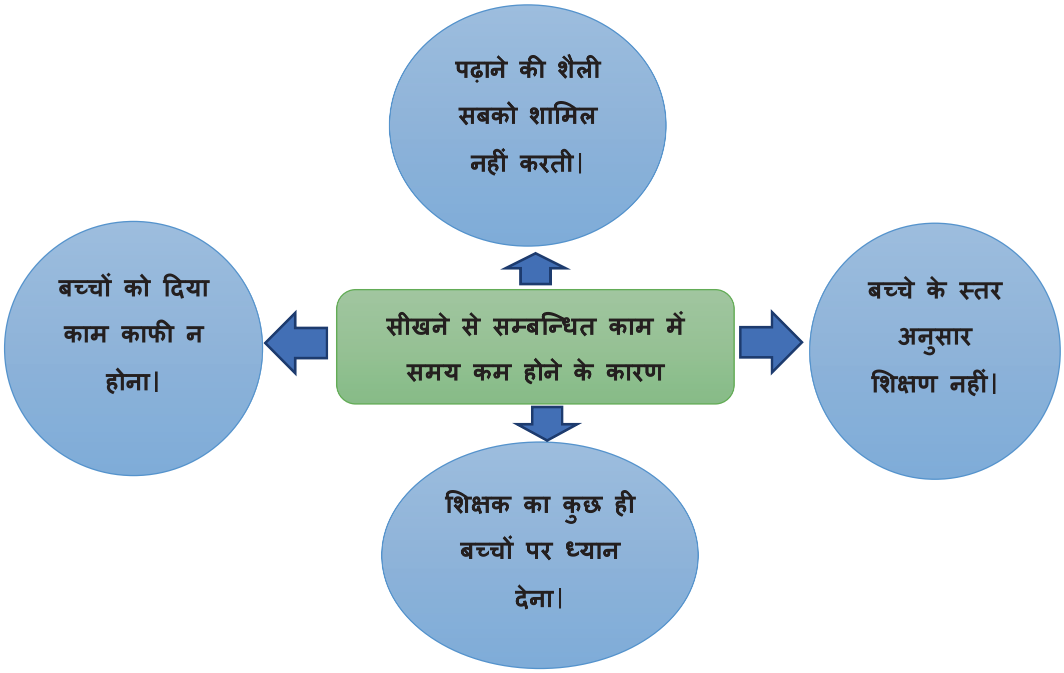

VI. **बच्चों की सक्रिय भागीदारी के लिए प्रभावी शिक्षण की कमी-** प्रायः देखा गया है कि शिक्षक पाठ्यसामग्री स्वयं पढ़कर सिखाते रहते हैं और बच्चे सुनते रहते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी नहीं होती। बच्चों की सक्रिय भागीदारी तभी होती है जब बच्चे उत्साहपूर्वक एवं मन लगाकर ध्यान से सुन रहे हों, प्रतिक्रिया दे रहे हों, चर्चा कर रहे हों, पढ़ रहे हों अथवा लिख रहे हों।

VII. **बच्चों के लिए सरल और रोचक पठन सामग्री का अभाव-** असल में किसी भी और काम की तरह पढ़ने में भी प्रेरणा की बहुत बड़ी भूमिका होती हों। खेद का विषय है कि ज्यादातर भारतीय कक्षाओं में पढ़ने की गतिविधियाँ नीरस होती हैं और बच्चों को किसी भी तरह प्रेरित नहीं करतीं। ज्यादातर प्राथमिक कक्षाओं में सरल और रोचक पठन सामग्री का अभाव है। जो बच्चे अभी पढ़ना सीख ही रहे हैं, उनके लिए बहुत सरल और रोचक किताबें (बड़े चित्र और छोटे सरल वाक्य, दोहरान वाले शब्द) होना बहुत जरूरी है। इन किताबों से बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनाई जाएँ और फिर बच्चे खुद पढ़ने का प्रयास करें। जब तक ऐसी सरल और रोचक छोटी-छोटी कहानियों की किताबें (या 1-2 वाक्यों के रीडिंग कार्ड) पढ़ने के मौके बच्चों को नहीं मिलेंगे, उन्हें अपने पढ़ने के कौशल को विकसित करना मुश्किल होगा।

इस संकट से उबरने के लिए पहली कक्षा के सभी छात्रों के लिए स्कूल तैयारी के लिए स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण जरिया-

Early Childhood Care and Education एक बच्चे के विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होने के साथ ही शुरूआती स्कूल कि तैयारी के लिए भी काफी महत्वपूर्ण है। एक बार ECCE की पहुँच पूरे देश में स्थापित हो जाती है तो स्कूल के लिए तैयारी के अभाव की समस्या और छात्रों के शुरुआती कक्षाओं में इतनी जल्दी पीछे रहने की समस्या, छात्रों की भावी पीढ़ियों के लिए बहुत कम हो जाएगी। इस समस्या की गंभीरता के कारण अकेले शिक्षकों को ही इसके लिए देशव्यापी प्रयास करने के लिए नहीं कहा जा सकता है।

इसके लिए सबके समर्पण की आवश्यकता है, जिसमें समुदाय की भागीदारी अत्यंत जरूरी है। विद्यार्थी स्वयं भी इस संबंध में प्रमुख संसाधन हो सकते हैं। दुनिया भर के अध्ययन पीयर लर्निंग (साथियों से सीखना) को न केवल शिक्षार्थी के सीखने के लिए बल्कि, शिक्षकों के लिए भी बेहद प्रभावी बताते हैं। एक पुरानी भारतीय कहावत है कि 'ज्ञान एकमात्र ऐसी वस्तु है जो बाँटने से बढ़ती है।' वास्तव में, प्राचीन गुरुकुल प्रणाली की भी यह महत्वपूर्ण पहचानों में से एक थी। पीयर ग्रुप की स्थापना महज़ बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान तक ही नहीं बल्कि विद्यालय स्तर पर सभी विषयों के साथ इसे स्थापित किया जाना चाहिए। इससे सीखने के परिणाम एवं प्रतिफल बेहतर होंगे।

शिक्षाक्रम में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर अतिरिक्त ध्यान दिया जाएगा और प्राथमिक स्तर पर आमतौर पर पढ़ने लिखने, बोलने, गिनने, अंकगणित और गणितीय सोच पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण होगा। प्राथमिक विद्यालयों में इन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने के लिए प्रतिदिन अतिरिक्त समय दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त ऐसा देखा गया है कि वर्ष भर में विभिन्न मौकों पर इन विषयों से संबंधित गतिविधियाँ करने से छात्रों का सीखना रोचक एवं सफल रहता है।

बच्चों की जरूरतें

- **प्यार व सुरक्षा की जरूरत**
- **नए अनुभवों की जरूरत**
- **सराहना व पहचान की जरूरत**
- **जिम्मेदारी की जरूरत**

स्कूल रेडीनेस का एक अनुभव

एक माँ की चिंता

वो कहते है न माँ शब्द अपने आप में परिपूर्ण है। दुनिया में हम चाहे कितने भी रिश्ते क्यों न बना लें, लेकिन एक माँ के बिना हमारा जीवन अधूरा होता है। हर रिश्ते से हमें कुछ पाने की चाह होती है, लेकिन माँ और संतान के बीच एक ऐसा रिश्ता होता है, जो एक माँ अपने संतान को जीवन पर्यंत सिर्फ देना जानती है। एक माँ भूखी सो सकती है, लेकिन कभी भी अपनी संतान को भूखे पेट सोने नहीं देती है, तो चलिए, आज एक ऐसे ही माँ के बारे में आपसे बात करते हैं। ये बात ग्राम कोंडागाँव की है, जहाँ श्रीमती रूबी साहू की तीन बेटियाँ हैं, जिनका नाम हेमा, हिमांशी और डिकेश्वरी है। तीनों बेटियों में डिकेश्वरी सबसे बड़ी है, जो कक्षा पहली में पढ़ती है। बाकि दो बेटियाँ डिकेश्वरी से छोटी है। तीनों लड़कियाँ अपनी दादी के पास ज्यादा रहती हैं। बच्चों को अपनी दादी के पास रहना ज्यादा अच्छा लगता है, जिस कारण रूबी हमेशा अपने बच्चों से दूर रहती हैं। वे अपने तीनों बच्चों से बेहद प्यार करती हैं वे उनका पूरा ख्याल रखती हैं और अपनी बेटियों के भविष्य को लेकर हमेशा चिंतित रहती है कि उन्हें अच्छी शिक्षा कैसे दे पाएँ? उन्हें कैसे पढ़ाएँ? एक दिन जब डिकेश्वरी की मम्मी रूबी को पता चला की गाँव में '**अँगना म शिक्षा**' मेला हो रहा है, जिसमें माँ अपने बच्चों को घर पर कैसे पढ़ा सकती है? इसके बारें में बता रहे हैं। तो वह अपने आपको रोक नहीं सकी और भागी-भागी मेले में अपनी बच्ची को लेकर आई। मेले में उन्हें पता चला कि घर पर काम करते- करते भी किस तरह बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाया जा सकता है। यह जानने के बाद उन्होंने घर पर अपने बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। बच्चों को खेल-खेल में पढ़ना अच्छा लगने लगा। अब बच्चे नियमित ही अपनी मम्मी को पढ़ाने के लिए ज़िद करते, उनकी मम्मी को भी बच्चों को पढ़ाने में मज़ा आने लगा। उनकी चिंता अब दूर होने लगी। अब बच्चे दादी के साथ-साथ अपनी मम्मी के पास भी ज्यादा समय बिताने लगे हैं। इन्हें देखकर गाँव की अन्य माताओं ने भी अपने बच्चों को घर पर पढ़ाना शुरूकर दिया है।

सूरज को मुट्ठी में भर लें,

आसमान झुक जाएगा।

शिक्षक के संकल्पों से तो,

वक्त स्वयं झुक जाएगा।

स्कूल रेडीनेस के लिए मॉड्यूल

जैसा कि विभिन्न साक्ष्यों से पता चलता है कि बड़ी संख्या में छात्र पहली कक्षा के पहले महीने के भीतर ही पीछे रह जाते हैं। प्रारंभ से पहली कक्षा में तीन महीने के **'स्कूल रेडीनेस मॉड्यूल'** से शुरूआत होगी, जो यह सुनिश्चित करने में मदद करेंगा कि छात्रों के पास पहले से क्या है, वे क्या जानते हैं। सामान्यतः पहली कक्षा के पाठ्यक्रम को शुरू करने से पहले यह तत्परता के साथ बच्चों के सीखने के स्तर को जानने के लिए बेहद जरूरी है। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा स्कूल 'रेडीनेस मॉड्यूल' के लिए एक फ्रेम वर्क एवं पाठ्यक्रम और शैक्षणिक रणनीति हेतु **'विद्या प्रवेश'** मॉड्यूल का विकास किया गया है जिसके आधार पर छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान परिषद् रायपुर के द्वारा **'विद्या आनंद गतिविधि पुस्तिका'** का निर्माण किया गया है। पहली कक्षा के पाठ्यक्रम से संबंधित कार्य पुस्तिकाएँ और अन्य शिक्षण सामग्री भी इससे जुड़ी हुई होगी।

छात्रों के प्रति सहानुभूति और सहायता के कौशल विकसित करने के इस मॉड्यूल पर कार्य करने के दौरान छात्र एक-दूसरे की मदद करेंगे। यह एक ठोस आधार सुनिश्चित करेगा और सभी शिक्षार्थियों में अपनी स्कूली शिक्षा के लिए उत्साह और साथियों के लिए सहानुभूति विकसित करेगा। ये मॉड्यूल अक्षर, शब्द, रंग, आकार और संख्याओं के साथ खेलने के मौके प्रदान करेगा और साथ ही सक्रिय रूप से अभिभावकों को भी इसमें शामिल करेगा।

अभिभावकों की भागीदारी का महत्व

कई शैक्षिक अनुसंधान बच्चों की शिक्षा पर घर के वातावरण के महत्वपूर्ण प्रभाव की ओर इशारा करते हैं। अभिभावकों की साक्षरता संख्याज्ञान या शैक्षिक स्थिति की परवाह किए बिना उनके बच्चों के सीखने को अनुकूलित करने में उनका सहयोग काफी महत्वपूर्ण है। अभिभावकों को अपने बच्चों के शिक्षकों के साथ हर साल कम से कम दो बार और उससे भी अधिक बार मिलने के लिए कहा जाएगा ताकि वे अपने बच्चों की शिक्षा को ट्रैक करने, प्रोत्साहित करने और उनका अनुकूलन करने में मदद कर सकें। शिक्षक भी नियमित रूप से बच्चों के स्कूल की पढ़ाई, सीखने और प्रगति में अभिभावकों की भागीदारी को विकसित करने के प्रयास करेंगे। इसके लिए वे ऐसी वर्कशीट, गतिविधियाँ या असाइनमेंट देंगे जो बच्चे घर पर अपने अभिभावक की मदद से कर सकेंगे।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा सीखने की नींव

बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की अवस्था से पूर्व ही हो जाता है। बच्चों के मस्तिष्क के उचित विकास और शारीरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए उसके आरंभिक 6 वर्षों को महत्वपूर्ण माना जाता है। वर्तमान समय में, विशेष रूप से सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा उपलब्ध नहीं है। इसलिए ईसीसीई में निवेश करने से इसकी पहुँच देश के सभी बच्चों तक हो सकती है जिससे सभी बच्चों को शैक्षिक प्रणाली में भाग लेने और तरक्की करने के समान अवसर मिल सकेंगे। ई.सी.सी.ई. संभवतया, समता स्थापित करने में सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास, देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जल्द से जल्द निश्चय ही वर्ष 2030 से पूर्व उपलब्ध किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बच्चे स्कूली शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हो सके।

स्कूल रेडीनेस कैसे?

ई.सी.सी.ई. में मुख्य रूप से लचीली बहुआयामी, बहु-स्तरीय खेल एवं गतिविधि आधारित और खोज-आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है। जैसे- अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इंडोर एव आउटडोर खेल पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए इसके साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छे व्यवहार शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

स्कूल रेडीनेस का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक-भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज-संवेगात्मक-नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है। यह परिकल्पना की गई है कि 5 वर्ष की उम्र से पहले हर बच्चा एक प्रारंभिक कक्षा या बालवाटिका (जो कि कक्षा 1 से पहले है) में स्थानांतरित हो जाएगा। जिसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक और शारीरिक क्षमताओं और प्रारंभिक साक्षरता और संख्या ज्ञान विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाए। प्राथमिक शिक्षा कक्षा-1 के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बच्चों के लिए स्कूल रेडीनेस आवश्यक है जिसके लिए 5-6 वर्ष के बच्चों के स्तर को आधार गतिविधियाँ कराई जानी चाहिए।

स्कूल रेडीनेस का आधार-

परिवर्तन और सीखना निरंतर होने वाली प्रक्रिया है और सीखने-सिखाने में समुदाय, परिवार व स्कूल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी को आधार मानकर केंद्र सरकार द्वारा विद्या प्रवेश का सुझाव दिया गया है, जिसमें समुदाय, परिवार और स्कूल का भूमिका बताई गई है-

स्कूल-

सुरक्षित और अच्छा माहौल, सीखने को प्रोत्साहित करने के प्रावधानों का प्रयोग, अन्वेषण, समस्या समाधान, खेल-आधारित शिक्षा, महत्वपूर्ण सोच और बातचीत के अवसर प्राथमिक साक्षरता और संख्यात्मक दक्षताओं के विकास पर ध्यान केंद्रित करें।

परिवार-

घर पर बच्चों का अच्छे से देखभाल करें। सहयोगात्मक और सीखने का माहौल अच्छा हो बच्चों की शिक्षा की सराहना करें और प्रोत्साहित करें तथा बच्चों के साथ जुड़ें, उनके साथ बात करें और खेलें बच्चों के समग्र कल्याण का समर्थन करें। शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक और संज्ञानात्मक बच्चे अच्छे से सीखें स्वास्थ्य और माहौल को अच्छा बनाएँ रखें। प्रभावी शिक्षार्थी बनें और पर्यावरण से जुड़ें।

विद्या प्रवेश क्या है?

विद्या प्रवेश कक्षा-1 के बच्चों के लिए तीन महीने के प्ले-आधारित स्कूल तैयारी मॉड्यूल के लिए दिशा-निर्देश, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 की सिफारिशों के अनुसार विकसित किए गए हैं। इसका उद्देश्य शिक्षकों को यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि सभी बच्चे, विशेष रूप से कोविड़-19 महामारी के दौरान जब वे ग्रेड-I में प्रवेश करते हैं तो एक अनुकूल वातावरण के माहौल से अवगत कराया जाए। जिससे स्कूल में वह आसानी से घुले मिल सके है। दिशा-निर्देशों का उद्देश्य सीखने के लिए अनुकूल माहौल बनाना है जो बेहतरीन और सकारात्मक सुरक्षा सुनिश्चित करता है तथा स्कूल और घर में सभी बच्चों को सहायता प्रदान करता है। खेल भावना की आधारित शिक्षा दिशा-निर्देशों का एक महत्वपूर्ण पहलू है जो बच्चों के सीखने के लिए एक आनंदमय और तनाव मुक्त वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और विशेष आवश्यकताओं या दिव्यांग की सीखने की जरूरतों को पूरा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मातृभाषा या घरेलू भाषा में सीखने पर भी ध्यान दिया जाता है और बच्चों को सांकेतिक भाषा सहित सभी भाषाएँ कक्षा में बोलने की अनुमति दी जाती है। जब तक शुरुआत से बचपन के विकास देखभाल और शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को यह सुनिश्चित करने के लक्ष्य के साथ हासिल नहीं किया जाता है कि ग्रेड-I में प्रवेश करने वाले सभी बजे कम से कम 2030 (एनईपी 2020) तक स्कूल के लिए तैयार हों। यह दस्तावेज़ अंतरिम उपाय के रूप में तीन महीने या 12 सप्ताह की तैयारी का सुझाव देता है कि विद्या प्रवेश निपुण भारत का एक अभिन्न अंग है।

स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम के प्रमुख शिक्षण प्रक्रिया (मार्गदर्शक सिद्धांत)

इस अवधि के दौरान उपयोग की जाने वाली शिक्षण प्रक्रिया मुख्य रूप से संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनो-प्रेरक क्षमताओं के विकास और प्रारंभिक साक्षरता और संख्यात्मक दक्षताओं पर जोर देते हुए खेल-आधारित सीखने पर ध्यान केंद्रित करेंगी। सीखने के अनुभवों को अन्वेषण, जाँच, समस्या समाधान और आलोचनात्मक सोच द्वारा सीखने को बढ़ावा देना चाहिए। यह प्रत्येक बच्चे को एक विशेष सामाजिक संदर्भ में ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और स्वभाव प्राप्त करने के अवसर भी प्रदान करना चाहिए। मॉड्यूल विकसित करते समय या सीखने के अवसरों की योजना बनाते समय, शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे उपयोग की जाने वाली शिक्षण प्रक्रिया के सभी तीन घटकों अर्थात् खेल, अंतःक्रियाओं और पर्यावरण को ध्यान में रखें। ग्रेड-III तक के बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षणशास्त्र और सुझाई गई प्रक्रिया को बढ़ाया जा सकता है।

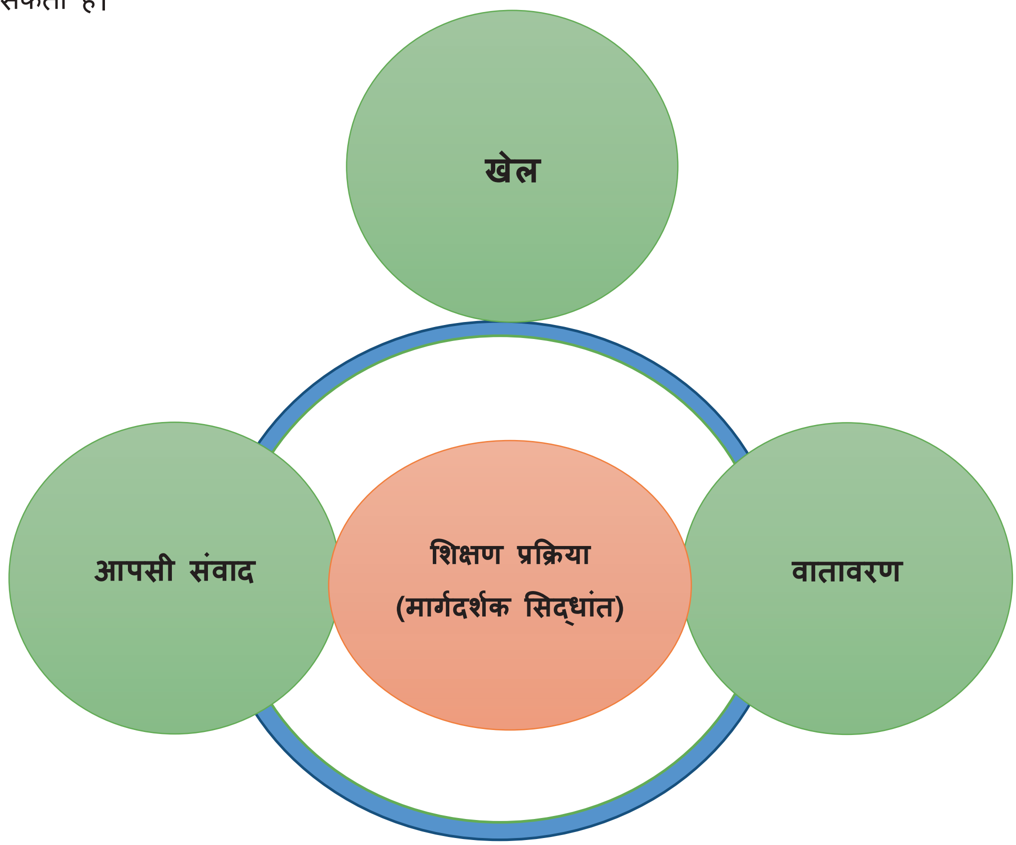

खेल

खेल बच्चों के समग्र विकास में मदद करता है और उनकी प्रगति को दर्शाता है। सीखने के अवसरों में बच्चों को पर्यावरण के साथ और एक दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए एक माध्यम के रूप में खेल पर जोर देना चाहिए और इस प्रक्रिया में अपने स्वयं के ज्ञान को जोड़ने के साथ बढ़ावा देना चाहिए।

खेल मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं—

स्वतंत्र खेल :- शारीरिक खेल बच्चों को चुनाव करने और निर्णय लेने के अवसर प्रदान करता है और दूसरों के अधिकारों और दृष्टिकोणों को समझने में भी मदद करता है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ बच्चे स्वतंत्र रूप से खेल सामग्री चुनते हैं और सामग्री और साथियों के साथ खुद को जोड़ते हैं। यह अनुशंसा की जाती है कि कक्षाओं में खोज, संगीत, गुड़िया क्षेत्र आदि जैसे रुचि या गतिविधि क्षेत्र हों।

निर्देशित या संरचित खेल :- बच्चों को और अच्छे से सीखने के लिए तथा पर्यावरण के सही पहलुओं का पता लगाने की अनुमति देने के लिए सूक्ष्म मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए शिक्षकों द्वारा निर्देशित खेल शुरू किया जाना चाहिए।

आपसी संवाद :- खेल-आधारित सीखने की प्रक्रिया में वयस्कों या शिक्षकों, साथियों, बड़े बच्चों और भाई-बहनों के साथ बातचीत महत्वपूर्ण और अभिन्न हैं। कक्षा में तीन प्रकार का संवाद सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है।

समकक्ष संवाद :- अन्य बच्चों के साथ खेल में संलग्न होना जो सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करता है जहाँ बच्चे निरीक्षण करते हैं, उनका अनुकरण करते हैं और जो वे देखते हैं और एक-दूसरे से सीखते हैं, उस पर निर्माण करते हैं।

चिंतन करना :- बच्चे मुक्त और निर्देशित खेल के दौरान विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के साथ चिंतन करते हैं और इस प्रकार समस्याओं को हल करने और नवाचार करने के लिए अनुभवात्मक रूप से सीखते हैं।

वयस्क या शिक्षक से संवाद :- वयस्कों या शिक्षकों के साथ बातचीत, और माता-पिता बच्चों को पहले सीखी गई और नई अर्जित दक्षताओं को पहचानने और उनके बीच संबंध बनाने में मदद कर सकते हैं। वयस्क या शिक्षक बच्चों का मार्गदर्शन कर सकते हैं और बच्चों की सीखने की प्रक्रिया का समर्थन करने के लिए वातावरण तैयार कर सकते हैं।

वातावरण :- बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु होते हैं। वे अपने सामने आने वाली हर चीज के बारे में जानना चाहते हैं। विभिन्न गतिविधियों और सामग्रियों के माध्यम से, बच्चे वस्तुओं में हेरफेर करके, प्रश्न पूछकर, प्रयोग करके, भविष्यवाणियाँ और सामान्यीकरण करके भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण का पता लगाते हैं।

विकास के लक्ष्य

विकास के लक्ष्य 1- बच्चों के स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाये रखना, शारीरिक और मानसिक, सामाजिक भावनात्मक विकास, पोषण सुरक्षा, स्वच्छता और स्वच्छता के लिए अनुभव प्रदान करना।

विकास के लक्ष्य 2- बच्चे प्रभावीशाली सम्प्रेषक बनना। भाषा और साक्षरता की नीव तैयार करना।

विकास के लक्ष्य 3- बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना। शुरूआती संख्याओं को सीखना व भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण के साथ प्रत्यक्ष अनुभव से बातचीत करना।

विकासात्मक लक्ष्य 1 **CHILDREN MAINTAIN GOOD HEALTH AND WELL-BEING (HW)** **बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखना (एच.डबल्यू.)**	
प्रमुख योग्यताएँ	**सीखने के प्रतिफल**
♦ स्वयं के प्रति जागरूकता ♦ सकारात्मक आत्म-अवधारणा का विकास ♦ स्व-नियमन ♦ निर्णय लेना और समस्या समाधान ♦ समर्थक सामाजिक व्यवहार का विकास ♦ स्वस्थ आदतों का विकास, स्वच्छता,	**एच.डबल्यू.3.1:** शारीरिक विशेषताओं, लिंग, रुचियों, पसंद और नापसंद के संदर्भ में स्वयं और दूसरों का वर्णन करता है।
	एच.डबल्यू.3.2: विस्तारित परिवार के सदस्यों के साथ संबंधों की समझ को प्रदर्शित करता है।
	एच.डबल्यू.3.3: स्वछंद गतिविधियों का प्रदर्शित करना।
	एच.डबल्यू.3.4: एक ही समय में निर्देशों और आसान नियमों का पालन करता है।
	एच.डबल्यू.3.5: रूटीन/दैनिक शेड्यूल में किसी भी बदलाव के लिए अनुकूलन क्षमता दिखाता है।
	एच.डबल्यू.3.6: दूसरों द्वारा सौंपे गए कार्यों/विषयों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
	एच.डबल्यू.3.7: मौखिक और गैर-मौखिक मोड (हावभाव, चित्र) के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करता है।
	एच.डबल्यू.3.8: जिम्मेदारी लेता है और अपनी पसंद और रुचियों के आधार पर चुनाव करता है।
	एच.डबल्यू.3.9: संघर्षों का समाधान सुझाता है और उम्र के अनुकूल समायोजन करता है।
	एच.डबल्यू.3.10: बातचीत और खेल के दौरान दूसरों के विचारों को

स्वच्छता और आत्मरक्षा के लिए जागरूकता ♦ स्थूल गत्यात्मक कौशल का विकास ♦ सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल और आँख-हाथ समन्वय का विकास ♦ व्यक्तिगत और टीम खेलों और खेलों में भागीदारी	शामिल करने की इच्छा प्रदर्शित करता है।
	एच.डबल्यू.3.11: बड़े और छोटे समूह की गतिविधियों के दौरान जरूरतमंद साथियों की मदद करता है।
	एच.डबल्यू.3.12: विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सहित विविध पृष्ठभूमि के बच्चों के प्रति संवेदनशीलता और स्वीकार्यता प्रदर्शित करता है।
	एच.डबल्यू.3.13: बुनियादी स्वास्थ्य, स्वच्छता, स्वच्छता प्रथाओं और स्वस्थ खाने की प्रथाओं को अधिक स्वतंत्रता के साथ बनाएँ रखता है और प्रदर्शित करता है।
	एच.डबल्यू.3.14: गुड टच और बैड टच के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करता है और अजनबियों से दूरी बनाए रखता है।
	एच.डबल्यू.3.15: घर, प्रीस्कूल और खेल के मैदान में सुरक्षा के बुनियादी नियमों का पालन करता है।
	एच.डबल्यू.3.16: अधिक समन्वय, नियंत्रण और शक्ति के साथ स्थूल गत्यात्मक कौशल (**Gross Motor Skill**) प्रदर्शित करता है; जैसे- दौड़ना, कूदना, फेंकना, लात मारना और पकड़ना आदि।
	एच.डब्ल्यू.3.17: स्थान की खोज करता है और संगीत और गतिविधियों में सक्रिय और रचनात्मक रूप से भाग लेता है।
	एच.डब्ल्यू.3.18 a: सटीक और नियंत्रण के साथ सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल (**Fine motor skill**) प्रदर्शित करता है।
	एच.डब्ल्यू.3.18 b: जटिल कार्यों को पूरा करने के लिए समन्वित गति का उपयोग करता है जैसे कि एक लाइन के साथ काटना, डालना, बटन लगाना आदि।
	एच.डब्ल्यू.3.18 c: ड्राइंग, पेंटिंग और लिखने के लिए टूल को पकड़ने और हेरफेर करने के लिए पिंसर ग्रिप (किसी वस्तु को पकड़ने के लिए तर्जनी और अंगूठे का समन्वय) का उपयोग करता है।

विकासात्मक लक्ष्य ॥ CHILDREN BECOME EFFECTIVE COMMUNICATORS (EC) बच्चों का प्रभावी सम्प्रेषक बनना। (ई.सी.)	
प्रमुख योग्यताएँ	**सीखने के प्रतिफल**
	प्रथम भाषा
सुनना और बातचीत करना ♦ समझ के साथ सुनना ♦ रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति और बातचीत ♦ भाषा और रचनात्मक सोच ♦ शब्दावली विकास ♦ बातचीत और बात करने का कौशल ♦ भाषा का सार्थक उपयोग **समझना और पढ़ना** ♦ किताबों से जुड़ना ♦ चित्र जागरूकता और अर्थ बनाना ♦ पढ़ने का नाटक करें ♦ ध्वन्यात्मक जागरूकता ♦ ध्वनि प्रतीक ♦ पिछले अनुभवों और ज्ञान की भविष्यवाणी और उपयोग ♦ आनंद और विभिन्न उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र पठन	**ई.सी.एल1.3.1:** स्कूल और घर में अपरिचित शिक्षकों, नए दोस्तों, स्कूल स्टाफ, अन्य वयस्कों, आदि के साथ उनकी अपनी भाषा में बातचीत में शामिल होता है।
	ई.सी.एल1.3.2: पठन/पाठन क्षेत्र से पुस्तक का चयन करता है और चित्रों की मदद से कहानी को समझने का प्रयास करता है और लिखित पाठ की भविष्यवाणी कर सकता है।
	ई.सी.एल1.3.3: कविताओं/कहानियों को पढ़ने के अपने अनुभवों को उनकी अपनी भाषा में व्यक्त करता है और इसके बारे में बात करता है और दोस्तों के साथ साझा करता है।
	ई.सी.एल1.3.4: (ए) अपनी भाषा में दिलचस्प कविताओं / गीतों का पाठ करते समय उचित स्वर और आवाज के मॉड्यूलेशन का उपयोग करता है। ईसीएल**1 3.4:** (बी) उपयुक्त के साथ धाराप्रवाह पाठ करता है। परिचित कविताओं के अंश उनकी अपनी भाषा में।
	ई.सी.एल1.3.5: (अ) कहानी सुनाने के लिए शिक्षक को उनकी पसंदीदा कहानी की किताबें देता है। **ई.सी.एल1.3.5: (**बी) चित्रों में वस्तुओं को ध्यान से देखता है और उनके बारे में बात करता है और आविष्कार की गई वर्तनी का उपयोग करके उनका नाम लिखता है।
	ई.सी.एल1.3.6: (ए) प्रिंट जागरूकता की समझ के साथ पढ़ता है। **ई.सी.एल1.3.6: (**बी) घटनाओं के क्रम में चित्रों को समझ और व्यवस्थित करके कहानी पढ़ता है।
	ई.सी.एल1.3.7: परिचित कहानियों और कविताओं में आने वाले शब्दों में दोहराई जाने वाली ध्वनियों की पहचान करता है।
	ई.सी.एल1.3.8: (ए) कहानियों, कविताओं और गीतों में

लेखन का उद्देश्य ♦ प्रारंभिक साक्षरता कौशल ♦ आत्म अभिव्यक्ति के लिए लेखन ♦ अक्षर और ध्वनियों के उनके ज्ञान का उपयोग करें। ♦ लिखने के लिए वर्तनी का आविष्कार करें। ♦ परंपरागत तरीके से लिखने का प्रयास करें। ♦ चित्र, शब्दों और अर्थपूर्ण वाक्यों के साथ पढ़ने की प्रतिक्रिया ♦ तुकबंदी वाले शब्दों का लेखन ♦ नामकरण शब्दों का प्रयोग करते हुए सार्थक वाक्य लिखिए और ♦ क्रिया शब्द खुद को व्यक्त करने के लिए संदेश लिखें। ♦ मिश्रित भाषा कोड का उपयोग करना। ♦ कक्षा की गतिविधियों और घर पर विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखें, जैसे सूचियाँ बनाना, दादा-दादी को अभिवादन, संदेश और दोस्तों को	दोहराई जाने वाली ध्वनियों, शब्दों आदि की पहचान करता है। **ई.सी.एल1.3.8:** (बी) चित्रों और प्रिंट, पिछले अनुभव और जानकारी, पत्र, ध्वनि, आदि की सहायता से लिखित पाठ के बारे में भविष्यवाणी करता है।
	ई.सी.एल1.3.9: स्वयं का नाम, अपने दोस्तों के नाम और उनके आस-पास की वस्तुओं को लिखने (आविष्कृत वर्तनी) में रुचि लेता है।
	द्वितीय भाषा
	ई.सी.एल2-3.1: द्विभाषी रूप में अपना परिचय देता है।
	ई.सी.एल2-3.2: एक्शन के साथ गाने या तुकबंदी गाता है।
	ई.सी.एल2-3.3: पठन क्षेत्र में द्विभाषी कार्य के पृष्ठों को पलटना।
	ई.सी.एल2-3.4: परिचित शब्दों और अभिव्यक्ति का उपयोग करके प्रतिक्रिया देने का प्रयास।
	ई.सी.एल2-3.5: ध्वनियों, अक्षरो की पहचान करना
	ई.सी.एल2-3.6: परिचित संकेतों को पढ़ने का प्रयास।
	ई.सी.एल2-3.7: चित्रों की मदद से कहानी की भविष्यवाणी करना।
	ई.सी.एल2-3.8: कहानी के साझा पठन में भाग लेता है।
	ई.सी.एल2-3.9: उसके पसंदीदा खिलौने के बारे में बात करता है।
	ई.सी.एल2-3.10: निरर्थक तुकबंदी वाले शब्दों का आनंद लेना और बनाना।
	ई.सी.एल2-3.11: कुछ परिचित शब्दों को लिखा ने/लिखने का प्रयास।
	ई.सी.एल2-3.12: वस्तुओं को उनके तत्काल वातावरण में पहचानना।
	ई.सी.एल2-3.13: उम्र के हिसाब से कार्टून और फिल्में देखने में मजा आता है।
	ई.सी.एल2-3.14: पक्षियों, जानवरों और पेड़ों के लिए भावनाओं को साझा करता है।
	ई.सी.एल2-3.15: संदेशों को संप्रेषित करने के लिए चित्र बनाता है।

निमंत्रण लिखना आदि।	

विकासात्मक लक्ष्य III

CHILDREN BECOME INVOLVED LEARNERS AND CONNECT WITH THEIR IMMEDIATE ENVIRONMENT (IL)

बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना।

प्रमुख योग्यताएँ	सीखने के प्रतिफल
संवेदनाओं का विकास ♦ दृष्टि	**आई.एल.3.1:** पर्यावरण का निरीक्षण और अन्वेषण करने के लिए सभी इंद्रियों का उपयोग करता है।
♦ ध्वनि ♦ स्पर्श ♦ गंध ♦ स्वाद	**आई.एल.3.2:** तत्काल वातावरण में सामान्य वस्तुओं, ध्वनियों, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों के बारीक विवरणों को नोटिस और उनका वर्णन करता है।
संज्ञानात्मक ज्ञान ♦ प्रेक्षण ♦ पहचान ♦ स्मृति	**आई.एल.3.3:** (ए) एक बार में देखी गई **4-5** वस्तुओं को याद करता है और याद रखता है। आईएल **3.3:** (बी) परिचित वस्तु की तस्वीर के **3-5** लापता हिस्सों की पहचान करता है।
♦ मिलान ♦ वर्गीकरण	**आई.एल.3.4:** दो समूहों की 5-6 वस्तुओं को एक के बाद एक क्रमानुसार रखता है।
♦ पैटर्न ♦ अनुक्रमिक सोच ♦ रचनात्मक सोच ♦ आलोचनात्मक सोच ♦ समस्या का समाधान ♦ तर्क	**आई.एल.3.5:** आकार, रंग और आकार इत्यादि जैसे तीन कारकों द्वारा वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करता है। वस्तुओं के स्थान का वर्णन करने के लिए स्थिति शब्दों (बगल, अंदर, नीचे) का सही ढंग से उपयोग करता है।
♦ जिज्ञासा ♦ प्रयोग ♦ अन्वेषण	**आई.एल.3.6: 4-5** चित्र कार्ड/वस्तुओं को क्रम में व्यवस्थित करता है, उदाहरण के लिए, आकार और घटना।
पर्यावरण से संबंधित अवधारणाएँ ♦ प्राकृतिक-जानवर, फल, सब्जियाँ, आदि। भौतिक–जल,	**आई.एल.3.7:** जब एक कहानी सुनाई जाती है, तो समय से संबंधित घटनाओं को समझ सकते हैं जैसे- पहले क्या हुआ? या रात को कौन आया? आदि।
♦ वायु, ऋतु, सूर्य, चन्द्र, दिन और रात सामाजिक- मैं, परिवार, परिवहन,	**आई.एल.3.8:** (ए) कारणों के साथ सरल समस्या समाधान स्थितियों का समाधान प्रदान करता है। **आई.एल.3.8:** (बी) पर्यावरण में वस्तुओं की जाँच और

त्योहार, सामुदायिक सहायक, आदि। **मनको का निर्माण करना** ♦ रंग ♦ आकार, दूरी ♦ मापन ♦ आकार ♦ लंबाई ♦ वजन ♦ ऊँचाई ♦ समय ♦ स्थानिक भाव ♦ एक-एक की संगति **संख्यात्मक पहचान** ♦ गिनें और बताएँ कि कितने है। ♦ अंक पहचान ♦ आदेश की भावना (10 तक की संख्या के आगे गिनती कर सकते हैं।) **अंकों को व्यवस्थित करना प्रत्येक दिन की दिनचर्या**	हेरफेर करने में संलग्न है, प्रश्न पूछता है, पूछताछ करता है, खोजता है और अपने स्वयं के विचारों और भविष्यवाणियों का निर्माण करता है। **आई.एल.3.8: (**सी) पर्यावरण संबंधी चिंताओं के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता प्रदर्शित करता है, उदाहरण के लिए, पानी बर्बाद न करें, उपयोग में न होने पर रोशनी स्विच आफ करना इत्यादि।
	आई.एल.3.9: 10 वस्तुओं तक की गणना करता है।
	आई.एल.3.10: किसी विशेष संख्या से **9** तक आगे और पीछे की गिनती कर सकते हैं।
	आई.एल.3.11: अंकों के साथ अंकों की पहचान करता है और **9** तक अंक लिख सकता है।
	आई.एल.3.12: यह जागरूकता को प्रदर्शित करता है कि कई चीजें संख्या में कम हो जाती हैं या शून्य हो जाती हैं, (उदाहरण के लिए पेड़ की एक शाखा पर बैठे **3** पक्षी एक-एक करके अंत में उड़ जाते हैं, शाखा पर कोई पक्षी नहीं बचता है।)
	आई.एल.3.13: 10 तक की दो संख्याओं की तुलना करता है और इससे अधिक, से कम जैसी शब्दावली का उपयोग करता है।

स्वाभिमान जागा शिक्षक में,

आया है विश्वास नया।

अब कुछ कर दिखलाना है,

जो बीत गया सो बीत गया।

अध्याय-2 स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम में शामिल प्रमुख शिक्षण सत्र और गतिविधियाँ

रेडीनेस और खेल

सत्र-योजना

सत्र	गतिविधि	समय	प्रक्रिया	आवश्यक सामग्री
1.	स्कूल रेडीनेस की आवश्यकता क्यों?	10:00-11:30am	प्रतिभागियों के इन बिंदुओं पर उनके मन में उपजे प्रश्नों को जानना (Warm-up Activity)	मौखिक चर्चा
2.	भाषा-गणित से संबंधित मुख्य चुनौतियाँ	11:30-12:30	• बच्चों को बोलने के कम अवसर • बच्चों के पीछे-पीछे दोहराव की अधिकता • पढ़ना सीखने एवं अर्थ निर्माण पर कम जोर। • डिकोडिंग का अव्यवस्थित शिक्षण (Warm–up Activity)	मौखिक वार्तालाप/ समूह चर्चा
3.	बच्चों के परिदृश्य में संकलित मामलों का अध्ययन केस-स्टडी (लेखन केवल नक़ल के रूप में) सीखने से संबंधित काम में समय कम होने के कारण	12:30-01:30	बच्चे लिखना केवल नकल के रूप में " यह आम धारणा क्यों " केस -स्टडी (चयनित केस -स्टडी पर कुछ प्रश्नों की सूची) (Warm–up Activity)	प्रश्नों की सूची / केस -स्टडी
	भोजनावकाश (1:30- 2:30)			
4.	खेल की परिभाषा	2:30 - 3:30	खेल बच्चों के लिए उपयोगी क्यों है? बच्चों के विकास में किस तरह उपयोगी है एवं यह कौन-कौन से विकास में मददगार है? (दोनों टॉपिक को छोटे-छोटे समूह में चर्चा का अवसर मिले। उसके बाद समूहवार अपने ग्रुप की साझी समझ का प्रस्तुतीकरण कराना।	मौखिक वार्तालाप/समूह में चर्चा
5.	खेल के पैटर्न	3:30-4:30		
6.	निष्कर्ष एवं समापन	4:30-5:00		

उद्देश्य -

- बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु तैयार करना।
- खेल के माध्यम से विभिन्न गतिविधियों का जुड़ाव बनाना।
- खेल और शिक्षा के परस्पर जुड़ाव पर समझ बनाना।
- खेल के माध्यम से बच्चों के सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।

शिक्षण अधिगम सामग्री : 20 रंगीन मोती, दो छोटे कटोरे, एक A- 4 शीट पेपर।

आवश्यक सामग्री : एक प्रोजेक्टर, स्पीकर, व्हाइट-बोर्ड, काला और नीला मार्कर सीखने के कोने की सामग्री।

सत्र की अवधि : 150 मिनट

अपेक्षाएँ-

- शिक्षकों में सामाजिक विकास, आपसी संवाद एवं खेल के प्रति रूचि पैदा होगी। ताकि वे विद्यार्थियों को सीखा सकें।
- खेल की विभिन्न गतिविधियों पर समझ विकसित होगी एवं स्वयं से करने की भावना का विकास होगा।
- खेल एवं शिक्षक के आपसी जुड़ाव को समझते हुए विद्यालयों में बच्चों को कराने हेतु प्रेरित एवं कुशल होंगे।

सत्र	विवरण
परिचय 15 मिनट	शिक्षकों को गोले में खड़े होने और प्रतिभागी को गेंद फेंकने और उसे वापस उछालने के लिए बोलना, एक बार जब सुगमकर्ता गेंद को फिर से किसी अन्य साथी के पास फेकता है, तो शिक्षकों को अवसर प्रदान करके इस गतिविधि को समाप्त करें, शिक्षकों को अवसर प्रदान करने के बाद, नीचे दिए गए प्रश्न पूछें - 1. हमने क्या किया? संभावित प्रतिक्रिया:- गेंद फेकने का खेल खेला गया। 2. गतिविधि खेलते समय आपको कैसा लगा? संभावित प्रतिक्रिया:- मुझे खुशी महसूस हुई, उत्सुकता से गेंद की प्रतीक्षा कर रही थी, इसलिए गेंद को पकड़ने के लिए चौकस हो गई। 3. बच्चों को कैसा लगेगा यदि हम उन्हें ऐसे खेलों में शामिल करते है तो? संभावित प्रतिक्रिया:- वे आनंद लेते हैं, खेलना पसंद करते हैं। 4. क्या आपको लगता है कि बच्चों को खेल के माध्यम से सीखने के अवसर मिल सकते हैं। संभावित प्रतिक्रिया:- हाँ...। इस सत्र में हम खेल के ऐसे ही आयामों के बारे में चर्चा करेंगे। निर्देशित चर्चा - 5 मिनट बच्चे खेल को कैसे देखते हैं? बच्चे खेल को काम के रूप में देखते हैं। यह उनके लिए एक गतिविधि है, जिसे वह दूसरों के

<table>
<tr><td></td><td>साथ आनंद उठाते हैं। वे इसमे दौड़ते, कूदते, गुदगुदाते हुए स्वयं को तलाशने के अवसर के रूप में भी देखते हैं।

हम सभी जानते हैं कि 5-6 आयु वर्ग में बच्चों का विकास तेजी से होता है। बालवाड़ी में इसे देखते हुए, हम बच्चों के विकास के लिए गतिविधियों का संचालन करते हैं। ऐसी ही एक गतिविधि है खेल। यह देखा गया है कि हम अक्सर खेल को केवल बच्चे के लिए आनंदपूर्ण अनुभव के रूप में देखते हैं। हर्ष के साथ, खेल बच्चों को सीखने के कई अवसर प्रदान करते है। अगर हम खेल के महत्व को समझते हैं और बच्चों को खेल में व्यस्त करके सीखने के अवसरों के रूप में उपयोग करते है, तो यह बच्चों की मदद करता है।</td></tr>
<tr><td>खेल के प्रतिमान 15 मिनट</td><td>खेल के प्रतिमान :-
खेल के प्रतिमान पर वीडियो दिखाएँ :- एक शिक्षक के रूप में पूर्ण विडियो का अवलोकन करें। इस तरह के प्रतिमान को आपने बच्चों के खेलने में जुड़ते हुए देखा होगा।
खेल में प्रत्येक प्रतिमान के बारे में प्रतिभागियों के साथ प्रतिक्रियाएँ एकत्र करें और बच्चों के विकास में किस तरह के प्रतिमान और उनके लाभ के संदर्भ में चर्चा करें। प्रतिभागियों को यह बतायें, कि यह उन तरीकों में से एक है जहाँ बच्चे सामाजिक रूप से धीरे-धीरे बड़े समूह के साथ बातचीत करना सीखते हैं।

<table>
<tr><th>खेल के प्रतिमान</th><th>खेल के फायदे</th></tr>
<tr><td>प्रेक्षक (देखने वाला) खेल-
दूसरों का निरीक्षण करें।</td><td>यह समझने में मदद करता है कि दूसरे कैसे खेलते हैं।</td></tr>
<tr><td>एकल खेल-बच्चे व्यक्तिगत रूप से खेलते हैं।</td><td>आत्म-अन्वेषण के लिए अधिक क्षेत्र मिलता है।</td></tr>
<tr><td>समानांतर खेल-अन्य लोग कैसे खेलते हैं?</td><td>दूसरों के व्यवहार/खेलने की नकल करना शुरू कर देते हैं?</td></tr>
<tr><td>सहायक खेल-दूसरों के साथ खेलते हैं?</td><td>दूसरों के साथ सामाजिक संपर्क स्थापित करते हैं।</td></tr>
</table></td></tr>
<tr><td>मुक्त खेल मिनट</td><td>गतिविधि 1 – 10 मिनट
खेल के कॉर्नर, भाषा कॉर्नर, ब्लॉक कॉर्नर और रचनात्मक कार्नर में आवश्यक सामग्री के साथ सीखने के कोने (लर्निंग कॉर्नर) की व्यवस्था करें।
प्रत्येक कोने में न्यूनतम 4 प्रतिभागियों को शामिल होने हेतु प्रोत्साहित करें।
उन्हें निर्देश दें, कि खेलने के कोनों में मुक्त खेल को प्रदर्शित करें।
इस प्रक्रिया में सुगमकर्ता शिक्षक के रूप में कार्य करें।
आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करना।
बच्चों को निर्देश देना।</td></tr>
</table>

	बच्चों का अवलोकन करना। बच्चों के साथ बातचीत करना। आवश्यकता आधारित सहायता प्रदान करना। बच्चों के विभिन्न व्यवहारों का प्रबंधन करना। उसके बाद बच्चों के विकास में मुक्त खेल की भूमिका पर चर्चा करें। 10 मिनट चर्चा करें कि शिक्षक ने किस तरह से मुक्त खेल में (शिक्षक की भूमिका) का संचालन किया। 20 मिनट आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करना। बच्चों को निर्देश देना। बच्चों का अवलोकन करना। बच्चों के साथ बातचीत करना। आवश्यकता आधारित सहायता प्रदान करना। बच्चों के विभिन्न व्यवहारों का प्रबंधन करना। पर्यावरण- इनडोर और आउटडोर (खेल)
निर्देशित खेल 60 मिनट	गतिविधि 1- (10 मिनट) एक निर्देशित आउटडोर खेल का प्रदर्शन करें जो स्थूल कौशल और आँख-हाथ समन्वय बनाने का अवसर प्रदान करता है। दौड़ना और छड़ी- आवश्यक सामग्री (एक ही या अलग रंग के 10 मोती, धागा) (1) एक तरफ धागा बाँधें और दूसरी तरफ दो वृत्त (Circle) चिह्नित करें। (यदि धागा बाँधने की कोई सम्भावना नहीं है तो दीवार पर एक लाइन लगाएँ।) (2) दीवार पर धागा/चिह्नित लाइन पर प्रत्येक मोती के लिए दो तरफ प्लास्टिक के दो टुकड़े चिपकाएँ। (3) प्रत्येक टुकड़े में 5 माला रखें। (4) बीच में दो घेरे चिन्हित करें। (5) फिर दो प्रतिभागियों को दो वृत्तों (Circle) पर खड़ा करें- जब सुगमकर्ता सीटी बजायें, तो प्रतिभागी को एक मनका चुनने के लिए कहें, दौड़कर धागे को पकड़े और मनके को धागे में डालकर आएँ। (6) फिर से वृत (Circle) के अन्दर कूद कर वापस आएँ, वृत (Circle) में मनका लें, और उसी को दोहराएँ। नीचे दिए गए बिंदुओं का उपयोग करके गतिविधि को आगे बढ़ाएँ। कम से कम चार प्रतिभागी 10 मिनट की गतिविधि का प्रदर्शन करें।

	प्रतिभागियों को सरल भाषा में स्पष्ट निर्देश प्रदान करें। खेल का प्रदर्शन करें। प्रतिभागियों को खेलने के लिए प्रोत्साहित करें। निरीक्षण करें, कि प्रतिभागी कैसे खेल रहे हैं? यदि प्रतिभागी निर्देशों का पालन करने में असमर्थ है, तो सुगमकर्ता निर्देशों को दोहराएँ और गतिविधि को फिर से प्रदर्शित करें। प्रतिभागियों के आयु वर्ग पर विचार करें। निर्देशित खेल में बच्चों को शामिल करते समय उपरोक्त बातों को सुनिश्चित करें। अब चर्चा करें, कि यह विशेष गतिविधि बच्चों के विकास में कैसे मदद करती है? गतिविधि के बारे में बेहतर समझ होने से प्रतिभागियों को गतिविधि अच्छी तरह से करने में मदद मिलेगी। यह गतिविधि बच्चों के स्थूल कौशल विकसित करने में मदद करती है- चलना, दौड़ना, कूदना, आँख-हाथ का समन्वय गतिविधि-2 (10 मिनट) बच्चों के रूप में अन्य प्रतिभागियों के साथ एक निर्देशित खेल का प्रदर्शन करने के लिए प्रतिभागियो को प्रोत्साहित करें - "गतिविधियों के बाद सुदृढ़ता पर चर्चा करें, कि शिक्षको को निर्देशित खेल 5 मिनट करने के लिए विचार करने की आवश्यकता है।" गतिविधि-3 (10 मिनट) निर्देशित इनडोर खेल का प्रदर्शन करें जो संज्ञानात्मक कौशल बनाने का अवसर प्रदान करें, कागज के एक बॉक्स मे अंडे की ट्रे में मोतियों को स्थानांतरित करना, एक समय में एक मनका को स्थानांतरित करना। 1) एक कटोरी में 10 मोतियों के साथ चार कटोरे लें। 2) चार अंडे का ट्रे लें। 3) दोनों कटोरे एक साइड में रखें। 4) एक कागज़ को मोड़ लें और इसका उपयोग एक मोती लेने के लिए करें। 5) एक कागज़ का उपयोग करके एक मोती लें और दूसरे कटोरे में मोती रखें। इस तरह से गतिविधियो को पूरा करें। पहले सुगमकर्ता (**Resource Person**) गतिविधि को प्रदर्शित करें और अन्य प्रतिभागियों को गतिविधि करने के लिए प्रोत्साहित करें। गतिविधि करने के बाद उस पर चर्चा करें। शिक्षको के साथ निर्देशित खेल करने की प्रक्रिया पर बात करें कि कैसे विशेष गतिविधि बच्चों के विकास में मदद करती है। (5 मिनट) समझने के अवसर- एक वस्तु को केवल एक बार स्थानांतरित करना। निर्देशित खेल बच्चों को एक चरण से दूसरे चरण में जाने पर मदद करता है। (5 मिनट) उदाहरण: बच्चे शुरू में चलते हैं, चलने के अधिक अवसर प्रदान करने से बच्चों को चलने में

	मदद मिलती है। खेल स्वास्थ्य में मदद करता है। खेल नई चीजों को सीखने और सिखाने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने में मदद करता है। (5 मिनट) खेल परिपूर्णता बच्चों को सीखने के प्रति रुचि पैदा करने में मदद करता है। वे जो काम कर रहे हैं उस पर एकाग्रता और रुचि पैदा करता है। सक्रिय भागीदारी के साथ गतिविधियो में संलग्न होने की खुशी देता है।
संक्षिप्ती-करण 20 मिनट	मुख्य बिंदु जिन्हें शिक्षक को मुक्त और निर्देशित खेल में बच्चों को संलग्न करते समय याद रखना चाहिए। (5 मिनट) गतिविधि के लिए आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करें। गतिविधि में संलग्न रहते हुए बच्चों के आयु वर्ग पर विचार करें। भाषा में स्पष्ट निर्देश दें, जो बच्चे आसानी से समझ सकें। सभी बच्चों को अवसर प्रदान करें। बच्चों की निगरानी तब करें जब वे किसी गतिविधि में संलग्न हों और आवश्यक सहायता प्रदान करें, अब तक हमने मुक्त खेल और निर्देशित खेल के बारे में चर्चा की। बच्चों के साथ इन गतिविधियों की योजना और संचालन के बारे में चर्चा करें, 5 मिनट हर दिन योजना बनाएँ और संरचित आतंरिक खेलों में शारीरिक/संज्ञानात्मक/पूर्व संख्यात्मक और भाषा/साक्षरता कौशल में भाग लेने के लिए न्यूनतम 2 अवसर प्रदान करना। हर दिन 20 मिनट के लिए बच्चों को बाहरी खेल के लिए न्यूनतम एक अवसर प्रदान करना। हर दिन न्यूनतम 20 मिनट के लिए बच्चों को मुक्त खेल में संलग्न होने का अवसर प्रदान करना।

खेल

खेल एक ऐसी गतिविधि है, जहाँ बच्चे अपने ज्ञान को दिखाने के लिए अपने आवेगों को व्यक्त करते हैं, अपने कौशल का प्रयोग करते हैं और नए ज्ञान को सीखते और सिखाते हैं। बच्चों के लिए खेल एक महत्वपूर्ण पहलू है और उनके अनुभवों पर आधारित है। खेल बच्चों की पहल, निर्णय लेने और खेलने में आत्म-चयन को संदर्भित करती है और वांछित सीखने के परिणामों में मार्गदर्शन करने में मदद भी करती है। बच्चों में विकासात्मक तरीके से विकास करने के लिये शिक्षक द्वारा खेल का मार्गदर्शन करना, स्थूल और सूक्ष्म कौशल विकसित करने में मदद करता है।

आगे हम खेल के पैटर्न पर चर्चा करेंगे, खेल का संचालन कैसे किया जाए? जो बच्चों के विकास में मदद करता है।

खेल और शिक्षा:-

बच्चे में खेल स्वाभाविक क्रिया है। भिन्न-भिन्न आयु वर्ग के बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं। ये विभिन्न प्रकार के खेल बच्चों के संपूर्ण विकास में सहायक होते हैं। खेल से बच्चों के शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास एवं नैतिक विकास को बढ़ावा मिलता है किंतु अभिभावकों की खेल के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति एवं क्रियाकलाप ने बुरी तरह प्रभावित किया है। अतः यह अनिवार्य है कि शिक्षक और माता-पिता खेल के महत्व को समझें। खेलों के प्रकारों में अन्वेषणात्मक खेल,

संरचनात्मक खेल, काल्पनिक खेल और नियमबद्ध खेल शामिल हैं। खेलों में सांस्कृतिक विभिन्नताएँ भी देखी जाती हैं। खेल से मनुष्य की मनोवैज्ञानिक जरूरतें पूरी होती हैं तथा वह मनुष्य को सामाजिक कौशलों के विकास का भी अवसर देता है। पियाजे के अनुसार खेल बच्चों की मानसिक क्षमताओं के विकास में भी एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। पहले चरण में बच्चा वस्तुओं के साथ संवेदन प्राप्त करने व कार्य संचालन करने का प्रयास करता है। दूसरे चरण में बच्चा कल्पनाओं को रूप देने के लिए वस्तुओं को किसी प्रतीक के रूप में उपयोग करने लगता है। अंतिम चरण में काल्पनिक भूमिकाओं की खेलों की तुलना में बच्चा नियमबद्ध खेल या क्रीड़ाओं में संलग्न रहता है। खेलों से तार्किक क्षमता व स्कूल संबंधी कौशलों को विकसित होने में मदद मिलती है।

खेल से लाभ :-

जैसा कि हमें पता है, खेल मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है, साथ ही खेल से और भी कई प्रकार के लाभ होते हैं-

1. किसी भी खेल में होने वाले लाभ या हानि व्यक्ति के जीवन में आई परिस्थितियों का सामना करना और उभरने की सीख देते हैं।
2. खेल के दौरान खिलाड़ी किसी टीम का हिस्सा होता है, जहाँ सभी खिलाड़ियों के साथ उसको तालमेल बिठाकर खेल को जिताने में टीम के लिए अपना योगदान देना होता है। यह बच्चे को जीवन में उसकी भूमिका का महत्त्व सिखाता है।
3. ज्यादातर खेल खुले मैदान में खेले जाते हैं, जिसकी वजह से बच्चों को भूख ज्यादा लगती है और उनका शारीरिक विकास तेज़ी से होता है।
4. खेल के दौरान कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जब खिलाड़ी हारते हुए भी जीत जाते हैं। यह बच्चों को जीवन में धैर्य और सहनशीलता का ज्ञान देता है।
5. खेल में जब बच्चा जीतता है तो उसके अंदर आत्मविश्वास बढ़ता है और बच्चे के अंदर उत्साह पैदा करता है।

मुक्त खेल:-

यह खेल प्रमुख रूप से दो तरह के खेल होते हैं। प्रथम मुक्त खेल और दूसरा निर्देशित खेल है।

मुक्त खेल जहाँ बच्चे पहल करते हैं और शिक्षक की देखरेख में अपने अनुभव सामने लाकर खुद के नियमों के साथ खेलते हैं। मुक्त खेल स्व-निर्देशित हैं, जहाँ बच्चा बाहरी नियंत्रण (शिक्षक) और बाधा से मुक्त होता है।

- खेल सामग्री चुनना - ब्लॉक, मोती, रेत, पत्थर आदि।
- खेलने के लिए स्थान -सीखने का कोना (लर्निंग कॉर्नर), घर/कक्षा के बाहर (आउटडोर), वृत (सर्कल) आदि।
- साथियों के साथ खेलने के लिए एक ही आयु वर्ग के बच्चे व अन्य आयु वर्ग के बच्चे।

जब बच्चा बाहरी नियंत्रण से मुक्त होता है, तो सहजता लाने की अधिक गुंजाइश होती है, जहाँ बच्चा अपनी सहजता के साथ खेलना शुरू करता है।

उदाहरण:- ब्लॉक खेलते समय बच्चे का शिक्षक एवं माता-पिता का अभिनय करना, सामाजिक भागीदारी में बच्चे के स्तर और उनके खेलने में पैटर्न अलग होता है।

बच्चों के विकास में मुक्त खेल की भूमिका:-

1. **सामाजिक ज्ञान का निर्माण-** जैसा कि हम लोग जानते हैं कि समाज हमारे चारों ओर कैसे काम करता है? हमने अपने स्वयं के प्रतिनिधित्व या मॉडल का निर्माण इस समाज के अनुसार ही लिया है। वास्तव में, यह समाज हमारे ज्ञान का निर्माण करने में मदद करता है कि यह क्या हो रहा है और यदि मुझे कुछ करना है, तो समाज के अनुसार कार्य करना है जिसे सामाजिक ज्ञान कहा जा सकता है। हमारी कक्षा के संदर्भ में भी सामाजिक ज्ञान मदद करता है।
   I. यदि बच्चे खिलौना/माला/ब्लॉक लेते हैं, तो अन्य लोग कैसी प्रतिक्रिया करते हैं?
   II. यदि बच्चा अन्य लोगों को गतिविधियों में शामिल नहीं करता है, तो अन्य बच्चे कैसी प्रतिक्रिया देते हैं ?

मुक्त खेल को शिक्षक, बच्चों के व्यवहार को समझने के लिए अभ्यास कराते हैं और अपने हस्तक्षेप के माध्यम से बच्चों के सामाजिक व्यवहार को प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हम अक्सर कहते हैं कि बच्चा दूसरे को देखकर सीखता है और यह सत्य है।

उदाहरण: मुक्त खेल में दो बच्चे ब्लॉक के साथ खेलते हैं जबकि एक बच्चा उपलब्ध सभी खेल सामग्री का उपयोग करता है और दूसरे बच्चे के पास कोई खेल सामग्री नहीं है। यहाँ शिक्षक दिए गए निर्देशों को दोहराते हुए हस्तक्षेप करते हैं और दी गई सामग्रियों में दूसरों के साथ खेलने के तरीके भी प्रदर्शित करते हैं।

2. **सामाजिक कौशल का निर्माण-** ज्ञान के अभ्यास से कौशल विकास संभव है। उसी तरह बच्चे कक्षा में अपने निर्मित सामाजिक ज्ञान का अभ्यास करते हैं, जो सामाजिक कौशल के जैसा ही होता है।

I.खेल सामग्री को छीनने के बजाय सभी के साथ साझा करना।

II.गतिविधि में शामिल न करने की तुलना में सामग्रियों को साथ लेकर काम करने पर सहमत होना।

III.अन्य के साथ खेलने की अनुमति तथा अवसर प्रदान करना।

सक्रिय मार्गदर्शन के साथ मुक्त खेल में शिक्षक की देखरेख में सीखे गए सामाजिक ज्ञान और सामाजिक कौशल तब अधिक उपयोगी होते हैं, जब बच्चे सामग्री के साथ समूहों में एक साथ काम करते हैं।

उदाहरण- खेल सामग्री साझा करके खेलने के विभिन्न कोने में सामग्री के साथ खेल रहे बच्चे एवं समान विचारों पर चर्चा करते हुए, कोने में विभिन्न पुस्तकों के साथ खेल रहे बच्चे। यह पूर्व सामाजिक व्यवहार बच्चों को समझने में और जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते है, यह दूसरों के साथ समानता स्थापित करने में मदद करता है।

मुक्त खेल के लाभ-

1. **बच्चे बिना किसी तनाव के सीखते हैं-** डर/तनाव बच्चे की सीखने की क्षमता तथा बच्चों के मस्तिष्क को सोचने और कार्य करने के लिए रोकता है। तनाव, उचित वातावरण का न होना या कम होना आपको सोचने, भावनाओं को खोलने, विचारों को साझा करने और कार्य करने के लिए रोकता है।

इसी तरह स्कूल में तनाव वाले बच्चों के लिए, उचित वातावरण उनके तेजी से विकास की जरूरतों में लाभ प्रदान करते हैं। मुक्त खेल, कक्षा की ऐसी गतिविधियों में से एक है, जो बच्चों के लिए तनाव को कम करके उपयुक्त वातावरण बनाते हैं, जहाँ उन्हें शिक्षक द्वारा विशेष गतिविधि या खेलने के लिए सामग्री या साथी

चुनने के लिए प्रेरित किया जाता है। इससे बच्चों को तनाव रहित वातावरण में तेज और सक्रिय रूप से काम करने में मदद मिलती है।

2. कल्पना करने के लिए उनके पूर्व ज्ञान का उपयोग करना- मुक्त खेल में संलग्न होने के दौरान भी बच्चे अपने पूर्व ज्ञान पर लौट आते हैं, और उससे पूरी तरह से अनुभव प्राप्त करते हैं और उस अनुभव की कल्पना में खेलते हैं।

उदाहरण:- खेल के लिए बच्चे डॉक्टर, शिक्षक, पिता, माता आदि की भूमिका निभाते हैं। ये वे भूमिकाएँ होती हैं, जिन्हें बच्चे अक्सर अपने जीवन में नोटिस करते हैं। मुक्त खेल बच्चों को कल्पनाशील रूप से अपने अनुभवों को क्रियान्वयन में लाने का एक अवसर है। पूर्व ज्ञान की प्रक्रिया में बच्चों की सोचने की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ती है कि डॉक्टर स्टेथोस्कोप का इस्तेमाल कैसे करते हैं? मेरी माँ ने क्या कहा था? जब मैं रो रही थी। मेरे पिता कैसे चलते हैं आदि। ये बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता का निर्माण करने में मदद करते हैं।

3.स्वयं खोज का क्षेत्र- मुक्त खेल में बच्चे रेत और डंडा (लाठी) का उपयोग करते हुए एक खेल शुरू करते हैं, पत्तियों को इकट्ठा करते हैं और पत्थरों को सजाते हैं, वाहनों के रूप में पत्थरों का उपयोग करते हैं।

शिक्षक को इन सामग्रियों का उपयोग करते समय बच्चों का निरीक्षण करते रहना है। मुक्त खेल में अधिक सामग्री होने से बच्चों को स्थान और सामग्री का पता लगाने में मदद मिलती है और अनुभव के साथ स्वयं-खोज की खुशी मिलती है, डर के बिना अपने स्वयं के रचनात्मक विचारों को व्यक्त करने में सक्षम होने पर रोमांच, जो पूर्व निर्धारित तरीके से सही या जीत आमतौर पर उत्पन्न होता है।

मुक्त खेल में शिक्षक की भूमिका:-

उपरोक्त गतिविधियों में सीखने के अवसरों को प्रदान करते हुए बच्चों को मुक्त खेल हेतु शिक्षकों को निम्नांकित बातें सुनिश्चित करने की आवश्यकता है-

वातावरण- इसमें ज्यादातर अनुकूल शिक्षण वातावरण शामिल है, जो शिक्षकों द्वारा आवश्यक टीएलएम और स्नेहीत परस्पर विचार-विमर्श के साथ स्थापित किया जाता है।

किसी भी गतिविधि को करने से पहले आवश्यक चीजों की व्यवस्था करना अति आवश्यक है। जैसे- खाना पकाने के लिए हम सभी आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी आपकी रसोई को अस्त-व्यस्त न करें। जब बच्चे मुक्त खेल में संलग्न होते हैं, तो उन्हें खेलने के लिए आवश्यक सामग्रियों की आवश्यकता होती है, शिक्षक बच्चों को मुक्त खेल में संलग्न करने और सीखने के अवसर का उपयोग करने के लिए संसाधनों की व्यवस्था करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। जिसमें संसाधनों को खेलने में अन्वेषण की विस्तृत श्रृंखला का सहयोग हो।

कक्षा के अंदर (इनडोर) का वातावरण:- विशेष रूप से सीखने के कोने अनुकूल वातावरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो बच्चों के लिए सबसे अच्छी जगह होती है।

- **भाषा का कोना-** इसमें पुस्तकें/समृद्ध सामग्री प्रिंट शामिल हैं जो बच्चों को शब्द और प्रिंट के साथ जोड़कर भाषा की क्षमता का पता लगाने में मदद करते हैं।
- **ब्लॉक/पहेलियाँ कोना-** इसमें ब्लॉक, पहेलियाँ/खूँटी बोर्ड शामिल हैं। जैसे- बच्चों को पहेलियाँ, सोचने के लिए उनकी संज्ञानात्मक क्षमता का पता लगाने में मदद करती है।

- **खेलने का कोना**- इसमें ऐसी सामग्रियाँ शामिल होती हैं, जिन्हें बच्चे अक्सर देखते हैं- किराना समान का सेट, डॉक्टर किट, किचन सेट आदि। इस सामग्री की सहयता से बच्चों को उनके द्वारा चुनी गई भूमिका निभाने पर उनके नाटकीय कौशल का पता लगाने में मदद करता है।
- **रचनात्मक कोना**- इसमें रंग, क्रेयॉन, पेपर आदि सामग्री शामिल है। यह बच्चों को सक्रिय रूप से चित्रकारी (ड्राइंग)/क्राफ्टिंग द्वारा उनके रचनात्मक कौशल का पता लगाने में मदद करता है।

उदहारण :- कक्षा के अंदर के खेल

गतिविधि 1- आओ, मुझे जानो

सुगमकर्ता सभी को अपना नाम बताते हुए कोई एक क्रिया करके दिखाएँ और ताली बजाएँ। साथ ही अपनी किसी पसंदीदा चीज या काम के बारें में तथा उस चीज या काम के बारें में बताएँ जिसे वे पसंद करते हैं। इसके अतिरिक्त नापसंद चीजों के बारें में भी बताएँ जैसे- मुझे गीत गाना पसंद है और रस्सी कूदना नापसंद है। इसी तरह अन्य प्रतिभागी भी अपना परिचय दें और अपने पसंद एवं नापसंद का परिचय दें। ध्यान रहे कि सभी को पर्याप्त अवसर मिले ।

गतिविधि 2- चिड़िया उड़

प्रतिभागी एक घेरे में बैठ जाएँ। सब लोग अपने हाथ की एक ऊँगली बाहर निकालकर ज़मीन पर रखें। आपको जल्दी-जल्दी कहना है चिड़िया उड़, तोता उड़, कपड़ा उड... और कहते-कहते अपनी ऊँगली को उठाना है। बच्चे भी अपनी ऊँगली उठाकर चिड़िया- तोता उड़ाएँगे। लेकिन जब आप कहते हैं 'पहाड़ उड़, पंखा उड़ तो प्रतिभागी को अपनी ऊंगली नहीं उठानी है। भला पंखा और पहाड़ भी कहीं उड़ते हैं? जल्दी-जल्दी बहुत कुछ उड़ाना है और मज़ा लेना है। जो प्रतिभागी गलती करेंगे वे खेल से बाहर हो जाएँगे।

गतिविधि 3 - शब्दों की अंत्याक्षरी

सभी प्रतिभागियों के एक समूह बनाएँ। पहले प्रतिभागी एक शब्द बोलें। वह प्रतिभागी उस शब्द की आखिरी आवाज़ भी बताएँ, जैसे- 'मटर' से 'र'। दूसरे बच्चे को 'र' से बनने वाला कोई शब्द बताना होगा। इसी तरह बारी-बारी से प्रत्येक बच्चों द्वारा बोले गए शब्द के आख़िरी अक्षर से शुरू होने वाला नया शब्द बोलें और इस खेल को आगे बढ़ाएँ।

नोट:- आगे चलकर आख़िरी आवाज़ से भी खेल सकते हैं। जैसे दरवाजा, जाला, लाली, लीची, चीनी, नीला आदि।

गतिविधि 4- ताली-चुटकी

इस रोचक गतिविधि से प्रतिभागियों में इकाई और दहाई की समझ विकसित होगी। सुनो और बूझो। एक ताली यानी 10 दो ताली यानी 20 और तीन ताली यानी 30। इसी तरह एक चुटकी यानी 1, दो चुटकी यानी 2, अब मैं ताली और चुटकी बजाऊँगी/गा। आपको ध्यान से सुनना है और कुल संख्या बतानी है।
उद्देश्य- इस गतिविधि में बच्चों में इकाई और दहाई की समझ विकसित होगी।

गतिविधि 5 - मैंने देखा...

प्रतिभागियों से कहें कि वे कुछ देर चुपचाप चारों तरफ की चीजों को देखें। फिर उन्हें उन चीजों के नाम बताने के लिए कहें, जैसे- आज मैंने देखा पंखा... मैंने देखी खिड़की... मैंने देखा दीदी का लाल दुपट्टा आदि। हर प्रतिभागी की बताई चीज़ अलग-अलग होनी चाहिए।

गतिविधि 6- खुल जा सिमसिम

काग़ज़ की कुछ पर्चियों पर कोई भी अक्षर या शब्द लिखकर उन्हें मोड़ दें। पर्चियों को किसी प्लेट या टोकरी में डालकर प्रतिभागियों के बीच में रख दें। अब सुगमकर्ता बोलें, 'खुल जा सिमसिम' तो एक-एक करके प्रतिभागी को पर्चियाँ खोलने के लिए कहेंगे। जिस प्रतिभागी को जो भी अक्षर/शब्द मिलेगा, उस अक्षर से शुरू होने वाला शब्द उसे बोलना है। जिन प्रतिभागी को शब्द मिलेंगे वे शब्दों से वाक्य सोचकर बोलेंगे।

बाहर (आउटडोर) का वातावरण-

अधिकांश बच्चों के लिए खेलना बचपन के अनुभव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। कुछ खास बिताए गए पलों के चित्र खींचे जा सकते हैं। इसकी एक संभावना यह है कि इसमें स्वतंत्रता की अधिकता होती है, जहाँ हम दौड़ने और कूदने में सक्षम होते है। तेज रोशनी और अच्छी हवा के साथ बाहरी स्थान बच्चों को बेहतर महसूस कराते हैं।

बाहरी (आउटडोर) खेल में बच्चों को जोड़ते समय शिक्षकों द्वारा ध्यान में रखी जानी वाली कुछ बातें-

- **बाहरी वातावरण तैयार करना**

बच्चे उपलब्ध वातावरण का पता लगाते हैं और उपलब्ध सामग्री के साथ खेलने के अपने तरीके के साथ आते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए शिक्षक कक्षा के अंदर (इनडोर) के वातावरण को एक अनुकूल जगह में तैयार करें, जहाँ बच्चे उनसे जुड़कर सीख सकें। उसी तरह शिक्षक अपने बाहरी वातावरण को सिखाने के लिए सुरक्षित और गुणवत्ता पूर्ण समय बच्चो के साथ बिताएँ। सुनिश्चित करें कि आउटडोर खेल का क्षेत्र सुरक्षित हो।

- ➢ कोई नुकीली चीज न हो।
- ➢ कोई बड़े वाहन न चल रहे हों या कोई पशु न घूम रहे हों।
- ➢ कोई बड़ा पत्थर/ढहने वाली दीवार/गड्ढे न हों।

सुनिश्चित करें कि शिक्षक इन बुनियादी नियमों का पालन करें-

- ➢ बच्चों का पर्यवेक्षण करें।
- ➢ बच्चों को आवश्यक सहायता प्रदान करें।
- ➢ गतिविधियों के लिए आवश्यक खेल सामग्री की व्यवस्था करें।

- **हरा स्थान**

आमतौर पर पेड़ और पौधों की तरह हरे रंग के रिक्त स्थान में सुखद हवा, प्रभावशाली रंग और शांत छाया होती है जैसे- हरे रंग की जगह विश्राम की भावना उत्पन्न करती है। हरे स्थान में काम पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता का निर्माण होता हैं, जो अंततः एकाग्रता में वृद्धि करते हैं। इसलिए कक्षा में भी हरा स्थान रखने का सुझाव देते हैं।

बच्चों को स्थान और सुरक्षा समझने के लिए प्रोत्साहित करें-

बच्चों के स्थान और सुरक्षा पर विचार करते हुए घर के अंदर (इंडोर) जगह होने पर भी अधिकतर बच्चों को इधर-उधर दौड़ने, कूदने और चिल्लाने की अनुमति नहीं देते हैं, लेकिन हम बाहरी स्थान पर इसकी अनुमति देते हैं।

2. अवलोकन खेल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें बच्चों को खेलने में संलग्न करते समय शिक्षक को ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होती है। जैसे- मुक्त खेल में बच्चे को खेलते देखकर शिक्षक को इन बिन्दुओं को समझने में मदद मिलती है।

- वे कौन सी गतिविधियाँ हैं, जिनमें बच्चे अधिक रुचि दिखाते हैं और शिक्षक संसाधनों की व्यवस्था करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं और वातावरण जो बच्चों के खेल में सहयोग और विस्तार करते हैं।
- बच्चे अपने खेल में क्या करते हैं- विचारों को साझा करते हैं, भूमिका निभाते हैं, हँसते हैं, लड़ते हैं आदि।
- खेल में बच्चे कितने समय तक टिके रहते हैं?
- व्यवहार का पैटर्न जो खेल में उभरता है जिनके साथ खेलने की अनुमति नहीं देता है। जैसे- बच्चों का लिंग, उम्र या पड़ोस के आधार पर। इसलिए शिक्षक ऐसे व्यवहार की संवेदनशीलता को समझने के लिए बच्चों का मार्गदर्शन करने के लिए गतिविधियों की योजना बना सकते हैं।

खेल के दौरान बच्चों की प्रशंसा :-

शिक्षक उन विशिष्ट व्यवहारों की पहचान करके, जिन्हें वह बच्चों के बीच प्रोत्साहित करना चाहते हैं। उनकी प्रशंसा करते हैं, तो केवल प्रशंसा वाले शब्दों का उपयोग न करके बच्चे ने जो क्रियाकलाप में भाग लिया है, उसके लिए प्रशंसा करें।

उदाहरण:- एक बच्चा उचित तरीके से ब्लॉक को सँभाल नहीं पा रहा है तो शिक्षक द्वारा सावधानीपूर्वक हैंडलिंग ब्लॉकों के बारे में चर्चा की जाएँ एवं प्रदर्शन करते हुए बताएँ जाएँ कि आप अच्छा कर रहे है। या आप इससे भी "बहुत अच्छा" कर सकते है ।

"मुक्त खेल एक ऐसा खेल नहीं है, जहाँ बच्चे अलग से खेलते हैं और शिक्षक अपना काम अलग से करते हैं। शिक्षक बच्चों का निरीक्षण करते हैं और आवश्यक सहायता प्रदान करते हैं ।"

3. बातचीत :-

शिक्षक अपने मुक्त खेल के दौरान बच्चों के साथ किस हद तक बातचीत करते हैं, यह परिस्थितियों के आधार पर अलग-अलग हो सकता है। बच्चों के खेल के समय से पहले हस्तक्षेप करने से वे गलतियाँ कर सकते हैं, उनसे सीख सकते हैं, समस्याओं को रचनात्मक रूप से हल कर सकते हैं और सामाजिक चुनावों के समाधान पर बातचीत कर सकते हैं। उन स्थितियों में शिक्षकों को खेल में एक गैर-प्रतिभागी के रूप में शामिल होना चाहिए। एक प्रतिभागी के रूप में और दूसरा साथी के रूप में।

अंततः खेल का समय महत्वपूर्ण है, ताकि शिक्षक बच्चे के खेल पर ध्यान न दें, उसे विफल या समाप्त न करें, बल्कि खेल में सहयोग और विस्तार करें।

उदाहरण:- पिछले चार दिनों तक शिक्षक मुक्त खेल का अवलोकन करें। यदि बच्चा केवल ब्लॉकों के साथ घर बना रहा है, तो बच्चों की क्षमताओं का विस्तार करने के लिए शिक्षक हस्तक्षेप कर सकते हैं और बच्चों के साथ बातचीत कर सकते हैं।

- 'आप रोज़ क्या बना रहे हैं?
- 'क्या आपको यह घर पसंद है?
- 'क्या हम इन ब्लॉकों के साथ कुछ नया करने की कोशिश कर सकते हैं?

कौशल के अनुरूप यह जान पा रहे हैं कि कब और कैसे क्रियाकलापों में भागीदारी करनी है? बातचीत में बच्चों को सिर हिलाकर या मुस्कराकर काम करना भी शामिल है।

उदहारण के तौर पर बाहर के खेलों की कुछ गतिविधियाँ :-

गतिविधि 1:- रस्सी का खेल

रस्सी को अलग-अलग माध्यम से खेलते हैं।

1. प्रतिभागियों को दो भागों में बाँटकर रस्सी को पकड़कर मध्य भाग में सुगमकर्ता खड़ा हो जाए और दोनों तरफ प्रतिभागी रस्सी को अपनी तरफ जोर लगाकर खींचे। प्रतिभागी ध्यान रखें कि प्रतिभागियों का संतुलन बना रहे।

2. सीधी आड़ी तिरछी रस्सी पर चलना- इस तरह अलग अलग रस्सी को आकार दें, जिस पर सुगमकर्ता प्रतिभागियों को चलने का अवसर दें। फिर कुछ वस्तु, कटोरी, किताब अन्य कुछ वस्तुओं को सिर पर रखकर चलने का मौका दें जिससे संतुलन बनाना सीखें।

3. एक रस्सी को प्रतिभागियों के सिर के ऊपर बाँधे, जिसे प्रतिभागी उछलकर छूने की कोशिश करें।ध्यान रखें गतिविधि करते समय प्रतिभागियों का आपस में टकराव न हो।

गतिविधि 2:- बिल्लस का खेल

गतिविधि की तैयारी के पहले सुगमकर्ता स्वयं चार जगह बिल्लस खेल का खाँचा/ड्रा बना दें। प्रतिभागी 1 नंबर पर अपना बिल्लस डालें व 2 अंक पर लँगड़ी टांग से जंप करते हुए 7 अंक तक जाकर वापस 2 अंक पर खड़े होकर अपना बिल्लस उठाकर बाहर आ जाएँ। ऐसे ही फिर 2 अंक पर अपना बिल्लस डालें व 1 अंक से 7 अंक पर जाकर वापस आते हुए बिल्लस उठाकर बाहर आ जाएँ। इस खेल में कोई बच्चा हारेगा या जीतेगा नहीं, सभी मजा (Enjoy) करेंगे। इस खेल को सुगमकर्ता 1 से 9 ,11 से 20 तक के अंक में भी करा सकते हैं।

गतिविधि 3:- मामाजी का घर

इस गतिविधि में सुगमकर्ता तार्किकता के साथ किसी कार्य को करने में सहायता प्रदान करेंगा। प्रत्येक प्रतिभागी का अलग-अलग तर्क तरीका हो सकता है। मैं यहाँ हूँ और वहाँ मामाजी का घर है। मुझे मामाजी के घर जाना है। लेकिन वहाँ पहुँचने के लिए यहाँ लिखी सभी संख्याओं को छूते हुए जाना है। शर्त यह है कि अगर मैं इन अंकों को रेखाओं से जोड़ता हूँ तो रेखाएँ एक-दूसरे को न छुएँ और न ही काटें। क्या मामाजी के घर

पहुँचने में आप मेरी मदद करेंगे? लाइन और अंक चाहें तो जमीन पर बना सकते हैं। अब खेल शुरू करें? इस खेल को सुगमकर्ता बड़े अंकों के साथ भी करवा सकते हैं।

गतिविधि 4:- बोल भाई, कितने?

सारे प्रतिभागी एक बड़े समूह के गोले में खड़े हो जाएँ और सुगमकर्ता बीच मे खड़े होकर प्रतिभागियों को निर्देश दें कि मेरे द्वारा बोला जाएगा "बोल भाई कितने तो आप गोले में घूमते हुए बोलेंगे आप चाहें जितने तो फिर सुगमकर्ता कोई अंक बोलेगा जैसे- 3 तो 3-3 प्रतिभागियों का समूह बनाएँगे, जिस समूह में प्रतिभागी 3 से अधिक होंगे वह समूह आउट हो जाएगा। इस तरह अंको को बदल बदल कर खेल को आगे बढ़ाएँ।

निर्देशित खेल :-

निर्देशित खेल सीखने के अनुभवों को संदर्भित करता है, जो सीखने के परिणामों और वयस्कों की सलाह पर ध्यान देने के साथ मुक्त खेल के निर्देशित प्रकृति को जोड़ती है। जब बच्चे मुक्त खेल में संलग्न होते हैं, तो वे सक्रिय हो जाते हैं और इस प्रकार खेल मज़ेदार, स्वैच्छिक और लचीला होता है।

इस प्रकार, निर्देशित खेल में दो प्रमुख तत्व हैं (बच्चा सीखने का निर्देशन करता है) और कोमल मार्गदर्शन यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चा सीखने के लक्ष्य की ओर बढ़ता है। निर्देशित खेल में ज्यादातर शिक्षक खेल की शुरुआत करते हैं और गतिविधि को आगे बढ़ाने के लिए बुनियादी नियमों के साथ मार्गदर्शन करते हैं।

उदाहरण:- निर्देशित खेल में, शिक्षक खेल के बुनियादी नियमों को निर्धारित करते हैं, यदि आवश्यक हो तो खेल को प्रदर्शित करें और बच्चों को खेलने में संलग्न करने के लिए प्रोत्साहित करें।

"बच्चे 'करके सीखने/हाथों के अनुभव से सीखने' (हैंड्स ऑन लर्निंग) वाले होते हैं- वे वस्तुओं और अपने आसपास के लोगों के साथ खेलते हुए बातचीत के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं। ठोस वस्तुओं के साथ अनुभव पर इन हाथों का नेतृत्व करने वाले शिक्षक बच्चों को अमूर्त अवधारणाओं को भी समझने में मदद करते हैं।"

निर्देशित खेल में शिक्षक की भूमिका

- खेल के लिए आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करें।
- बच्चों को खेल के बारे में स्पष्ट निर्देश दें।
- यदि आवश्यक हो तो खेल का प्रदर्शन करें।
- यदि बच्चे दिए गए निर्देशों के अनुसार खेल में संलग्न नहीं हो पा रहे हैं, तो शिक्षक हस्तक्षेप करें और निर्देशों को दोहराएँ, बोलें?
- देखें कि बच्चे खेल से कैसे जुड़ते हैं?
- बच्चों की उम्र पर विचार करें।

उदाहरण:- ईंटों पर चलना (निर्देशित खेल)

संतुलन के साथ चलने के उनके कौशल को चुनौती देने के लिए बच्चों को व्यवस्थित ईंटों पर चलने का अवसर प्रदान करें। इससे बच्चों को ईंटों पर चलने के लिए समतल सतह पर चलने के अपने कौशल का विस्तार करने में मदद मिलेगी। चलते समय बच्चे ईंटों का निरीक्षण करते हैं। प्रत्येक ईंट के बीच की ऊँचाई और दूरी और

शरीर (पैरों और हाथों) को समन्वित करने का प्रयास करते हैं, जो कि स्थूल मांसपेशियों के विकास में मदद करता है। स्वस्थ्य शारीरिक कौशल को चुनौती देने के लिए इस तरह की गतिविधियों में नियमित रूप से संलग्न होने से बच्चे को उस कौशल को हासिल करने में मदद मिलती है। इस तरह के शारीरिक कौशल बच्चों में उपलब्धि की भावना पैदा करते हैं और ऐसी गतिविधियों में संलग्न होने की रुचि पैदा होती है।

इस गतिविधि में बच्चों को संलग्न करते समय बच्चों की क्षमता भी सुनिश्चित करें। गतिविधि में संलग्न होना बहुत आसान या बहुत कठिन न हो ,क्योंकि बच्चों को पैदल चलने की क्षमता और उनके आस-पास की जगह को समझने में आसानी के साथ चलने की जटिलता को समझने के लिए आकृति 1 देखें -

निर्देशित मैदानी खेल – ईंटों पर चलना

निर्देशित मैदानी (आउटडोर) खेल – वे बच्चे जो ईंटों पर अच्छी तरह से चलना सीख गये हैं।

खेल को समझने के लिए चेकलिस्ट :-

- गतिविधि के लिए आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करें।
- गतिविधि में संलग्न रहते हुए बच्चों के आयु वर्ग पर विचार करें।
- भाषा में स्पष्ट निर्देश दें जो बच्चे आसानी से समझ सकें।
- सभी बच्चों को अवसर प्रदान करें।
- बच्चों की निगरानी तब करें जब वे किसी गतिविधि में संलग्न हों और आवश्यक सहायता प्रदान करें।

गतिविधियों की सूची :-

1. कम और ज्यादा
2. हल्का और भारी
3. वस्तुओं के अलग-अलग उपयोग
4. अक्षर कूद एवं अंक कूद
5. म्याऊँ
6. खोजो मेरे अक्षर
7. जोड़ी मिलाओ
8. हवा चली
9. समान आकृति को मिलाना

10. छिपी हुई वस्तुओं को खोजना
11. बाहर कूदो और अंदर कूदो
12. शेर राजा
13. अक्षर से शब्द
14. तूफ़ान आया
15. मेहमान पहचान

खेल

1. बच्चों को हर दिन 20 मिनट मुक्त खेल खेलने का मौका दिया जाना।
2. बच्चों को हर दिन बाहर खेल खेलने का अवसर दिया जाना।
3. बच्चों में शारीरिक और बौद्धिक विकास के लिए प्रतिदिन एक बार बच्चों के साथ विशिष्ट खेल करान ।

खेल के माध्यम से बच्चों का विकास :-

शारीरिक विकास:- रस्सी पर चलने, कूदने से बड़ी मांसपेशियों का विकास (हाथ, आँख, कंधे), होल्डिंग ब्लॉक और मोतियों से विशेष रूप से छोटी मांसपेशियों (ऊँगलियों) का विकास होता है। निर्देशों के माध्यम से सावधानीपूर्वक सोचने और एकाग्रता के साथ उनका पालन करने में मदद मिलती है। सभी के साथ खेलने से सामुदायिक विकास में नए विचारों की रचनात्मकता को विकसित करने के अवसर मिलते है। खेलों के माध्यम से बच्चों की सोच (बौद्धिक विकास) में तेजी लाने की क्षमता बढ़ती है। इसके लिए, हम बच्चों को खेल के माध्यम से गणित और भाषा के कौशल सिखा सकते हैं।

बच्चे कैसे खेलते हैं?	उपयोग
जब दूसरे खेल रहे हों तो अवलोकन करके।	यह समझना, कि अन्य लोग कैसे खेल खेल रहे हैं।
अकेले खेलना	स्वयं खेलने की क्षमता विकसित करना।
दूसरों को देखना और खेलना	निरीक्षण करें कि दूसरे कैसे खेल रहे हैं? और उनकी तरह खेलने का प्रयत्न करना।
दूसरों के साथ खेलना	सामाजिक रूप से सभी के साथ मिलनसार होना।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि बच्चे धीरे-धीरे अकेले खेलने से सभी के साथ खेलने की क्षमता विकसित कर लेते हैं। बच्चों को इस तरह से विकसित करने के लिए, शिक्षक उन्हें वह अवसर प्रदान करें, जिनकी उन्हें आवश्यकता है।

उदाहरण :-

यदि बच्चे अकेले खेल रहे हैं, तो उन्हें देखें और उन्हें वे खिलौने उपलब्ध कराएँ, जिनकी उन्हें आवश्यकता है। उन्हें दूसरों का सहयोग करने के लिए मजबूर न करें। यदि बच्चे कई दिनों तक किसी के साथ नहीं खेलते हैं, तो शिक्षक को ऐसे बच्चों से बात करने और उनके साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करें, फिर उन बच्चों को दूसरे बच्चों के साथ खेलने के लिए भी प्रोत्साहित करें।

मुक्त खेल- खेलते समय शिक्षकों को ध्यान रखने योग्य बातें:-

- बच्चों के लिए खेलने की सामग्री उपलब्ध रखें।
- बच्चों को अपने पसंदीदा खेलों (अंदर-बाहर) के लिए प्रोत्साहित करें।
- खेलते समय बच्चों का निरीक्षण अवश्य करें।
- बच्चों के साथ संवाद करें वे क्या खेल रहे हैं और कैसे सोच रहे हैं?

उदाहरण:- जब बच्चे छोटे समूहों में साथ खेल रहे हों, तो उनसे पूछें कि वे क्या खेल, खेल रहे हैं?

- शिक्षक अन्य बच्चों को खेल देखने के लिए प्रोत्साहित करें कि वे कैसे खेल रहे हैं?
  जैसे- राम आप बहुत सावधानीपूर्वक समूहों के साथ अच्छा खेल रहे हैं।
- बच्चों को अपने स्वयं के खिलौने लेने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें खेलने के बाद उसी स्थान पर रखने के लिए कहें। जैसे- बच्चों को कोने में पहेलियाँ खेलने के बाद उन्हें उसी स्थान पर रखने के लिए प्रोत्साहित करें।

निर्धारित खेल-खेलते समय शिक्षक को ध्यान रखने योग्य बातें :-

- खेल की सामग्री अपने पास में रखें।
- बच्चों को निर्देश स्पष्ट रूप से समझाएँ।
- बच्चों को उम्र के आधार पर खेल खेलाएँ।
- बच्चों को खेल-खेलने के निर्देश देने के बाद, शिक्षक और सहायक भी एक बार खेल-खेलकर दिखाएँ।
- खेलते समय बच्चों का निरीक्षण अवश्य करें।
- यदि बच्चे बताए अनुसार खेल नहीं खेलते हैं, तो निर्देशों को समझने के बाद खेल को दोहराएँ और यदि आवश्यक हो तो फिर से साथ में खेल खेलें।
- बच्चों को खेलने के लिए आगे आने के लिए मजबूर न करें। उन्हें यह देखने के लिए कहें कि बाकी बच्चे कैसे खेल रहे हैं?
- खेल का सामान्य वर्गीकरण करके उनके फायदे बताना और सभी खेलों के उदाहरण देते हुए प्रक्रिया, निर्देश व उपयोगिता को बताएँ।

बच्ची-बच्चे पढ़ेंगे, लिखेंगे,
नहीं निरक्षर नारी हो।
गाँव-गाँव में फैले शिक्षा,
शिक्षित जनता सारी हो।

भाषा और साक्षरता कौशलों का विकास

सत्र के उद्देश्य-

1. मौखिक भाषा विकास में गतिविधियों का चयन हेतु प्रतिभागियों की समझ विकसित करना।
2. प्रशिक्षणार्थियों के साथ गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में होने वाले मौखिक भाषा विकास के महत्व को समझाना।

प्रशिक्षण की योजना :-

सत्र का नाम	गतिविधि	समय	प्रक्रिया	आवश्यक सामग्री
भाषा और साक्षरता कौशल	कुछ आसान कुछ कठिन	30 मिनट	प्रशिक्षक प्रतिभागियों को कुछ शब्द देंगे। शब्द आसान हों और जिसके बारे में प्रतिभागी जानते हों। प्रशिक्षक गतिविधियों के नियम बता दें। सभी प्रशिक्षणार्थी बच्चों की भूमिका निभाएँगे। वे भूमिका 6 से 7 साल के बच्चे की तरह निभाएँ। वे कुछ इस तरह के शब्द दे सकतें हैं जैसे- 'घर' इस पर बातचीत या चर्चा करें। किसी एक ऐसी चीज को प्रतिभागियों को दिखाएँ, जिसके बारे में न जानते हों। ताकि उन्हें इसके बारे में बताने में कठिनाई हो। जैसे- जिराफ़ प्रशिक्षक को इन दोनों चीजों में तुलना करके बच्चों में होने वाले भाषा विकास के बारे में बताएँ। कौन-सी चीज पर बात करना मुश्किल हो रहा था। कौन-सी चीज पर बात करना आसान हो रहा था और क्यों? तो फिर बच्चों में भाषा विकास के लिए क्या करना जरूरी है?	चित्र-चार्ट
मौखिक भाषा विकास	चित्र तुम्हारे बोल हमारे	20 मिनट	• प्रशिक्षक एक दृश्य चित्र पर बातचीत करें। (चित्र एक से अधिक हो सकते हैं।) • प्रतिभागियों को दिए जा रहे चित्र का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने के लिए कहें। • प्रतिभागियों से पूछें- इस चित्र पर आप अपने विचार कैसे रखेंगे? • जवाब में- बोलकर, चित्र देखकर, समझकर, सोचकर, सुनकर आदि जैसे जवाब हो सकते हैं।	विद्या आनंद में दिए गए चित्र का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। चित्र को PPT में भी

			प्रशिक्षक द्वारा भाषा विकास बच्चों में किस तरीके से होता है? इस पर विचारों को समेकित करें। • सभी को अपनी भाषा में या अलग-अलग भाषा में इस चित्र के बारे में कहने के लिए कहें। • एक-एक कर प्रश्न रखें और उस पर चर्चा करें। • भाषा का इस्तेमाल कब-कब करते हैं? • भाषा क्यों आवश्यक है?	दिखा सकते हैं या किताबों के जरिए भी साझा कर सकते हैं।
सुनने की समझ और संवाद कौशल	अदला-बदली	30 मिनिट	प्रशिक्षणार्थियों को गोल घेरे में खड़ा करें। सभी का ध्यान खींचने के लिए कुछ एक्शन करें। ध्यानाकर्षण हो जाने पर गतिविधि का नाम और नियम बताए। इस गतिविधि के नियम- सभी गोल घेरे में खड़े होंगे। एक साथी जो बीच में खड़ा होगा, वह Lead कर रहा होगा। Lead करने वाला कहेगा- क्या अदला-बदली करनी है? फिर- सब बोलेंगे- करनी है भई करनी है। ...... फिर खेल की शुरुआत होगी। Lead करने वाला/बीच वाला व्यक्ति कहेगा कि, घड़ी पहनने वाला व्यक्ति अपनी जगह बदले और घड़ी पहने हुए सभी व्यक्तियों को अपनी जगह बदलनी होगी। जगह कि अदला-बदली के दौरान जो भी जगह खाली दिखेगी, बीच वाला व्यक्ति उस जगह पर जाकर खड़ा हो जाएगा और जिसे जगह नहीं मिलेगी, वह बीच में आकर फिर से खेल को शुरू करेगा। क्या अदला-बदली करनी है? करनी है भई करनी है चश्मा पहनने वाले अपनी जगह बदलें। इसी तरह यह प्रक्रिया चलती रहेगी। अब प्रतिभागियों से पूछें गतिविधि में क्या हो रहा था? गतिविधि में हमने क्या किया? इस खेल में किस बात पर ज्यादा महत्व दिया गया था?	चॉक, पॉइंटर भी रख सकते हैं।

			जवाब में - सुनने की प्रक्रिया को महत्व दिया गया था? प्रतिभागियों का ऐसा उत्तर हो सकता है। अब सुनने की समझ को लेकर चर्चा को आगे बढ़ाएँ। **टीप-** प्रशिक्षक एक बार खेल को समझाने के लिए पहले स्वयं करके दिखा दें।	
शब्दावली विकास	कुछ बोलें	20 मिनिट	• प्रतिभागी बच्चों की भूमिका में होंगे। • चित्र में एक बच्चे के पीछे कुत्ता खड़ा होगा। इस चित्र को दिखाकर प्रशिक्षक प्रतिभागियों से पूछेंगे- इस चित्र पर क्या दिख रहा है? क्या हो रहा है? फिर क्या हुआ होगा? आप के साथ ऐसा हुआ है क्या? कब हुआ है? फिर आपने क्या किया? सभी प्रशिक्षार्थी को अपने बातों को रखने का मौका दें। सभी के अनुभव को सुन लें। इसमें सभी प्रतिभागी अनुमान लगाते हुए अपनी समझ को साझा करेंगे। प्रशिक्षक यहाँ साझा करने वाली बातों में कौन से नए शब्द आए हैं उसे लिख लें या याद रखें। अब प्रतिभागियों से पूछें। आप सबने सबकी बातों को सुना होगा। उसमें से आपने कौन से नए शब्द सुनें? इसका आधार लेकर शब्द भंडार कैसे हमारे पास इकठ्ठा होता है। इस ओर चर्चा को ले जाएँ।	चित्र (एक या दो पात्र वाले), कहानी
	आओ, कहानी पूरा करें	सुझावात्मक गतिविधि	सभी प्रशिक्षणार्थी बच्चों की भूमिका कर रहे होंगे। प्रशिक्षक प्रतिभागियों को एक कहानी सुनाएँगे। एक बड़ा खुला मैदान था और उस खुले मैदान के आखिर में बहुत सारी घास थी। वे घास बहुत बड़े हो चूके थे। मैदान में कुछ बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। क्रिकेट खेलते समय एक लड़के ने बहुत जोर से छक्का मारा और वह गेंद उस घास में जाकर गिरी। फिर एक बच्चा उस गेंद को लाने घास में गया। उसके बाद वह रोता, चिल्लाता हुआ बाहर आया। सोचो, वहाँ क्या हुआ होगा?	

रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति	चिट्ठी खोलो और अभिनय करो।	20 मिनट	प्रशिक्षक कुछ चिट बना लें। उन चिट में कुछ-कुछ शब्द लिख लें। जैसे- बाजार, ऑफिस, शिक्षक-शिक्षिका, फिल्म के नायक-नायिका आदि। उसे एक कटोरी या बॉक्स में डाल लें। एक प्रतिभागी को उस चिट को उठाने के लिए कहें। उसके बाद वह प्रतिभागी बॉक्स में से उठाई गई चिट के आधार पर मुक अभिनय करेगा। बाकी प्रतिभागी उस अभिनय को देखकर बॉक्स में से निकली वस्तु का अनुमान लगाएँगे। अब दूसरे प्रतिभागी की बारी होगी। इस गतिविधि को प्रशिक्षक रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति के साथ जोड़ते हुए चर्चा को आगे ले जाएँ। **टीप-** इन गतिविधियों को अधिक रोमांचक बनाने हेतु वे पासिंग गेम भी खेल सकते हैं। जैसे- बॉल पास करते जाएँगे और जहाँ गाना बजना बंद हो जाए, वहीं बॉल को पास करना रुक जाएगा। गेंद जिस प्रतिभागी के पास आकर रुकेगी। वह चिट उठाएगा और चिट में लिखे एक्शन, अभिनय को करके दिखाएगा।	बॉक्स, कटोरी, कागज, पेन,
	चित्र मिलाओ और बोलो	सुझावात्मक गतिविधि	-कुछ चित्र-कार्ड लें। -इन कार्डों को तीन या चार टुकड़ों में काट लें। -टुकड़े किए गए कार्डों को एक डिब्बे में डाल दें। -प्रतिभागियों को बारी-बारी से बुलाएँ। -वे उन टुकड़ों को मिलाकर एक पूर्ण चित्र बनाएँ। -प्रतिभागियों से प्राप्त चित्र पर चर्चा करें। प्रतिभागियों को चित्र के बारे में बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करें। सभी को बोलने का अवसर दें।	चित्र कार्ड
पढ़ना	आओ, पढ़ें	20 मिनट	प्रशिक्षक कुछ निरर्थक शब्दों को प्रतिभागियों को दिखाएँ। जैसे- लकीरें। फिर इस पर प्रतिभागियों से चर्चा करें। प्रश्न इस प्रकार से हो सकते हैं- यह क्या लिखा है? इसे पढ़ें। पढ़कर क्या समझ में आ रहा है? आप इसे क्यों पढ़ नहीं पा रहे हैं? फिर..	ब्लैक बोर्ड, मार्कर, चॉक

			प्रशिक्षक कुछ सार्थक शब्दों को प्रतिभागियों को दिखाएँ। जैसे- कोई शब्द हिंदी भाषा का लिखें- हाथी अब उनसे पुनः सवाल करें। यह क्या है? इसे पढ़ें। पढ़कर क्या समझ में आ रहा है? क्या आप इसे पढ़ पाए? हाँ, तो क्यों? प्रथम और दूसरे में लिखे हुए में क्या फर्क है। आपके साथ ऐसा क्यों हुआ? क्या-क्या देख कर हम पढ़ने की कोशिश करते है? जैसे किताब, न्यूज़ पेपर, चित्र आदि। इस पर बातचीत करें।	
ध्वनि जागरूकता का विकास	आओ, कुछ सुनते हैं।	20 मिनट	एक गाने का वीडियो दिखाएँ/ सुनाएँ। जिसका अर्थ समझ में नहीं आता है ऐसे गीत का चयन करें। सभी प्रतिभागियों के साथ इस के बारे में चर्चा करें। गाना कैसा लगा? गाना को सुनकर क्या समझ में आया? गाने में आने वाले पहले वाक्य कहाँ तक है? शब्दों को कैसे तोड़ सकते हैं? फिर एक वीडियो अर्थ वाला दिखाएँ। ऐसे गीत का चयन करें, जिसे सभी जानते है। जिसका अर्थ सभी की समझ में आता हो और उसे उस गाने का अर्थ बताने के लिए कहें। कहे हुए वाक्य को शब्द में तोड़ने के लिए कहें।	गाना, वीडियो, साउंड बॉक्स आदि।
	30 मिनट		भोजन अवकाश	
प्रिंट चेतना	किताबों से बातें	20 मिनट	प्रिंट और लिखित कहानी किताब का इस्तेमाल कर प्रतिभागियों को गोल घेरे में बैठाएँ। कहानी किताब को प्रतिभागियों के सामने रखें और प्रतिभागियों के सामने रख कर पढ़ें। पढ़ते समय किताब कैसे खोलेंगे, कहाँ से शुरू हो रही है? एक वाक्य में कितने शब्द हैं? पैराग्राफ कहाँ से शुरू हो रहा है? आगे वाले पन्ने पर कैसे जाएँ? आदि बातों पर चर्चा करें। सत्र को प्रिंट चेतना से जुड़े कार्य एवं बच्चों में प्रिंट चेतना का विकास किस तरीके से होता है चर्चा को यहाँ तक ले जाएँ।	बिग बुक

	आज की बात	सुझावात्मक गतिविधि	प्रतिभागियों से पूछें कि आज उन्होंने क्या-क्या किया? उनके जवाबों को ब्लैकबोर्ड पर लिखें। और इसको लेकर चर्चा को आगे बढ़ाएँ जो बोला जाता है, उसे लिखा भी जा सकता है और पढ़कर हम कैसे अर्थ भी समझते हैं, इस पर बातचीत करें। टीप- (प्रशिक्षणार्थी को टास्क दें।) एक प्रशिक्षणार्थी को अन्य प्रशिक्षणार्थी के साथ यह करने के लिए कहें।	ब्लैक बोर्ड, मार्कर/ चॉक
शब्द पहचान और चित्र को देखना और अर्थ बताना	चित्र को देखकर पढ़ना	20 मिनट	प्रशिक्षणार्थियों के दो समूह बनाएँ। एक समूह के पास चित्र के साथ शब्द लिखा हुआ रहेगा और समूह एक में जो रहेगा वही चित्र और शब्द कार्ड दूसरे समूह के पास भी रहेगा। जैसे- गमला लिखा रहेगा। उसमें गमले का चित्र भी रहेगा। इसी तरह से घर, मछली, पेड़, पेन आदि भी होंगे। एक समूह का एक सदस्य चित्र और शब्द कार्ड को दिखाएगा। उससे एक जैसा चित्र दूसरा समूह भी दिखाएगा। चित्र मिलान के बाद उस पर बातचीत करें।	विद्या आनंद पुस्तिका से गतिविधि ले सकते है।
लिखना	हवा में लिखो	20 मिनट	कुछ वर्ण के कार्ड बनाएँ। उस कार्ड को एक प्रतिभागी को दें। कार्ड में लिखे वर्ण को प्रतिभागी सामने आकर हवा में लिखकर दिखाएँगे और समाने वाले उस वर्ण को पहचानने का प्रयास करे। ऐसे गतिविधि को करते जाए। प्रशिक्षक गतिविधि के माध्यम से लिखने की प्रक्रिया को समझाने की कोशिश करें। टीप- प्रशिक्षक वर्ण को पीट पर लिखने की गतिविधि भी करा सकते हैं।	कार्ड/कागज, स्केच पेन,
चित्रकारी	आओ, रंग भरें	20 मिनिट	मुक्त चर्चा- चित्र बनाना किसे अच्छा लगता है? आपको यह अच्छा क्यों लगता है? तो चलो, आज कुछ चित्र बनाते हैं। गतिविधि में प्रशिक्षणार्थी को टास्क भी दे सकते हैं या फिर प्रतिभागियों को अपने मन से चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं। या कोई चित्र बनाकर/चित्र	कागज, रंग, कुछ फूल/ स्केचपेन

			दिखाएँ, उसे देखकर प्रतिभागियों को चित्र बनाने के लिए कहें। चित्रकारी के माध्यम से बच्चों में होने वाले लिखने के कौशल को बताने की कोशिश करें। **टीप-** चित्र बनाने के लिए ऊँगलियों की सहायता से कागज के फूल बनाकर रंगों में डुबोकर चित्र बनाने के लिए कहें। चित्र बनाने के लिए स्केचपेन का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।	
मॉडलिंग लेखन		20 मिनट		
किताबों के साथ जुड़ाव	हमारी किताबें	20 मिनट	कुछ किताबें रखें। जैसे- छोटी-बड़ी कहानी/गीत की किताबें या अन्य कोई अभिनय हो सकती हैं। कुछ प्रशिक्षणार्थियों को सामने बुलाएँ और किताबों का चयन करने के लिए कहें। फिर इस पर चर्चा करें कि आपने यह किताब क्यों चुनी? किताबों का चुनाव करते समय आप क्या सोच रहे थे? प्रशिक्षणार्थियों के जवाबों को लेकर चर्चा को आगे बढ़ाए कि कक्षा में तरीके की किताबें होनी चाहिए। बच्चों का इससे कैसे जुड़ाव होता है, जिससे बच्चे पढ़ना-लिखना सीखते हैं।	कहानी, गीत की किताबे
डिकोडिंग	वर्ण पासा	30 मिनट	एक बॉक्स के चार हिस्सों में कुछ वर्ण लिखे होंगे। एक गोले में भी कुछ वर्ण लिखे होंगे। एक प्रतिभागी वर्ण पासे को बॉक्स पर फेकेगा, ऊपर जो वर्ण आएगा। बच्चा गोले में लिखे उसी वर्ण पर छलाँग लगाएगा। ऐसे सभी प्रतिभागियों को यह करने का मौका प्रदान करें।	बॉक्स, चॉक, कागज

मुख्य अपेक्षाएँ:-

बच्चों में भाषा विकास के संबंध में समझ बने।

भाषा विकास से जुड़ी गतिविधियों का चयन करने में समझ बेहतर हो सके।

बच्चों के भाषायी विकास को कौन से कारक प्रभावित करते हैं? इसकी समझ बने।

बच्चों में बुनियादी साक्षरता हासिल हो, इसके लिए शिक्षक की योजना कैसी होनी चाहिए? इसकी समझ बन सके।

भाषा और साक्षरता कौशलों का विकास

भाषा क्या है?

अक्सर जब इस सवाल पर बात होती है की भाषा क्या होती है? तो यह बात सामने आती है कि भाषा हमारे विचारों के आदान प्रदान का माध्यम है। केवल इतना ही मान लेना भाषा का काम को बहुत छोटा करके देखना है। जब हम भाषा के कामों को गहराई से विवेचना करते हैं तो पाते है कि इंसान केवल हाड़-माँस का पुतला भर नहीं है, अपितु विचारों का पुंज भी होता है, जिसका आधार भाषा होती है। भाषा का विचारों के बनने से क्या संबंध है? यह आज जीवंत विमर्श का मुद्दा है। ऐसे अनेक तर्क हैं जो बताते हैं की भाषा विचारों के बनने व व्यवस्थित करने में मददगार हैं। इसके विपक्ष में भी अनेक तर्क है जो बताते हैं की विचार और भाषा अलग-अलग अभिरचनाएँ है। मगर यह बात स्पष्ट है की भाषा और विचार एक दूसरे के आधार हैं।

साहित्य के बिना भाषा का जिक्र अधूरा ही है और इसके बिना भाषा का शिक्षण रसहीन है। जो कुछ भी मुख से बोलते हैं वह सारा मौखिक साहित्य है। दुनिया के सभी समाजों में मौखिक साहित्य की पुरानी और लंबी परंपरा रही है। लिपि के निर्माण से पहले की शब्द संपदा, किस्से, कहानियों, लोककथाओं, लोकगीत, पहेलियों, संवादों, कहावतों, मुहावरों आदि मौखिक साहित्य रूपों में सुरक्षित रही हैं।

बच्चों में मौखिक भाषा का विकास क्यों आवश्यक है?

बच्चों में मौखिक भाषा का विकास केवल बोलने और सुनने तक सीमित नहीं है, बल्कि उससे कहीं अधिक है।पढ़ना और लिखना एक तरह से मौखिक भाषा के पहलुओं तथा सुनकर समझने और बोलकर अपनी बात को कह पाने का ही विस्तारित रूप है। इस प्रकार यदि हम ध्यान से देखें तो मौखिक भाषा पढ़ने और लिखने का आधार है।

मौखिक भाषा के महत्व को हम निम्नांकित बिंदुओं के आधार पर भी समझ सकते हैं-

सुनकर समझना ही पढ़कर समझने का आधार है। छोटे बच्चे बातचीत और चर्चा के माध्यम से ही बहुत सी बातें सीखते हैं। सोचने और तर्क करने के कौशल बातचीत से ही विकसित होते हैं। मौखिक भाषा के जरिए ही बच्चे तर्क-वितर्क, विश्लेषण आदि करना शुरू करते हैं। मौखिक चर्चाओं के दौरान बच्चे न केवल नए शब्द सीखते हैं, बल्कि उन्हें सही संदर्भ में उपयोग करना भी शुरू कर देते हैं। अलग-अलग विषयों पर चर्चा करते हुए दुनिया के बारे में भी नई जानकारी हासिल करते हैं। फिर जैसे-जैसे उनमें शब्द पहचानने का कौशल विकसित होने लगता है, मौखिक भाषा द्वारा बनी समझ की यह बुनियाद शब्द भंडार और उनके सामान्य ज्ञान के साथ पढ़कर समझने की क्षमता को मजबूत करता है।

मौखिक भाषा विकास का सीधा प्रभाव बच्चों के लेखन पर भी पड़ता है। बच्चे जितना अधिक अलग-अलग विषयों पर चर्चाएँ करते हैं, उतना ही उनके लेखन में सुधार होता है। यदि बच्चे की मौखिक भाषा का

विकास नहीं होता है, तो इस बात की बहुत आशंका होती है कि उनके पढ़कर समझने और लेखन द्वारा अभिव्यक्ति की क्षमता भी कमजोर रह सकती है। पढ़ने-लिखने के कौशल मौखिक भाषा की बुनियाद पर ही आधारित होते हैं। ये सभी कौशल एक-दूसरे को समृद्ध करते हैं।

मौखिक भाषा विकास से संबंधित गतिविधि का एक उदाहरण निम्नांकित है-

गतिविधि का नाम-	**मेरे बारे में बताओ**
प्रमुख विकास	**भाषा विकास**
कौशल	रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति
गतिविधि उद्देश्य-	इस खेल में बच्चे अपने परिवेश में मौजूद चीजों के बारे में सोचते हैं और उसके बारे में बताने का प्रयास करते हैं।
आवश्यक सामग्री	कागज, पेंसिल, गेंद, किताब, पत्थर, बीज आदि।
समय अवधि	20 मिनट
प्रक्रिया	• सबसे पहले कुछ वस्तुओं को लेकर एक बॉक्स में डाल दें। जैसे- कागज, पेंसिल, गेंद, किताब, पत्थर,कोई बीज आदि। • शिक्षक जमीन पर एक गोल बड़ा घेरा बनाएँ। • सभी बच्चों को बड़े गोल घेरे में बिठाएँ और बॉक्स को बीच में रख दें। • शिक्षक गतिविधियों के नियम बच्चों से साझा करें। • सभी बच्चे एक-एक करके आते जाएँ और अपनी आँखें बंदकर बॉक्स में से कोई एक वस्तु निकालें। • उसके बाद वे छूकर अनुमान लगाएँ कि उन्होंने बॉक्स में से क्या निकाला है। • फिर उस वस्तु का नाम बताएँ। • आखें खोलकर शिक्षक उस बच्चे को उससे संबंधित अपना कोई अनुभव बताने हेतु प्रोत्साहित करें। • जैसे- यदि किसी बच्चे के हाथ में पत्थर आया, तो वह बोल सकता है कि मैं खेत में बंदरों को पत्थर मार कर भगाता हूँ।
नोट-	➢ यदि कक्षा में इन वस्तुओं को इकट्ठा करने में दिक्कत आ रही हो, तो वस्तुओं के चित्र, कार्ड का भी उपयोग किया जा सकता है। ➢ बच्चों को उनके घर की भाषा में अधिकाधिक वाक्य बोलने के लिए प्रेरित करें। ➢ इस गतिविधि में सभी बच्चों को समान अवसर दें। ➢ विषय वस्तुओ से जुड़े अनुभव को सुनें एवं अनुभव को साझा करने हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करें।

मौखिक भाषा विकास के लिए कुछ गतिविधियाँ-

1. चित्रों पर आधारित चर्चा।
2. बच्चों के अनुभवों पर आधारित चर्चा।
3. कहानी पर आधारित चर्चा।
4. अभिनय और रोल प्ले।
5. साक्षरता और सर्वेक्षण।
6. मौखिक भाषा विकास के खेल।

ऊपर दी गई गतिविधियों में से हम एक गतिविधि पर विस्तार से बात करेंगे।

चित्र पर बातचीत	सामग्री	चित्र कार्ड
	प्रमुख विकास	भाषा विकास
	कौशल	सुनना, बोलना, शब्द भंडार
	अवधि	20 मिनिट
	प्रक्रिया	• चित्र में जुड़े पात्रों के बारे में बच्चों से बात करें। • जैसे- आज आप स्कूल में आते समय क्या-क्या देखा। अगर उस बातचीत में बिल्ली आती है तो उसपर चर्चा को ले जाएँ। • चलो फिर आज हम बिल्ली के बारे में कुछ जानते हैं। • चित्र दिखाकर बच्चों से बातचीत की शुरुवात करें- आपको क्या दिख रहा है? चित्र में कौन-कौन हैं? आपको क्या लगता है की, क्या हो रहा है? आपके साथ ऐसे हुआ है क्या? • बातचीत में बच्चों को अधिक बोलने का मौका दें।
टीप - • बच्चों को अधिक बोलने का मौका दें। • बच्चों के अनुभव को भी उसमें शामिल करें। • सभी बच्चों को अपनी बातों को रखने का मौका दें। • बच्चा अगर बात नहीं कर रहा तो उसे प्रोत्साहित करें।		

1. सुनने की समझ और संवाद कौशल

सुनना क्या है?

सामान्य दृष्टि से विचार करने पर यह लगता है कि सुनने का कार्य हमारा कान करता है। चूँकि हमारा कान विभिन्न ध्वनियों को सुनता है एवं यह संदेश मस्तिष्क तक पहुँचता है। जब हम सुनने की समझ पर बात करते हैं, तब सुनने के साथ-साथ उसका अर्थ ग्रहण करना भी शामिल हो जाता है। इस प्रकार जब सुनने की क्रिया में समझ शामिल हो जाता है। तब सुनी गई ध्वनि पर हमारा मस्तिष्क उसका अर्थ निकालने के लिए कुछ प्रतिबिंब बनाना प्रारंभ कर देता है।

उदाहरण- जैसे हमने **आलू** शब्द को सुना तो हमारे मस्तिष्क में आलू का अर्थ प्रतिबिंबित होने लगता है। आलू का अर्थ तभी प्रतिबिंबित होगा जब हमने आलू को देखा है या आलू को खाया है या किसी भी संदर्भ के माध्यम से आलू के बारे में हमें पूर्व ज्ञान है।

निष्कर्ष- अतः हम सुनने के समझ के लिए हमें केवल काम और मस्तिष्क के प्रयोग की ही नहीं बल्कि अन्य ज्ञानेंद्रियों के प्रयोग की भी आवश्यकता होती है। जब हम चिकना, खुरदरा, ठंडा-गरम आदि से संबंधित शब्द सुनते हैं तब हमारी स्पर्शेन्द्रीय संबंधित अनुभव को मस्तिष्क प्रतिबिंबित करता है। गंध संबंधी शब्दों को सुनने पर ज्ञानेंद्रियों संबंधी अनुभवों को मस्तिष्क प्रतिबंधित करता है। सुनने की समझ में हमारी प्रत्येक ज्ञानेंद्रियों का उपयोग होता है। जिन ध्वनियों का अर्थ ग्रहण हमारा मस्तिष्क नहीं करता उस प्रकार की ध्वनि मात्र कोलाहल के सिवाय कुछ भी नहीं होता है। उस प्रकार की ध्वनियों को हमारा मस्तिष्क स्मृति पटल पर संकलित नहीं करता। चूँकि ये ध्वनियाँ हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण नहीं होते हैं। इसी कारण ऐसी ध्वनियों की ओर हमारा ध्यान केंद्रित नहीं होता।

सुनने की समझ होना क्यों आवश्यक है?

जब बच्चा अपने आसपास के लोगों को बातचीत करते हुए देखता है। बातचीत के साथ-साथ कुछ बनाते हुए देखता है। तब उसे यह समझ में आने लगता है कि बातचीत नई-नई चीजें बनाने के बीच गहरा संबंध होता है। इस प्रकार बच्चों को बातचीत की महत्ता समझ में आने लगती है। वह लोगों की बातचीत को ध्यान देना प्रारंभ कर देता है। इस तरह बच्चा सुनकर समझने की ओर आगे बढ़ता है। धीरे-धीरे शब्द और वाक्य की समझ प्रारंभ हो जाती है। अब बच्चा बातचीत को सुनते हुए शब्दों को याद रखते हुए चलता है उन शब्दों के संयोजन से वाक्यों की समझ बनती है।

बच्चों में सुनने की समझ कैसे विकसित करें?

अतः प्रत्येक ज्ञानेंद्रियों को ध्यान में रखकर तथा विभिन्न खेलों/गतिविधियों के माध्यम से बातचीत का अधिक से अधिक अवसर देकर बच्चों में सुनने की समझ विकसित करना चाहिए।

2.शब्द भंडार/शब्दावली विकास

पढ़ने-लिखने और बोलने सभी भाषायी प्रयोगों में एक महत्वपूर्ण घटक बच्चों के शब्द भंडार का है। समृद्ध शब्द भंडार के अभाव में, बाकी सारी क्षमताएँ होने के बावजूद बेहतरीन प्रयोग संभव नहीं। हम भाषा

शिक्षण के इस पक्ष पर बात करेंगे। किसी भी शब्द को पूरी तरह जानने समझने के लिए उसे केवल एक बार सुनना या पढ़ना काफी नहीं है एक ही शब्द को जब हम कई बार अलग-अलग संदर्भों में सुनते या पढ़ते हैं, तभी वहाँ शब्द हमें याद होता है और हम उसका उपयोग कर पाते हैं। पूर्ण शब्द ज्ञान के लिए यह जानना जरूरी है कि किस प्रकार अलग-अलग संदर्भों में एक ही शब्द का उपयोग किया जा सकता है और हर संदर्भ में उसका अर्थ भी अलग होता है।

शब्द भंडार क्यों?

विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी लेख को समझने के लिए यह आवश्यक है कि पढ़ने वाले को उस में दिए गए 90% शब्द पहले से पता हो। ऐसा होने पर वह बाकी के अपरिचित शब्दों का अनुमान लगाकर लेख को समझ सकते हैं। परंतु अगर लगभग 10% से अधिक शब्द समझना आते हो तो उस लेख को पढ़कर समझने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
इसे एक छोटे उदाहरण से समझते हैं:-
यहाँ दिए अपरिचित(निरर्थक) शब्दों के अर्थ को अनुमान लगाने की कोशिश करें।

जंगल के सभी छोटे और बड़े जीव-जंतु भी आज बिल्कुल **टकल**थे। इस **हटकले** के बीच अचानक राजा के **तामने**की **तकस** ने सबका ध्यान **चुम्बुक** लिया।

यहाँ दिए एक अपरिचित (निरर्थक) शब्द के अर्थ का अनुमान लगाने की कोशिश कीजिए।

जंगल के सभी छोटे और बड़े जीव-जंतु भी आज बिल्कुल **चुप** थे। इस **सन्नाटे** के बीच अचानक राजा के **बोलने** की **तरीके** ने सबका ध्यान खींच लिया।

शायद पहले के वाक्यों में सभी शब्दों का अनुमान लगाना संभव नहीं हुआ होगा। इसके विपरीत, बाद के वाक्यों में आए एक अपरिचित शब्द के अर्थ का अनुमान शायद आपने लगा लिया होगा।
(इससे यह साफ पता चलता है कि अगर अधिक शब्द ऐसे हो जिनका अर्थ पाठक को ना पता हो, तो शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाना और पढ़कर समझना संभव नहीं।)
बच्चों का शब्द भंडार विकसित किए बिना यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे लिखित सामग्री खुद पढ़कर समझ लेंगे।

हर बच्चे का है अधिकार ,

शिक्षक को हो उससे प्यार।

बच्चों का शब्द भंडार बढ़ाने के लिए क्या करें?

समृद्ध भाषा अनुभव

- अधिकतर बच्चे स्कूल में बिना शिक्षक द्वारा सिखाए, अनायास ही, तकरीबन हजार, दो हजार शब्द प्रत्येक साल सीखते हैं।
- वे अनायास अधिक से अधिक शब्द सीखें, इसके लिए उनके साथ ही सारी मौखिक चर्चाएँ करें। इन चर्चाओं के दौरान, नए-नए शब्दों का उपयोग करें और बच्चों को भी उन शब्दों का उपयोग करने के लिए प्रेरित करें।
- कक्षा में एक 'शब्द दीवार' या 'शब्द चार्ट' तैयार करें। बच्चों के सामने जो नए शब्द आ रहे हैं, उन्हें शब्द दीवार पर लिखें या बच्चों को लिखने के लिए प्रेरित करें। इन शब्दों पर नियमित रूप से चर्चा करें या गतिविधियाँ करवाएँ।
- हमने देखा कि बच्चे अनायास ही बहुत सारे नए शब्द सीख लेते हैं, परंतु ऐसे भी बहुत-से शब्द है जो साधारण तौर पर सुनने में नहीं आते या पढ़ने पर उनका अर्थ समझ नहीं आता। ऐसे में शब्दों का स्पष्ट शिक्षण ही सीखने में सहायक होता है।

बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से नए शब्द सिखाने के लिए निम्न क्रम के अनुसार कार्य करवाएँ-

- सबसे पहले पाठ में आए ऐसे शब्द छाँट लें जो आपके अनुसार बच्चों के लिए अपरिचित हैं।
- इसके बाद इन शब्दों में ऐसे शब्द छाँट लें जो आप बच्चों को प्रत्यक्ष रुप से सिखाएंगे।
- प्रत्यक्ष शिक्षण के लिए शब्द चुन लेने के बाद शब्द का अर्थ समझाने के लिए एक ऐसी व्याख्या दें जो स्पष्ट, सरल, बच्चों के पूर्व ज्ञान से मेल खाती हुई और अर्थ समझने में सहायक हो। शब्दकोश की कठिन व्याख्या देने से बचें।
- बच्चों के सामने उस शब्द का उपयोग अलग -अलग संदर्भ में करें।
- बच्चों को शब्द प्रयोग करने के अवसर दें।

शब्दों से कहानी

सत्र का नाम	**चलो कहानी बनाएँ**
आवश्यक सामग्री	जलेबी, चिड़िया, घर, दाना।
समय अवधि	20 मिनट
उद्देश्य	इस खेल में बच्चे दिए गए शब्दों का उपयोग कर एक नई कहानी बनाने का प्रयास करते हैं।
प्रमुख विकास	भाषा विकास
कौशल	शब्द भंडार, सुनना, बोलना, अनुमान लगाना।
प्रक्रिया	सबसे पहले शिक्षक बच्चों की संख्या अनुसार छोटे-छोटे समूह बनाएँ। इस सत्र के नियम बच्चों से साझा करें। बाँटे गए समूह को कोई तीन से चार शब्द दें। समूह को शब्द देते समय ध्यान रखें की सभी समूह के शब्द एक ही हो। बच्चों को उन शब्दों से अपनी कोई कहानी बनाने के लिए कहें।

	उदाहरण के लिए जलेबी, चिड़िया, घर,दाना बच्चों को कहानी बनाने के लिए कम से कम 10 मिनट का समय दें। बच्चों के समूह में जानकर शिक्षक बच्चों को कहानी बनाने के लिए मदद करें। बच्चों को कहानी बनाते समय उनके अनुभव को सुने और उसे कहानी में सुनाने के लिए मदद करें।
टीप	कहानी बनाने के बाद हर समूह से बच्चों को सामने आकर हाव- भाव के साथ कहानी सुनाने को प्रोत्साहित करें। कहानी में सभी बच्चों को शामिल करें। कहानी में शामिल नहीं होने वाले बच्चों को प्रोत्साहित करें। बच्चों के साथ कहानी बनाने के लिए मदद करें। संभव होने से बच्चों को पात्र दे सकते हैं। जैसे - मै जलेबी, मैं चिड़िया हूँ, मैं घर हूँ आदि।

चित्र को देखकर अर्थ का अनुमान लगाना

कई बार किसी अपरिचित शब्द के अर्थ का अनुमान चित्र देखकर भी लगाया जा सकता है। उदाहरण- मान लीजिए किसी कहानी में बंदर तराज़ू से कुछ समान को तौल रहा है। इस कहानी में 'तराज़ू' और 'तौल' शब्द बच्चों के लिए नए हो सकते हैं। यह चित्र इन नए शब्दों को समझने के लिए बहुत सहायक होगी, जिसमें बंदर के हाथ में साफ-साफ तराज़ू दिख रहा है।

शिक्षक संस्कार सिखलाएँ,

बच्चे आचरण कर दिखलाएँ।

कविता क्या है?

दुनिया का कोई कोना हो, उस कोने में अगर बच्चों की अपनी दुनिया है, तो कविता उसका एक अभिन्न हिस्सा होगा। बच्चे कविताओं से बहुत पहले ही परिचित होते हैं। लेकिन फिर क्या कारण है की बहुत ही प्यारी और अपनी सी लगने वाली कविताएँ स्कूल की जिंदगी में आते ही कष्टकर और अनाकर्षक लगने लगती हैं? कविता से बच्चों को जोड़ने एवं आकर्षक करने के लिए शिक्षक क्या कर सकते हैं।

कविताएँ कैसी हों?

यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न हो जाता है की अच्छी कविताओं का चुनाव कैसे करें? बच्चों में पढ़ने के कौशल के विकास के लिए एकदम अलग किस्म की कविताएँ चाहिए। ऐसी कविताएँ जिनमें कोई कहानी हों, बच्चे हों, उनका परिवेश हों, उनके सुख-दु:ख हों, उनके खेल हों, और अपनी भाषा हों।

कविताएँ अगर किसी घटना पर आधारित होगी तो बच्चों को कविता मे चल रही स्थिति को दोगुना मजा दे सकती है। पढ़ना-लिखना तब कुछ आसान हो जाता है जब पढे जा रहे साहित्य से जुड़ पाएँ। अर्थ निर्माण तक पहुँच कर ही तो पढ़ना सीखने का सफर पूरा होता है और यह तब आसान हो जाता है, जब पढ़ी जा रही कविता की विषयवस्तु बच्चे के अपने अनुभवों के आस पास होती है। अंत पढ़ना सीखने के शुरुआती दौर में बच्चों के लिए साहित्य मददगार होता है। जो उनके परिवेश से सीधे जुड़ा हो।

उदाहरण के लिए इस कविता को देखते हैं-

छोटा सा चंदू

मेरा छोटा सा चंदू कहाँ गया रे,
चंदू गया बाजार में लेने को आलू,
आलू-वालू कुछ ना मिला पीछे पड़ा भालू।
रे मम् मा, रे मम् मा, रे म् मा रे
रे गग् गा, रे गग् गा, रे गग् गा रे।।
मेरा छोटा सा चंदू कहाँ गया रे,
चंदू गया बाजार में लेने को गॉगल
गॉगल-वॉगल कुछ ना मिला पीछे पड़ा पागल।
रे मम् मा, रे मम् मा, रे म् मा रे
रे गग् गा, रे गग् गा, रे गग् गा रे।।

यह कविता हमारे जीवन के एक बहुत आम अनुभव बाजार के बारे में है। ऐसी कविताएँ हमें बच्चों को अपने जीवन में प्रवेश करने के कई मौके उपलब्ध करती है। शायद ही कोई बच्चा होगा जिसके पास कोई ना कोई बाजार का किस्सा न हो। यह कविता झट से उस अनुभव को जगा देगी और फिर भाषा अपने तमाम पहलुओं के साथ काम में लग जाएगी। बच्चे इस कविता को पढ़ते हुए एक पैर अपने अनुभव पर रखते हुए अपना दूसरा पैर कल्पना की ओर बढ़ा देंगे। रे मम् मा, रे मम् मा, रे म् मा रे। रे गग् गा, रे गग् गा, रे गग् गा रे....... यह बच्चों का किसी बालक को बताने का तरीका होता है। वे अक्सर ऐसे प्रयोग करते हैं। बाजार जाकर अपनी पसंद की चीजें न मिलने का अनुभव ज्यादातर बच्चों के पास है। भालू, गॉगल यह बेहद आनंददाई

होगी। चंदू जब बाजार में आलू लाने गया होगा तब उसे आलू नहीं मिला और भालू पीछे पड़ गया तब उसे कैसे लगा होगा? यह कविता चंदू के बाजार जाने के अनुभव बताते हैं।

कक्षा में कविता पर काम कैसे करें?

कविता भाषा की सबसे कलात्मक अभिव्यक्ति है। कविता साहित्य की सबसे पुरानी विधा है और बच्चे की भाषिक क्षमता बढ़ाने के लिए कविताओं से उसकी दोस्ती बनी रहे यह बहुत जरूरी है। कविता के मूल में संवेदना है, राग तत्व है। शब्दों से खेलना, उनसे मेलजोल बढ़ाना, शब्दों के भीतर सदियों से छिपे अर्थ की परतों को भिन्न-भिन्न रूपों में समझना, यह सब कविता की दुनिया में प्रवेश कराता है। कविता को कक्षा में बच्चों के सामने प्रस्तुत कैसे करें? ताकि वे उनका उतना ही मजा लें, जितना की पहले भी लेते रहे हैं।

आमतौर पर शिक्षक कविता की शुरुआत अक्षर वाचन से करते हैं और बच्चों से अपेक्षा करते हैं की वह भी उसी तरह से पढ़ के सुनाएँ। यही से आरंभ हो जाती है कविता के प्रति अरुचि की यात्रा।

कविताओं के बारे में बात करें और उनके प्रति रुचि पैदा करें। कविता के साथ बने चित्रों और उनके मौजूद बारीक संकेतों की ओर ध्यान दिलाएँ और कविता की विषयवस्तु, पात्रों, घटनाओं आदि के बारे में अनुमान लगाने को कहें।

गीत/कविता रचनात्मक काम करने के लिए शिक्षक की योजना में विविधता होना जरूरी है। शिक्षक बच्चों को हावभाव के साथ गीत कविताएँ सुनाएँ। कविता बच्चों को दो बार करके सुनाएँ एवं बच्चों को करने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चे जिनकी कविताओं पर सुनने-सुनाने का अभ्यास कर रहे हों, उनके पोस्टर बनाकर कक्षा में लगाएँ। जब बच्चे द्वारा गाए जा रहे गीतों का लिखित रूप कक्षा में प्रदर्शित करेंगे तो उन्हे स्वतः ही पढ़ने के प्रयास शुरू कर देंगे। इससे बच्चों के पढ़ने-लिखने और सीखने की गति बढ़ेगी।

शिक्षक लगभग दस ऐसी कविताएँ चुने जो बेहद सरल हों और जिनमें आनंद बढ़ाए जाने की भरपूर संभावना हो। इस प्रकार की कुछ कविताओं के बने पोस्टर उपयोग में लाए जा सकते हैं या फिर बच्चों के साथ मिलकर उनका निर्माण भी किया जा सकता है।

कुछ कविताओं को लिखकर और उन्हें कविता के संदर्भों से जुड़े चित्रों से सजाकर भी पोस्टर के रूप में कक्षा की दीवारों पर चिपकाया जा सकता है। इसके साथ ही साथ हम आरंभिक कक्षाओं के लिए कुछ ऐसी कविताओं का चयन कर सकते हैं, जिनमें कल्पना करने और आगे बढ़ने के अवसर होते हैं।

कितना मजा आता

कितना मजा आता अगर दुनिया ऐसी-वैसी होती,

झोंपड़ी झरनों में बहती, झोंपड़ी झरनों में बहती।

घोड़ा जहाँ पंख बिना चाँद तारों पर भी जाता,

मेरी कटी हुई पतंग संग वो अपने साथ लाता।
कितना मजा आता।
कितना मजा आता अगर दुनिया ऐसी-वैसी होती,
घोंसलों में होटल चलते,
उल्लू जहाँ पेप्सी पीते,
चबक-चबक बच्चे करते,
ठुमक-ठुमक शेर चलता,
कितना मजा आता।
कितना मजा आता अगर दुनिया ऐसी-वैसी होती,
झोंपड़ी झरनों में बहती, झोंपड़ी झरनों में बहती।

उपरोक्त कविता को देखे तो इसके साथ ही साथ अनुमान नजर आता है। ऐसी कविताएँ बच्चों को अनुमान लगाने और कल्पना करने के विविध रोचक मौके प्रदान करते हैं। इस प्रकार की कविताओं के द्वारा बच्चों को स्वयं से लिखने पढ़ने की ओर लाया जाता सकता है।

टीप- यह काम अधिक प्रभावी हो जाएगा यदि बच्चों की स्थानीय भाषा के गीत कविताओं के साथ इसकी शुरुआत की जा सके।

कविता पर कार्य प्रक्रिया

मौखिक भाषा विकास से संबंधित कार्य-

1. कविता को हावभाव के साथ गाया जाए। हाव भाव के साथ गाने से बच्चों को कविता के अर्थ तक पहुँचने में मदद मिलती है।
2. कविता पर बच्चों के साथ चर्चा और प्रश्न किया जाए। जैसे- कविता किसके बारे में है?
3. कविता में बच्चे का नाम क्या है?
4. कविता में कौन-कौन हैं?
5. आप आते समय घर से क्या-क्या लेकर आते हैं।
6. आप को खुशी कब-कब होती है?

लिखित भाषा विकास(पढ़ने-लिखने) से संबंधित कार्य-

1. बच्चों को इसके आधार पर अपने मनपसंद चित्र बनाने का मौका दें।
2. कविता में दिए गए चित्र को देखकर बच्चों को चित्रकारी करने का मौका दें।
3. कविता में शुरू में आए अक्षर से परिचित करवाकर उनके लिखने के लिए कहें।
4. चित्र के माध्यम से बच्चों को अक्षर से परिचित करके उन्हें लिखने का मौका प्रदान करें।

विद्या आनंद कार्यपुस्तिका में दी गई कुछ कविताएँ-

कविताएँ

1.कौआ बोला काँव-काँव

2.जंगल में मेला

3.आओ, कविता दोहराएँ

4.हँसता-रोता बंदर

5.'अ' अनार है ताजा-ताजा

6. कविता सुनकर चित्रों पर बातचीत

7.अलग-अलग जानवरों के नाम जोड़ते हुए कविता को आगे बढ़ाओ

8. गमला

कुछ अन्य कविताएँ

कुछ चित्रयुक्त कविताएँ

- **कहानी क्या है?**

बच्चों को कहानियाँ खास प्रिय होती हैं, क्योंकि इनके जरिए उन्हें अपरिचित चीजों के बारे में जानने-सुनने को मिलता है और साथ ही कल्पना की उड़ान भरने का मौका भी। कहानी को रोचक तरीके से सुनाना भी एक

कला है, जो पुराने समय की मौखिक परंपरा से चली आई है। जितना ज्यादा कहानी को जीवंत बनाया जाए, जितना ज्यादा उसमें भाव-भंगिमाओं का मिश्रण हो, जितना ज्यादा आवाज और चेहरे में उतार-चढ़ाव हो, कहानी उतनी ही ज्यादा श्रोता को अपनी ओर खींचती है। अच्छी कहानी सुनाने के लिए बच्चे के सामने सजीव वर्णन होना चाहिए। जिससे उनके मन में कल्पना के चित्र बनने लगे, उनमें रंग और भाव भरे रूप आकार उभरने लगे और बच्चे कहानी में खो जाएँ। कहानी सुनाते समय उसे जीना और महसूस करना पड़ता है ,ताकि बच्चे भी उसे जी सकें और महसूस कर सकें। अगर पात्रों की आवाजें बनाकर बोली जाए, चलती गाड़ियों, ढोल- नगाड़ों, पशुओं के बोलने, दौड़ने-भागने या हँसने-रोने की आवाजे निकाली जाए तो कहानी एक चलचित्र का काम करती हैं। इनसे श्रोता पूरी तरह जुड़ जाते हैं।

कहानी पर चर्चा के लिए प्रश्न कैसे हों?

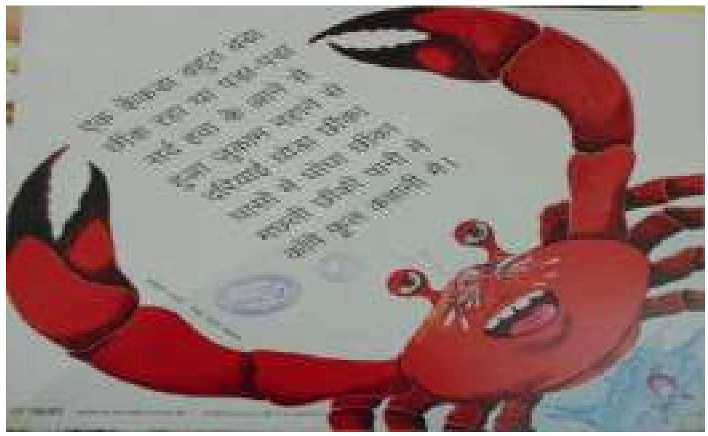

कहानी -"बिल्ली के बच्चे "

बिल्ली के तीन बच्चे थे। एक काला, एक गोरा और एक सफेद। उन्होंने एक चूहा देखा और वह उसके पीछे भागे। चूहा उचटकर आटे के डिब्बे में कूद गया। एक-एक करके वे तीनों भी डिब्बे में कूद गए लेकिन तब तक चूहा निकल भागा। तीनों बच्चे मायूस होकर डिब्बे से बाहर निकले। तीनों का रंग सफेद हो गया था। बिल्ली के तीन बच्चों को एक मेंढक दिखा। वे उसे पकड़ने दौड़े। मेंढक धुंए के पाइप में घुस गया। वे तीनों भी पीछे-पीछे पाइप में घुस गए। मेंढक पाइप के दूसरे सिरे से बाहर निकला। उसके पीछे निकले बिल्ली के तीनो काले बच्चे। बिल्ली के काले बच्चों ने तालाब में एक मछली देखी... और उन्होंने तालाब में छलांग लगा दी। मछली तैर कर दूर निकल गई। तीनों धूलकर तालाब से बाहर निकले ...और चल दिए वापस घर। बिल्ली के तीन बच्चे। एक काला, एक गोरा और एक सफेद।

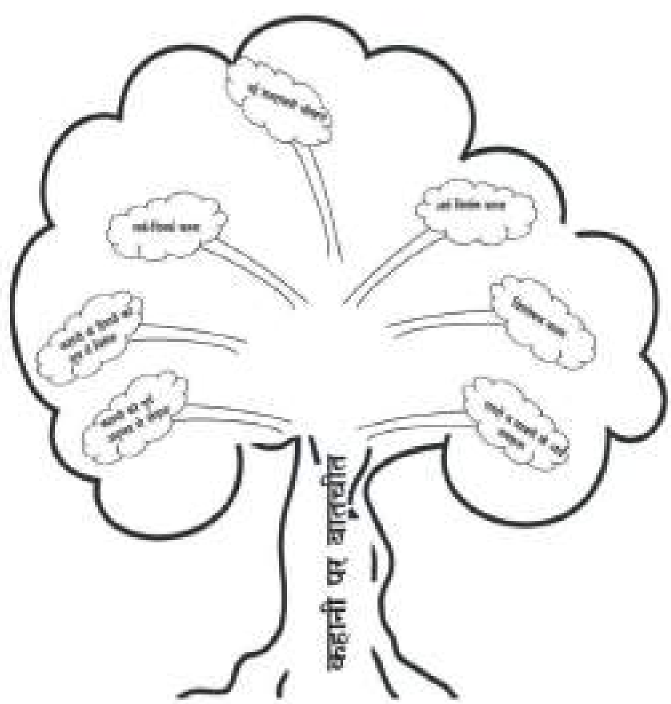

इस कहानी पर बच्चों के समझ के प्रश्न तैयार करेंगे -

शाब्दिक स्तर के प्रश्न

1. बिल्ली के बच्चों का रंग कैसा था?

2. बिल्ली के बच्चे किस-किस के पीछे दौड़े?

3. जब चूहा आटे के डिब्बे में कूद गया तो बिल्ली के बच्चों ने क्या किया?

निष्कर्षात्मक स्तर के प्रश्न-

1.बिल्ली के बच्चे कहानी को अपने शब्दों में सुनाओ?

2.कहानी के बीच में रुककर पूछना कि कहानी में अब तक क्या हुआ?

3.जब बिल्ली के बच्चे चूहे को नहीं पकड़ते हैं तो उन्हें कैसा लगा होगा ?वह चूहे के पीछे क्यों भागे?

पाठ से परे या प्रयोगात्मक स्तर के प्रश्न -

1.क्या बिल्ली के बच्चों ने मछली के पीछे तालाब में कूदकर सही किया?

2.अगर बिल्ली के बच्चों को कोई कुत्ता दिखाई देता तो भी क्या वे उसे पकड़ने की कोशिश करते? ऐसा करने पर क्या-क्या हो सकता है?

3.क्या होता यदि कहानी में बिल्ली के बच्चों की जगह कोई बड़ी सी बेवकूफ बिल्ली होती?

नोट- ध्यान दें शाब्दिक स्तर के प्रश्नों को बंद छोर वाले प्रश्न और निष्कर्षात्मक स्तर व पाठ से परे या प्रयोगात्मक स्तर के प्रश्नों को खुले छोर वाले प्रश्न कहा जाता है। खुले छोर वाले प्रश्नों का जवाब देने के लिए बच्चों को सोचना पड़ता है। अपने पूर्व ज्ञान व अनुभव को जोड़ते हुए अपने शब्दों में पूरे वाक्य बनाकर उत्तर देना होता है।

कहानियाँ क्यों आवश्यक हैं?

हमारे आम जीवन में सदियों से रची बसी हुई कहानियाँ होती हैं। इन्हें हम अपने बड़े-बूढ़ों से बचपन से ही सुने रहे हैं। कहानी के बारे में यह भी कहा जाता है की बचपन से शुरुआती वर्षों में बच्चों को अपने परिवेश की महक व सोच, कल्पना की उड़ान देने के लिए इनका उपयोग जरूरी है। बच्चों के भाषा विकास से संदर्भ में इन कथाओं की उपयोगिता महत्वपूर्ण है जो बच्चों के भाषा विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाते हैं। कहानियाँ ना केवल बच्चों से जुड़ाव पैदा करती है, बल्कि वह बच्चों को कहानी के ढांचे से भी परिचित कराती है। जैसे- कहानी का घटनाक्रम, विषय, मुख्य पात्र, कहानी में समस्या और उसका समाधान आदि अलग-अलग पहलुओं पर सोचते हैं, जिससे उनका नजरिया विस्तारित होता है। बच्चों के अंदर एक अच्छे श्रोता होने के कौशल को विकसित करने की मदद मिलती है जो न सिर्फ कहानी को ध्यान से सुनते हैं बल्कि उसके साथ-साथ अपने पूर्व ज्ञान का इस्तेमाल करते हैं, सुनी हुई बातों को गहराई से जाते हैं तथा अंदाजा लगाते हैं। कहानियाँ बच्चों के लिए दुनिया को समझने का एक माध्यम बन जाती है। कहानी सुनना शब्दावली के विस्तार और लिखित भाषा की जटिलताओं को समझने में मदद करता है।

कहानियाँ कैसी हों-

कहानी कहने का प्रमुख उद्देश्य आनंद लेना है मगर यहाँ कहानियों का इस्तेमाल भाषा शिक्षण के लिए भी करने की बात कर रहे हैं। बच्चों के लिए कहानी चुनते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि क्या यह कहानी बच्चों को आनंद देगी और क्या यह कहानी बच्चों को पढ़ने-लिखने में मदद करेंगी। आरंभिक स्तर पर हमें छोटी-छोटी ऐसी कहानियाँ लेनी चाहिए जो प्रकृति से संबंधित हो सकती हैं। बच्चों के दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ हो।

स्कूल रेडीनेस विद्या आनंद कार्यपुस्तिका में दी गई कुछ कहानियों की सूची इस प्रकार है-

1.चित्रों पर बातचीत

2.चित्रकला

3.भालू चला आम बेचने

कुछ अन्य कहानियाँ

कुछ चित्रयुक्त कहानियाँ

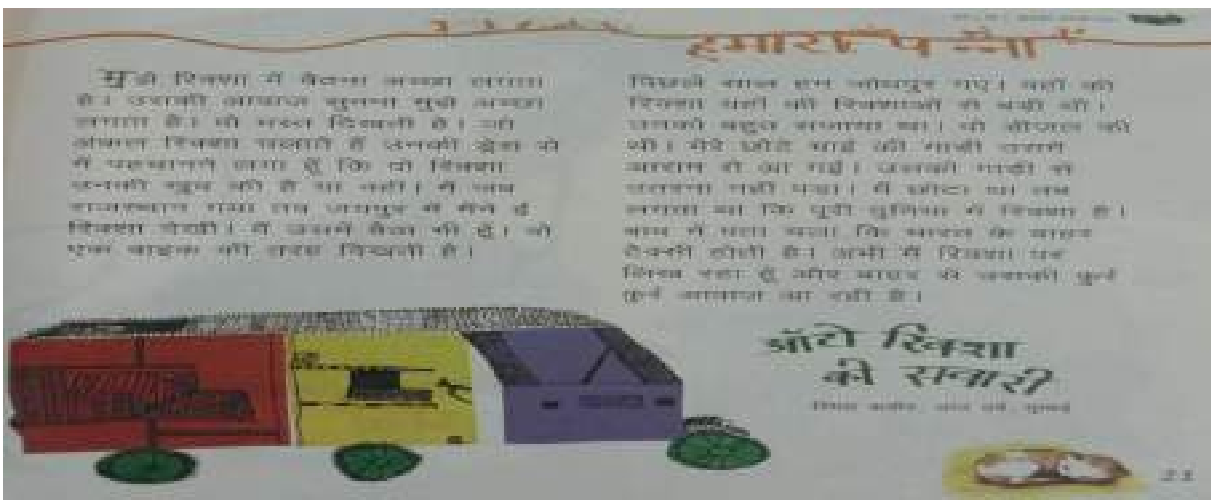

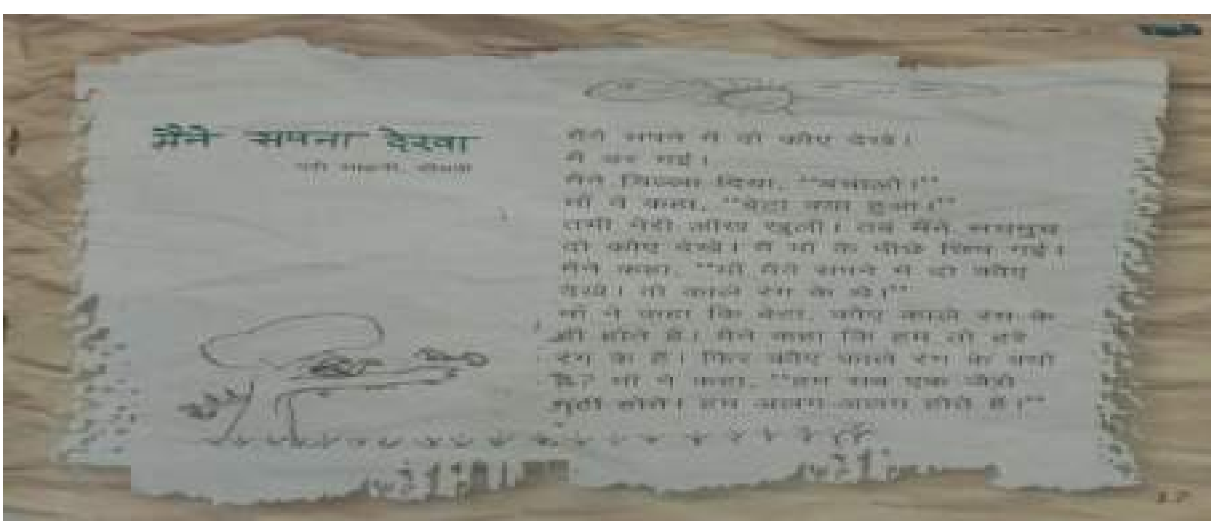

3.**रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति-**

पठन से पूर्व

पढ़ना क्या है?

पढ़ना एक सतत प्रक्रिया है, जो मौखिक भाषा कौशल के विकास से आरंभ होता है और समय के साथ, स्वतंत्र पढ़ने के लिए, मौखिक भाषा- बोलने और सुनने की क्षमता-महत्वपूर्ण है तथा पढ़ने की सफलता के लिए नींव है। प्रत्येक संस्कृति में, बच्चे घर की भाषा सीखते हैं, क्योंकि वे निरीक्षण करते हैं, सुनते हैं, बोलते हैं और बातचीत करते हैं। उनके वातावरण में वयस्कों और बच्चों के साथ मौखिक भाषा विकसित करना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। लिखित भाषा के मुद्रित प्रतीक, यह स्कूल के पहले कुछ वर्षों का एक आवश्यक कार्य है।

पठन क्यों आवश्यक है?

जब बच्चे पूर्वस्कूली वर्षों में होते हैं, तो पढ़ना, लिखना शुरू हो जाता है। बच्चे किताबों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, सड़क पर लगे होर्डिंग्स, टी.वी., पेपर बैग्स आदि में पत्र, संख्या और चित्र देखते हैं। ऐसे अनुभव जिनमें बच्चों को चित्रों और अक्षरों के अर्थ की व्याख्या करने का अवसर मिलता है, उन्हें अक्षरों से परिचित होने और वर्ण भेद करने में मदद मिलती है। बच्चों के अनुभव उन्हें पहचानने योग्य सामग्री के एक कोष को जमा करने में सक्षम बनाते हैं जो कि लिखे या मुद्रित होने की भावना बनाने में मदद करता है।

पूर्व पढ़ना (प्रारंभिक साक्षरता) बच्चों को पढ़ना क्या है बताने से पहले वे वास्तव में पढ़ सकते हैं। पूर्व-पढ़ना (प्रारंभिक साक्षरता) कौशल वह है जिन्हें बच्चे को पढ़ने से पहले सीखने की आवश्यकता होती है। शोध से पता चलता है कि बच्चे स्कूल शुरू होने से पहले पढ़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।

पढ़ना कैसे सीखते हैं?

- आरंभिक, पूर्व-पढ़ने के चरण में, बच्चे वास्तव में पढ़ने के बिना पढ़ने की प्रक्रिया की नकल करते हैं। वे समझने लगते हैं कि पढ़ना क्या है और यह कैसे काम करता है। वे सीखते हैं कि जो बोला जा सकता है, उसे किसी और के द्वारा लिखा और पढ़ा जा सकता है।
- शुरुआती पढ़ने के चरण में, बच्चे प्रिंट के विवरण पर ध्यान देना सीखते हैं और जिस तरह से मुद्रित पत्र और शब्द मौखिक भाषा की ध्वनियों और शब्दों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्हें यह समझने की आवश्यकता है कि अक्षरों पर भाषा मानचित्र की आवाज़ कैसी होती है। इस चरण के माध्यम से बच्चों की मदद करने के लिए, शिक्षकों को यह समझने की आवश्यकता है कि प्रतीक प्रणाली के बारे में क्या जटिल है और इसे इस तरह से प्रस्तुत करना है जो सरल हो।
- प्रवाह की अवस्था में, बच्चे अधिक कौशल और सहजता के साथ शब्दों की पहचान करने में सक्षम होते हैं और बेहतर समझ के साथ आगे पढ़ते हैं। उन्हें उन पुस्तकों को पढ़ने के लिए कई अवसरों की आवश्यकता होती है, जो शब्दों को जल्दी और बिना प्रयास के पढ़ने के लिए अनुमानित, प्रतिरूपित और दिलचस्प होते हैं। व्यापक पठन अभ्यास के साथ, वे प्रवाह का एक स्तर विकसित करते हैं जो उन्हें आनंद देता है और समझ बढ़ाने के साथ पढ़ने में सक्षम बनाता है।

प्रारंभिक वर्षों में निर्देश का केंद्र पढ़ना सीखना है, पढ़ना सीखना कई कारकों पर निर्भर करेगा, जिसमें पूर्वस्कूली वर्षों में समृद्ध भाषा के वातावरण के संपर्क में, कहानी कहने के लिए बहुत कुछ, बातचीत, किताबें, और पूछने (प्रश्न करने) और उत्तर देने के लिए प्रोत्साहन शामिल है। बच्चों को जब उद्देश्यपूर्ण मौखिक भाषा और

प्रारंभिक प्रिंट गतिविधियों में संलग्न होने का अवसर प्रदान किया जाता है तब बच्चों को एक निश्चित लाभ मिलता है।

प्रिंट के बारे में अवधारणा- शुरुआती उम्र में प्रिंट अवधारणा सीखना सकारात्मक रूप से बच्चों की भाषा के विकास और पाठकों और लेखकों के रूप में विकास को प्रभावित करता है। प्रिंट अवधारणाओं के प्रति बच्चों की संवेदनशीलता और ज्ञान भविष्य में साक्षरता उपलब्धि में महत्वपूर्ण है और पढ़ने की सफलता की दिशा में पहला कदम है।

प्रिंट-चेतना पढ़ना और लिखना सीखने की प्रक्रिया की शुरुआत है जो बचपन के वर्षों से आरंभ होती है। बच्चों को अर्थ निर्माण की बढ़ती क्षमता तथा प्रिंट को शिक्षकों द्वारा आकस्मिक साक्षरता के रूप में देखा जाता है।

जब बच्चे पहली बार प्रिंट वातावरण देखते हैं, तो उन्हें यह पता नहीं होता है कि पृष्ठ पर प्रतीक बोली जाने वाली भाषा का प्रतिनिधित्व करते हैं या वे अर्थ व्यक्त करते हैं। प्रिंट के बारे में अवधारणाएँ इस बात की जागरूकता को दर्शाती हैं कि प्रिंट में भाषा को कैसे व्यक्त किया जाता है।

जैसे-जैसे बच्चे प्रिंट अवधारणाओं के बारे में सीख रहे हैं, वे जल्दी पढ़ने के विकास की नींव तैयार कर करते हैं। प्रिंट जागरूकता वाले बच्चे यह समझना शुरू कर देंगे कि लिखित भाषा मौखिक भाषा से कैसे जुड़ी है। मौखिक भाषा कौशल कोड-संबंधित कौशल से जुड़े होते हैं जो शब्द पढ़ने को विकसित करने में मदद करते हैं और वे अधिक उन्नत के विकास के लिए आधार भी प्रदान करते हैं। प्रिंट जागरूकता बच्चों की मौखिक और लिखित संचार दोनों के घटकों के रूप में पहचानने की क्षमता का समर्थन करती है।

चित्र पठन साक्षरता के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण को दर्शाता है, बच्चों के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि प्रिंट को पढ़ा जा सकता है और कहानी कह सकता है। प्रिंट जागरूकता विकसित करने में एक बच्चा यह समझना शुरू कर देता है कि प्रिंट कैसा दिखता है, यह कैसे काम करता है और यह तथ्य कि प्रिंट का कोई मतलब होता है। चित्र मानसिक चित्रण की तुलना में मानसिक मॉडल बनाने में सहायता करता हैं। चित्र एक छवि, एक तस्वीर, एक चित्रण, एक पेंटिंग, एक जीवित मानव चेहरा, यहाँ तक कि एक वस्तु भी हो सकती है। चित्र किसी पाठ की आवश्यकता नहीं है, फिर भी बच्चा चित्र या चित्र के साथ समझ सकता है ।

बच्चों को दृश्य साक्षरता से जुड़ने का मतलब है कि चित्रों की व्याख्या करना, चित्रों को पहचानना और खुद को चित्र के माध्यम से अभिव्यक्त करना। जैसा कि वे कहानी बनाते हैं, बच्चों में कहानी, प्रदर्शन और अनुक्रम की समझ विकसित होती है। चित्र पढ़ना बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है, बढ़ावा देता है और मानसिक मंच (scaffolds) प्रदान करता है। पूर्व और इमर्जेंट पाठकों के लिए पुस्तकों में चित्र, कहानी पुस्तक पढ़ने और स्वतंत्र खेलने के दौरान मौखिक भाषा और शब्दावली विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण तत्व है।

पुस्तकों में चित्रों की भूमिका:-

- बच्चों से समक्ष साझा किए गए चित्र, उन कहानियों की किताबों में अर्थ जोड़ने में मदद करता है।
- चित्र बच्चों में रुचि जागृत करते हैं, जिससे कई बच्चों को कम ध्यान देने की अवधि में मदद मिलती है।
- चित्र छोटे बच्चों को पढ़ने के दौरान अधिक सक्रिय भूमिका निभाने में मदद करते हैं।
- पाठक और बच्चे टिप्पणी करते हैं, इंगित करते हैं, और चित्रित घटनाओं और चीजों के बारे में सवाल पूछते हैं।

- चित्र बच्चों को मार्गदर्शन दे सकते हैं क्योंकि वे "पढ़ने की नकल करते हैं," कहानी को अपने से बनाते हैं।
- बच्चे जैसे ही पुस्तक के पन्ने पलटते हैं, शब्द या स्मृति से याद आते हैं।

रीड अलाउड:-

यह साक्षरता विकास की नींव है। यह सफल पढ़ने के लिए सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि है। यह पढ़ने को पुरस्कार के रूप प्रकट करता है और पाठक में पुस्तक पढ़ने की रुचि विकसित करता है और एक पाठक बनने की इच्छा जागृत करता है। यह बच्चों को पठन प्रक्रिया के प्रत्यक्ष अनुभव कराने की रणनीति है। किसी कहानी या बिग बुक को हाव-भाव, उतार-चढ़ाव एवं अर्थ चिंतन के साथ अंगुली फेरते हुए पढ़ते हैं, तो बच्चों की भाषा पर समझ दृढ होती है।

पढ़ने के लिए दूसरों को सुनना, समझ का कौशल विकसित करता महत्वपूर्ण है, जैसे कि कहानी से पढ़ने की समझ को विकसित करने में मदद करता है।

- रीड अलाउड से बच्चों को पृष्ठभूमि का ज्ञान मिलता है, जो उन्हें यह समझने में मदद करता है कि वे क्या देखते हैं, सुनते हैं और पढ़ते हैं। जितने अधिक वयस्क/बच्चे पढ़ते हैं, उतनी ही उनकी बोलचाल बढ़ेगी और उतना ही उन्हें दुनिया और उसके स्थान के बारे में पता चलेगा।
- रीड अलाउड से बच्चे अपनी कल्पनाओं का उपयोग लोगों, स्थानों, समय और घटनाओं को अपने स्वयं के अनुभवों से परे तलाशने में कर सकते हैं।
- रीड अलाउड से बच्चों और वयस्कों को कुछ बात करने को मिलती है। बात करना पढ़ने और लिखने के कौशल के विकास का समर्थन करता है।
- रीड अलाउड बच्चों और वयस्कों की किताबों, लेखों और उन अन्य विषय पर चर्चा करता है जो वे एक साथ पढ़ते हैं।
- रीड अलाउड पुस्तकों की भाषा का परिचय देता है, जो दैनिक वार्तालापों में सुनी जाने वाली भाषा, टेलीविजन पर और फिल्मों में भिन्न होती है। पुस्तक की भाषा अधिक वर्णनात्मक है और अधिक औपचारिक व्याकरणिक संरचनाओं का उपयोग करती है।
- रीड अलाउड प्रिंट अवधारणाओं के बारे में अधिक सिखाता है, जैसे कि प्रिंट बोले जाने वाले शब्द हैं, शब्दों में अक्षरों को एक निश्चित क्रम में लिखा जाता है और लिखित शब्द रिक्त स्थान से अलग हो जाते हैं।

एक सामान्य शिक्षक पढ़ाता है।

एक अच्छा शिक्षक प्रदर्शन करता है।

एक श्रेष्ठ शिक्षक प्रेरित करता है।

सत्र में रीड अलाउड के लिए-

- बच्चों को कहानी को समझने में मदद करने के लिए चित्रों को बारीकी से देखने के लिए कहें और आगे क्या हो सकता है, इसके बारे में विचार करें।
- रीड अलाउड करते हुए सत्र के दौरान और बाद की कहानी के बारे में बात करें।
- किताब पढ़ते हुए और बाद के समय में दिलचस्प शब्दों और तुकबंदी को दोहराएँ।
- कहानी के बीच में सोच के सवाल पूछें: उदाहरण:- "आगे क्या हो सकता है? वह कहाँ गया? उसने ऐसा क्यों किया?
- कहानी पर अमल करें, बच्चे को बात करने, पेंट करना या पात्रों में से एक होने का नाटक करने के लिए आमंत्रित करना।

साझा पठन के लाभ:-

छात्रों को उन सामग्रियों का आनंद लेने की अनुमति देता है जो वे स्वयं पढ़ने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

- बच्चे नकल (एक्टिंग) करते हैं जैसे वे पढ़ रहे हों।
- बच्चे भले न पढ़ रहे हों, लेकिन पढ़ने का अभिनय करते हैं। शुरुआती पाठक मौखिक भाषा और मुद्रित भाषा के साथ-साथ चित्र और प्रिंट के बीच के अंतर के बारे में सीखते हैं।
- बच्चों को सीखने में बढ़ावा दें कि उनका ध्यान कहाँ-कहाँ लगाना है।
- पाठ पढ़ने से अर्थ का निर्माण करते हुए, बच्चों को प्रतीकों और प्रिंट सम्मेलनों के बारे में जागरूकता प्राप्त करने का समर्थन करता है।
- पृष्ठभूमि ज्ञान और नई जानकारी के बीच संबंध बनाने में बढ़ावा देता है बाएँ से दाएँ दिशा-निर्देश और एक-से-एक सामंजस्य (लिखित शब्द से प्रत्येक मौखिक मिलान करने के लिए एक संकेतक का उपयोग करके)
- अवधारणाओं को विकसित करने और प्रिंट और ध्वनिग्रामिक जुड़ाव पर ध्यान केन्द्रित करते है।
- शब्दों, अक्षरों और रिक्त स्थान के बीच अंतर को पहचानना।
- पढ़ना पूर्वकथन को प्रोत्साहित करता है।
- बच्चों को कहानी का भाव की समझ विकसित करने में मदद करता है।

साझा पढ़ने की प्रक्रिया:-

बच्चों की आवश्यकताओं और शिक्षक द्वारा निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों के आधार पर एक साझा पठन सत्र का संचालन, कई तरीकों से किया जा सकता है। साझा पठन में, शिक्षक इसे तीन रीडिंग सेक्शन में विभाजित कर सकता है। पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और बाद में।

- साझा पठन से पूर्व शिक्षक शीर्षक, आवरण, के बारे में बात करते हुए कहानी का परिचय दे सकता है और शीर्षक पृष्ठ और कवर तस्वीर में क्या देखते हैं, और उन्हें क्या लगता है कि यह उन्हें कहानी को पढ़ने के बारे में बताता है। शिक्षक पुस्तक के माध्यम से एक चित्र दिखा सकता है। संक्षेप में विशिष्ट चरित्र कार्यों या घटनाओं, प्रश्नों और उन्हें सोचने के लिए इंगित करता है।
- पुस्तक के पीछे का आवरण (बैक कवर) का उपयोग करके, बच्चों को कहानी में क्या होगा, इसके बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करें।
- **साझा पठन के दौरान:-**

  शिक्षक प्रत्येक शब्द की ओर इशारा करता है क्योंकि उसे बच्चा पढ़ता हैं "उनकी आँखों के साथ" व्यक्त करने के लिए कहा और स्वाभाविक रूप से जितना संभव हो, पढ़ना और धाराप्रवाह पढ़ना। यथार्थवादी प्रतिक्रियाएँ और उचित स्वर का उपयोग करें, फिर से, शिक्षक समय-समय पर छात्रों को किसी शब्द, वाक्यांश का अनुमान लगाने या जो हो रहा है उसके बारे में चिंतन करने के लिए कह सकते हैं। पढ़ने के दौरान, शिक्षक बच्चों से पूछकर उनकी चिंतनों की पुष्टि करने के लिए कह सकता है, उदाहरण:- आगे क्या होगा?
- पढ़ने के बाद, शिक्षक विचार किये गए बिंदु पर बच्चों को वापस ले जा सकते हैं, और पूछ सकते हैं कि उनकी चिंतन क्या थी और कहानी में क्या हुआ था? बात करने का मौका दें और उनकी पूरी भागीदारी सुनिश्चित करें।
- दूसरी और बाद की रीडिंग बच्चों को नए/परिचित शब्दों और वाक्यांशों का पता लगाने की अनुमति देती है।

शिक्षक की भूमिका:-

- चित्रों और शब्दों के साथ कक्षा पर्यावरण लेबल,
- किताबें, खेल और गतिविधियाँ बनाने के लिए पर्यावरण प्रिंट का उपयोग करें।
  (उदाहरण- पर्यावरण प्रिंट और मिलान)
- बच्चों को बातचीत करने के लिए उपयुक्त चित्रों और शब्दों के साथ एक शब्द दीवार प्रदान करें।
- बच्चों को सुनने और सक्रिय रूप से पढ़ने और संवाद संबंधी गतिविधियों में भाग लेने के लिए कई अवसर प्रदान करें।
- कोई पुस्तक कवर को इंगित करके हुए, सत्र के दौरान कवर, बैक कवर, शीर्षक, लेखकों, चित्रकारों और परिचित शब्दों या नामों को इंगित करके कैसे काम करती है, स्पष्ट रूप से चर्चा करें है।
- बार-बार पढ़ने और बड़ी पुस्तकों के साथ प्रतिरूपण (मॉडलिंग) के साथ पेज की व्यवस्था और प्रिंट की दिशा पर चर्चा करें।

बच्चों में पूर्व पठन कौशल विकसित करने के स्रोत:-

पठन पूर्व गतिविधियों में शामिल हैं

- दूसरों को पढ़ते हुए देखना।
- विभिन्न पुस्तकों का आनंद लेना और उन पर चर्चा करना, जो दूसरों द्वारा जोर से पढ़े जाते हैं।
- अनुमानित और परिचित पुस्तकों, वर्णमाला की पुस्तकों, कविताओं, गीत और बहुत कुछ को पढ़ने का नाटक और अनुभव।
- कहानियों का अभिनय करना, परिचित कहानियों को फिर से पढ़ना, और गाने गाना।
- वयस्कों के साथ अनुभव साझा करना और उन अनुभवों के बारे में बात करना।
- पर्यावरण मुद्रण (प्रिंट) को देखना और बोलने वाले शब्दों के साथ प्रिंट को जोड़ना और उनका अर्थ समझ कर पुस्तक परंपरा और प्रिंट के बारे में अवधारणाएँ (उदाहरण के लिए, कि एक पुस्तक में आगे और पीछे होता है।)
- यह पहचानना कि शब्द ध्वनियों से बने हैं, और उन ध्वनियों को जोड़-तोड़ तुकबंदी खेलों के माध्यम से, ध्वनि प्रतिस्थापन खेल, अनुप्रास, और विभिन्न माध्यम से जोड़ते हैं।
- किताबों, अनुभवों, और बातचीत के माध्यम से नई शब्दावली का निर्माण।

(शिक्षकों को अभ्यास के लिए विभिन्न प्रकार की मुद्रित सामग्री बच्चों को प्रदान करने की आवश्यकता है, जिसमें किताबें, बड़ी किताबें, चार्ट और पर्यावरण प्रिंट आदि।)

ध्वनि जागरूकता (ध्वनि चेतना) क्या है?

बच्चे जब स्कूल आते हैं तो अपने घर की भाषा को बहुत अच्छे तरीके से बोलते हैं। बोलना तो वे स्वाभाविक ढंग से सीख ही जाते हैं। इसके लिए उन्हें सचेत रूप से कोशिश करने की जरूरत नहीं होती। ऐसे में जब वे वाक्यों को एक ही साँस में बोल जाते हैं, तो उनका ध्यान इस ओर नहीं जाता कि बोले जाने वाले वाक्य छोटे शब्दों से बने हैं, न ही वे अपने आप यह समझ पाते हैं कि हर शब्द भी ध्वनि की छोटी इकाइयों से बना है।

> ध्वनि जागरूकता यही समझ पाने की क्षमता है कि बोले जाने वाले वाक्य कई ध्वनियों को जोड़कर बने हैं। अलग-अलग शब्द विभिन्न छोटी ध्वनियों को जोड़ने से बनते हैं तथा इन ध्वनियों को पहचान पाना और तेजी से जोड़ते हुए शब्द के रूप में बोल पाना ध्वनि जागरूकता है।

इसमें मुख्य रूप से दो चीजें हैं-

- ध्वनि जागरूकता संबंधित गतिविधियाँ मौखिक रूप से की जाती हैं। इसमें पढ़ने-लिखने का कोई पहलू शामिल नहीं होता।
- ध्वनि जागरूकता विकसित करते समय शब्द के अर्थ पर भी ध्यान नहीं दिया जाता।

ध्वनि जागरूकता की आवश्यकता क्यों?

बच्चों को ध्वनि चिह्न के बीच के संबंध को सिखाना तब तक संभव नहीं है, जब तक बच्चों में शब्दों के छोटे अंशों की पहचान विकसित न हो जाए। एक बार ध्वनि की छोटी इकाइयों की पहचान हो जाए, तो बच्चे ध्वनि की इकाइयों को उनके चिह्न से जोड़ना शुरु कर देते हैं।
उदाहरण के लिए यदि एक बार बच्चे में ध्वनि को पहचाने लग जाएँ, तो उनके लिए में की आकृति सीखना आसान हो जाता है। ऐसा अक्सर देखा गया है कि जिन बच्चों ने शुरुआत में ध्वनियों के साथ अभ्यास नहीं किया होता, उन्हें आगे चलकर स्वयं वर्तनी बनाने में मुश्किल होती है।

डिकोडिंग

डिकोडिंग क्या है?

डिकोडिंग वह प्रक्रिया है, जिसमें हम लिपि या लिपि चिह्नों को पढ़ना सीखते हैं। इन लिपि चिह्नों को वर्णों या अक्षरों के रूप में समझते हैं। अक्षरों और वर्णों की ध्वनियों को जोड़कर उन्हें पहचान कर उनका सही उच्चारण करना सीखते हैं।

डिकोडिंग की आवश्यकता क्यों?

एक अच्छा पाठक तेजी से शब्दों को पहचानते जाता है। वह अपना पूरा ध्यान ध्वनियों को जोड़ने की बजाय पढ़े गए शब्दों और वाक्यों के अर्थ समझने में लगाता है। तेज गति से डिकोडिंग का सीधा असर बेहतर समझ बनाने में होता है। इसलिए एक अच्छा पाठक बनने के लिए डिकोडिंग कौशल का मजबूत होना बहुत जरूरी है।

डिकोडिंग के मुख्य चरण इस प्रकार हैं ।

1. ध्वनि(विशेषकर प्रथम छोटी ध्वनि) जागरूकता का विकास।
2. वर्ण या अक्षर परिचय, चिह्नों की ध्वनि पहचानना।
3. ध्वनियों को जोड़कर शब्द बोलना/पढ़ना।
4. स्व-चलित शब्द पहचान की क्षमता का विकास।
5. सुपरिचित (अक्षरों और शब्दों वाले) पाठ पढ़ने का अभ्यास।
6. कई शब्दों को दृश्य शब्द के रूप में पढ़ते हुए प्रवाहपूर्वक डिकोडिंग।

डिकोडिंग के खेल एक उदाहरण-

म	ब	क	ग

खेल का नाम	**यह है मेरा अक्षर**
प्रमुख विकास	भाषा विकास
गतिविधि के उद्‌देश	बच्चों को अक्षर पहचान से अवगत करना।
आवश्यक सामग्री	जमीन पर लिखने के लिए लकड़ी/चॉक आदि।
गतिविधि समय	30 मिनट
प्रक्रिया	• शिक्षक जमीन पर चार खाने बनाएँ। प्रत्येक खाने में एक अक्षर लिख दें। • सभी बच्चों को इस गतिविधियों के नियमों से अवगत कराएँ। • खेल के दौरान रखी जाने वाली आवश्यक सावधानियों के बारे में जानकारी दें। • प्रत्येक बच्चे को बारी-बारी से खानों में कूदने के लिए कहें। उदाहरण के लिए, आप किसी बच्चे को अक्षर लिखे खाने पर कूदने के लिए कहें। • वह बच्चा 'ब' अक्षर पर कूदे और ऊँची आवाज में बोले 'ब'। • इसके बाद बाकी बच्चे बताएँ कि वह सही अक्षर पर कूदा या नहीं। • यदि बच्चा गलत अक्षर पर कूदे तो बाकी बच्चे बताएँ कि वह कौन सा अक्षर है। • इसी प्रकार अलग-अलग बच्चों के लिए कोई अक्षर बोलें और बच्चे उस बोले गए अक्षर पर कूदें।
ध्यान देने वाली बातें	शिक्षक सभी बच्चो को समान अवसर दें। कोई बच्चा गलत करने पर उसे सही अक्षर से अवगत कराएँ। गलत करने वाले बच्चों को पुनः करने के लिए प्रोत्साहित करें।
गतिविधि पश्चात बातचीत	खेल में लिए गए अक्षर पर बातचीत करें। बातचीत के माध्यम से अक्षर के ध्वनि जागरुता से संबंध में अन्य अक्षरों पर भी बातचीत करें। बच्चों से चर्चा एवं जानकारी के दौरान समझ की भाषा का प्रयोग करें।

पूर्व लेखन कौशल :-

परिचय

पूर्व-लेखन कौशल वे मौलिक कौशल हैं जिन्हें बच्चों को लिखने से पहले विकसित करने की आवश्यकता होती है। ये कौशल बच्चे को एक पेंसिल रखने और उपयोग करने की क्षमता और खीचना, लिखने, नकल करने और रंग देने की क्षमता में योगदान करते हैं। ... ये पेंसिल स्ट्रोक्स हैं जिनमें अधिकांश अक्षर, संख्या और प्रारंभिक चित्र शामिल होते हैं।

लेखन क्या है?

हम अक्सर जब लेखन के बारे में सोचते हैं तो केवल उसके सीमित कौशलों के बारे में ही सोचते हैं जैसे सही वर्तनी लिखना, सही विराम चिह्न लगाना, सही वाक्य रचना करना आदि, इसके लिए अक्सर बच्चों को बोर्ड या किताब से देख-देख कर लिखने के अभ्यास कार्य दिए जाते हैं। यह त्रुटिपूर्ण अभ्यास लेखन की अधूरी समझ की वजह से है।

लेखन केवल चिह्नों को सीखना नहीं उससे कहीं बढ़कर है। प्रारंभिक कक्षाओं में लेखन के विकास का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि बच्चे खुद अपने शब्दों में रचनात्मक और सटीक ढंग से लिखने लगे। लेखन के लिए ना केवल यह जरूरी है कि आप लिपि के माध्यम से अपने शब्दों और वाक्यों को सही ढंग से व्यक्त कर सकें बल्कि यह भी जरूरी है कि आप अपने विचारों और जानकारी को तार्किक और व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत कर सकें। लेखन का अर्थ है अपनी बात को सोचकर अच्छी तरह नियोजित करके अपने शब्दों में लिखना।

बच्चों में लेखन-विकास के स्तर

हम जानते हैं कि एक ही कक्षा के बच्चे लेखन कौशल के विभिन्न स्तरों पर हो सकते हैं। इन स्तरों को पहचान कर हम उनके साथ जो काम करेंगे वह ज्यादा प्रभावी और सटीक हो सकेंगे। इन स्तरों को पहचानने का एक और पक्ष यह है कि क्षमता का एक स्तर, अगले स्तर तक पहुँचने में आधार का काम करता है। उदाहरण के लिए जिसे यह समझ हो कि हर लिखी हुई बात का कोई मतलब होता है, (लिपि की अवधारणा) उसमें पढ़ना लिखना सीखने की प्रेरणा पैदा होने की संभावना ज्यादा है, बजाय उसके जो लिपि की अवधारणा से अनजान हो। बच्चों में लेखन कौशल की प्रमुख अवस्थाएँ इस प्रकार हैं-

1. शुरुआती लेखन- उभरता लेखन
2. शुरुआती परंपरागत लेखन- डिकोडिंग से संबंधित लेखन
3. मध्यवर्ती लेखन- संरचनात्मक लेखन
4. प्रवाहपूर्ण परिपक्व लेखन- स्वतंत्र लेखन

शुरुआती लेखन-उभरता लेखन-

इस चरण में बच्चे वर्ण और अक्षर नहीं पहचानते ,लेकिन यह जानते हैं कि लेखन का कुछ अर्थ होता है। वह कागज पर आड़ी-तिरछी लकीरें या चित्र बनाते है और अपने विचार वह भावनाएं व्यक्त करते हैं। यहाँ से अभिव्यक्ति के लिए लिखना प्रारंभ हो जाता है।

उभरते लेखन के दौरान बच्चों के बुनियादी व उच्च स्तरीय कौशलो दोनों का विकास जारी रहता है। बच्चों में अपने विचारों को आकार देकर अभिव्यक्ति करने की क्षमता बढ़ती है, साथ ही वे चिह्नों के इस्तेमाल को टटोलते हैं। इस अवस्था में शिक्षक को समझना होगा कि उनका दायित्व है कि वे उभरते लेखन को और बच्चों की अभिव्यक्ति को बढ़ावा दें। बच्चों को टोकना या उन्होंने 'गलत लिखा है' बताना इस समय उनके लिए हानिकारक है।

लिखने से पूर्व-आवश्यक कौशल:-

हाथ और ऊँगली की ताकत- पेंसिल के नियंत्रित के लिए आवश्यक मांसपेशियों की शक्ति की अनुमति देती है।

मध्य-रेखा को पार करना- काल्पनिक रेखा को पार करने की क्षमता जो शरीर को बाईं और दाईं ओर विभाजित करती है।

पेंसिल को धारण की समझ- पेंसिल को किस प्रकार धारण किया जाता है, इसकी क्षमता, उम्र के लिहाज से पेंसिल के गति की अनुमति देता है।

हाथ-आँख समन्वय- आँखों में नियंत्रण के लिए प्राप्त सूचनाओं को संसाधित करने की क्षमता, निर्देशन जैसे हस्तलेखन कार्य के प्रदर्शन में हाथों को निर्देशित करना।

द्विपक्षीय एकीकरण- दोनों हाथों का उपयोग करके एक हाथ को प्रधान रूप से उपयोग करना (उदाहरण के लिए पेंसिल को प्रमुख हाथ से पकड़ना और ले जाना जबकि दूसरा हाथ लेखन पत्र को पकड़कर रखें रहना)।

ऊपरी शरीर का बल- अच्छा पेंसिल नियंत्रण के लिए नियंत्रित हाथ की गति को स्वीकार करते हुए, कंधे द्वारा प्रदान किया गया बल और स्थिरता।

वस्तुओं में हेरफेर- कुशलता से उपकरणों में हेरफेर (अदला-बदली) और रोजमर्रा के साधनों (जैसे- टूथब्रश, कंघी और पाउडर) का नियंत्रित उपयोग करना।

दृश्य धारणा- आँखों द्वारा देखी गई दृश्य छवियों की व्याख्या करने और उन्हें मस्तिष्क के द्वारा समझने की क्षमता।

हाथ की मांसपेशियों का उपयोग- कार्य प्रदर्शन के लिए एक हाथ का लगातार उपयोग, जो परिष्कृत कौशल विकसित करने की अनुमति देता है।

ऊँगलियों का क्रियान्वयन- कार्यों के हेरफेर के लिए अँगूठे, तर्जनी और मध्य उँगली का उपयोग करना, चौथी और छोटी ऊंगली छोड़कर अन्य उँगलियों को स्थिर करना।

हमें कैसे पता चलेगा कि किसी बच्चे को लेखन कौशल विकसित करने में समस्या है?

- पेंसिल पकड़ने की समझ न होना।
- रंग, ड्राइंग या लेखन के लिए एक पेंसिल को नियंत्रित करने में कठिनाई होती है।
- केवल कुछ उंगलियों के बजाय वस्तुओं में हेरफेर करने के लिए अपने पूरे हाथ का उपयोग करने की प्रवृत्ति।
- पेंसिल आधारित गतिविधियों के लिए धीरज न रखना।
- धीमी या गड़बड़ लिखावट प्रदर्शित करना।
- रंग भरते समय रंग लाइनों के भीतर नहीं होती है।
- पेंसिल आधारित गतिविधियों के लिए कागज पर अनुचित दबाव (या तो बहुत भारी और अक्सर पेंसिल को तोड़ता है, या बहुत हल्का)
- ऊपरी अंग पर बल कम (कमजोर कंधे) हैं।
- दो हाथों वाले कार्यों के लिए दोनों हाथों को एक साथ समन्वित करने में कठिनाई होती है।
- हाथ और आँख के समन्वय में कमी।
- मौखिक रूप से कुशल हो, लेकिन इसे कागज पर दिखाने में कठिनाई होती है (लिखना, ड्राइंग या रंग भरना)।,

नीचे लिखी पूर्व-अपेक्षाओं को पूरा न करने पर क्या करें-

उँगलियों का क्रियान्वयन- निर्धारित करें और सटीक कार्य प्रदर्शन में प्रमुख हाथ उपयोग को सुदृढ़ करें।

अनुभव-

ऐसी गतिविधियों में भागीदारी को प्रोत्साहित करना जिसमें छोटी वस्तुओं पर कार्य करना और हेरफेर करना शामिल है जैसे कि ड्राइंग, कंटेनर खोलना, थ्रेडिंग या अन्य संबंधित कार्य।

ढकेलना और संकेत-

ऐसे कार्यों का अभ्यास करें जो सिर्फ एक या दो उँगलियों का उपयोग करते हैं।

प्रशंसा और प्रोत्साहन- जब आपका बच्चा फ़ाइन मोटर गतिविधियों में संलग्न होता है, खासकर अगर वे किसी गतिविधि को खोजने के दौरान लगातार बने रहते हैं।

स्पर्श जागरूकता-

इसके विकास में सहायता करने के लिए हाथ और उंगली की ताकत (जैसे स्क्रिबिलिंग, कागज, चिमटी, मिट्टी, संवेदी खेलने की गतिविधियाँ (जैस- चावल खेलना, उँगली से पेंटिंग) का उपयोग करना।

हाथ-आँख का समन्वय-

हाथ-आँख का समन्वय (जैसे फेंकना और पकड़ना) और मध्य-रेखा को पार करना (जैसे- आइटम लेने के लिए पूरे शरीर तक पहुँचना) में अभ्यास करने वाली गतिविधियाँ।

ऊपरी अंग की ताकत- ऊपरी अंग की ताकत को विकसित करने वाली खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित करें (जैसे कि सीढ़ी चढ़ना, पहिया चलाना)।

छोटे बच्चों में पूर्व-लेखन कौशल को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियाँ-

- थ्रेडिंग और लेसिंग विभिन्न प्रकार के आकार के लेंस के साथ।
- मिट्टी के खिलौने की गतिविधियाँ बनाना जिसमें हाथों से रोलिंग (लुढ़कना) हाथ या एक रोलिंग पिन शामिल हो सकता है, खेल में के आटे के सिक्के या सिर्फ रचनात्मक निर्माण जैसे कि आटे में सिक्के या सिर्फ रचनात्मक निर्माण।
- कैंची से योजना जिसमें ज्यामितीय आकृतियों को काटना और फिर उन्हें एक साथ चिपकाना शामिल हो सकता है, जैसे रोबोट, ट्रेन या घरों जैसी तस्वीरें बनाने के लिए।
- खड़ी सतह पर चित्र बनाना या लिखना।
- हर दिन की गतिविधियों के लिए उँगलियों की आवश्यकता होती है, जैसे कि कंटेनर और जार खोलना।

पूर्व-लेखन कौशल विकसित करने में शामिल कदम

1. घसीटा लेखन (स्क्रिबलिंग) सिर्फ घसीटा (स्क्रिबल) के लिए।
2. लेखन के रूप में स्क्रिबलिंग (अक्सर एक ड्राइंग के बगल में)
3. पत्र लिखने का नाटक या पत्र के तार लेखन।
4. अक्षर/ध्वनि ज्ञान का उपयोग करते हुए वर्तनी का प्रयास।
5. सरल वाक्यों में सही वर्तनी के साथ लिखना।

क्या करें और क्या नहीं:-

- बच्चे को अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता दें।
- बच्चे को कौशल सीखने के लिए प्रोत्साहित करें।
- सामग्री के माध्यम से पूर्व लेखन कौशल सीखने के लिए और अधिक अवसर प्रदान करें।
- बच्चे को लिखने के लिए मजबूर न करें।
- एक बच्चे की तुलना दूसरे बच्चे से न करें।

लेखन कौशल के कुछ उदाहरण :-

स्तर	लेखन अभ्यास के उदाहरण
शुरुआती स्तर लेखन	चित्र बनाना, आड़ी-टेढ़ी रेखा खिचना,शब्दों जैसी आकृति बनाने की कोशिश करना, रंग भरना।
शुरुआती परंपरागत लेखन- स्तर	वर्ण और अक्षर लिखना। शब्द लिखना। ग्रिड से अक्षर और शब्द लिखना। वर्ण/अक्षर या शब्द का श्रुतलेखन आदि।
संरचनात्मक लेखन	वाक्य पूरा करना। चित्र देखकर वाक्य पूरा करना। चित्र देखकर वाक्य बनाना। शब्द से वाक्य बनाना आदि।

प्रक्रिया	• शिक्षक जमीन पर चार खाने बनाएँ। प्रत्येक खाने में एक अक्षर लिख दें। • सभी बच्चों को इस गतिविधियों के नियमों से अवगत कराएँ। • खेल के दौरान रखी जाने वाली आवश्यक सावधानियों के बारे में जानकारी दें। • प्रत्येक बच्चे को बारी-बारी से खानों में कूदने के लिए कहें। उदाहरण के लिए, आप किसी बच्चे को अक्षर लिखे खाने पर कूदने के लिए कहें। • वह बच्चा 'ब' अक्षर पर कूदे और ऊँची आवाज में बोले 'ब'। • इसके बाद बाकी बच्चे बताएँ कि वह सही अक्षर पर कूदा या नहीं। • यदि बच्चा गलत अक्षर पर कूदे तो बाकी बच्चे बताएँ कि वह कौन-सा अक्षर है। • इसी प्रकार अलग-अलग बच्चों के लिए कोई अक्षर बोलें और बच्चे उस बोले गए अक्षर पर कूदें।
ध्यान देने वाली बातें	शिक्षक सभी बच्चों को समान अवसर दें। कोई बच्चा गलत करने पर उसे सही अक्षर से अवगत कराएँ। गलत करने वाले बच्चों को पुनः करने के लिए प्रोत्साहित करें।
गतिविधि पश्चात बातचीत	खेल में लिए गए अक्षर पर बातचीत करें। बातचीत के माध्यम से अक्षर के ध्वनि जागरुता से संबंध में अन्य अक्षरों पर भी बातचीत करें। बच्चों से चर्चा एवं जानकारी के दौरान समझ की भाषा का प्रयोग करें।

मुख्य सत्र : 5. संख्यात्मकता, पर्यावरण और वैज्ञानिक सोच

सत्र : संख्यात्मकता

प्रशिक्षण की योजना :-

मुख्य सत्र का नाम - 1. संख्यात्मकता दृष्टिबोध, ध्वनि की समझ, स्वाद का अनुभव, और गंध की अनुभूति।

उद्देश्य :-

1. संख्या पूर्व अवधारणा को समझ पाएँगे।
2. संख्या ज्ञान की समझ विकसित करना।
3. संवेदी विकास को समझ पाना।

गतिविधि का नाम	समय	प्रक्रिया	आवश्यक सामग्री
संख्यात्मकता		बड़े समूह में चर्चा- 1. कक्षा पहली के बच्चों को आप कैसे पढ़ाते हैं, प्रतिभागियों से प्रश्न करेंगे। 2. उनका जवाब लेंगे। 3. संख्या पूर्व अवधारणा को पढ़ने के लिए देंगे। 4. प्रशिक्षक द्वारा अंतिम प्रस्तुतीकरण।	संख्या पूर्व अवधारणा की प्रिंटेड कापी

संवेदी विकास		छोटे समूह में चर्चा- 1. संवेदी विकास से संबंधित गतिविधि करना जैसे-चखना, सुनना, देखना, सूंघना एवं छूना। 2. प्रतिभागियों से चर्चा करना। 3. प्रशिक्षक द्वारा अंतिम प्रस्तुतीकरण।	नींबू, अदरक, प्याज, लहसून, शक्कर, नमक, कंकड़,
संख्या ज्ञान		बड़े समूह के साथ चर्चा- 1. संख्या ज्ञान के संबंध में प्रतिभागियों से चर्चा 2. विद्या आंनद पुस्तक की गतिविधियों पर बातचीत करना। 3. संख्या से संबंधित गतिविधि जो विद्या आनंद में हैं उसे करके देखना जैसे-जितने पेन हैं उतने कंकड़ गिनो। 4. चित्र से संख्या मिलाओ।	पेन, कंकड़, माचिस की तीली, बटन आदि।

संख्यात्मक विकास के लिए गतिविधियाँ-

गणितीय समझ, का उपयोग करने और जटिल सामाजिक व्यवस्था में दिन-प्रतिदिन की जरूरतों को पूरा करने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता के लिए एक बच्चे को सोचने और संवाद करने, संख्या की समझ बनाने, स्थान की जानकारी रखने, नियमों और अनुक्रमों को समझने में सक्षम होना चाहिए, और उन स्थितियों की पहचान करना जहाँ गणितीय तर्क की समस्याओं को हल करने के लिए किया जा सकता है। बच्चों के अंदर भी आवश्यक सोच और तर्क क्षमता को विकसित करना चाहिए। इन क्षमताओं में समस्या को हल करना, तर्क करना और प्रतिनिधित्व करना शामिल है। इससे पहले कि बच्चे वस्तुओं को गिनना शुरू करें, उन्हें वर्गीकृत करने, क्रम देने, एक से एक संगतता स्थापित करने की समझ विकसित हो तो इससे उनमें संख्या की समझ विकसित होगी। इसलिए यह आवश्यक है कि बच्चे मिलान, वर्गीकरण, क्रम, व्यवस्था, ठोस सामग्री के साथ पैटर्न बनाने, ताश खेलने आदि जैसी गतिविधियों में भाग लें। बच्चों को शामिल करके गिनती गिनना शुरू की जानी चाहिए जैसे- नाम टैग गिनना, गिनना कि कितने बच्चे मौजूद हैं, गीत और कहानियों आदि के माध्यम से गिनना।

संख्या पूर्व अवधारणाओं की आवश्यकता क्यों?

प्राथमिक अध्यापकों की हैसियत से हम बच्चों को यह पढ़ाने की कोशिश करते हैं, जो पाठ्यक्रम में दिया गया है। संख्याएँ, संख्याओं का जोड़-घटाव, शुरुआती द्विआयामी तथा त्रिआयामी आकार, माप, आदि। बच्चों को संख्याओं और चिह्नों की गणितीय भाषा सिखाने के लिए, हम दिल से मेहनत करते हैं। जोड़-घटाव की गणितीय समस्याओं को हल करने के लिए एक खास रणनीति या कलन विधि अपनाते हैं। हम बार-बार उन्हीं रणनीतियों या कलन विधि का अभ्यास करवाते हैं। कागज पर भी गणित के सवाल हल करने के लिए कहते

हैं, लेकिन परेशानी यह है कि गणित की भाषा और चिंतन का बच्चे के परिवेश से सीधे-सीधे इस्तेमाल नहीं होता है, बच्चे उससे अनजान होते हैं।

अनौपचारिक स्तर पर गणित बार-बार हमारे सामने आता है। संख्याओं के मामले में, आकारों के मामले में, और उनको बच्चे अपने परिवार, समुदाय, मोहल्ले और पड़ोस में अपने जीवन के पालन पोषण की प्रक्रिया का स्वभाविक हिस्सा मानते हुए सीख जाते हैं। मिसाल के तौर पर स्कूल जाने वाला कोई बच्चा इस बात को समझता है कि दो रोटी ले लो या मुझे आधा गिलास पानी दो या समोसे के त्रिकोणी आकार का क्या मतलब होता है। लिहाजा हम यदि असली जिंदगी के अनुभव और परिस्थितियों के साथ शुरुआत उस चर्चा से करें जिनमें संख्या और आँकड़ों का इस्तेमाल होता है और बच्चों को ठोस वस्तुओं से उनके चित्र और संख्याओं के प्रति को बढ़ने में मदद दे तो बच्चे गणित की अवधारणा को ज्यादा आसानी से समझ पाएँगे।

गणित शिक्षा का व्यापक उद्देश्य यही है, कि बच्चे गणित को एक ऐसी चीज के रूप में देखने लगे जिसके बारे में वे बात कर सकते हैं और जिसे अपनी जिंदगी का हिस्सा मान सकते हैं। न केवल गणित की समस्याओं को हल करने में संबंधों को पहचानने में भी कुशल होना चाहिए बच्चों को संख्याओं से खेलने और उनकी चर्चा करने में मजा आना चाहिए। ऐसा भी तभी कर सकते हैं जब वे खुद अपनी शैक्षिक प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से जुड़े हों। गणित तभी आरामदायक हो सकता है, जब सीखने में बच्चों को मजा आने लगे। उसका एक अच्छा तरीका यह है कि, गणित की शिक्षा गतिविधियों पर आधारित हो। गतिविधि आधारित शिक्षा पद्धति में बच्चों को इस असली जिंदगी के हालात और समस्याओं के आधार पर समस्याओं का समाधान करने का मौका मिलता है। स्कूल की शिक्षा और घर में चलने वाली सीखने की प्रक्रिया आपस में जुड़ी होती हैं। इसलिए सीखने की प्रक्रिया में बच्चों को एक जोश महसूस होता है। कुल मिलाकर गतिविधि आधारित शिक्षा नाना प्रकार के अनुभव और अवसर प्रदान करती है। जिससे सहज रूप से सीख सके।

ज्ञानेंद्रियों के कौशलों को बढ़ावा देना-

बच्चों को कुछ भी सिखाने के लिए उसके अनुभव की आवश्यकता होती है। जैसे- वस्तु, घटना, उसे छूना, देखना, सुनना, स्पर्श करना और सूँघना स्वभाविक क्रियाएँ हैं। जिसके लिए किसी को कुछ सीखने बताने की आवश्यकता नहीं होती। तथापि इन ज्ञानेंद्रियों पर आधारित क्रियाएँ आयोजित करके आप बच्चों को वस्तुओं और घटनाओं का विस्तृत रूप से अवलोकन करने में सहायता कर सकते हैं। अवलोकन संवेदी क्षमताओं पर निर्भर करता है और हम अवलोकन द्वारा सीख सकते हैं।

पढ़ेगी लड़की होगा सुधार, घर बनेगा स्वर्ग का द्वार।

बच्चों की संवेदी क्षमताओं को प्रखर करने के अलावा बच्चों की अवधारणाओं की समाज को भी आगे बढ़ाती है प्रत्येक क्रिया के बारे में पढ़ते हुए उसके द्वारा निर्मित और सुदृढ़ होने वाली अवधारणाओं को नोट करें यह आपके लिए उपयोगी व सहायक होगी।

1. **स्पर्शेंद्रिय**

2. **घ्राणेंद्रिय**

3. **स्वादेंद्रिय**

4. **दृश्येंद्रिय**

5. **श्रवणेंद्रिय**

स्पर्श संबंधी क्रियाएँ

स्पर्श-

छूकर बताना चिकना, खुरदुरा, सूखा, गीला, नरम, कठोर, ठंडा, गरम, ठोस, द्रव।

उदाहरण- सूखा और गीला कपड़ा देकर स्पर्श कराएँ कठोर और नरम वस्तु का स्पर्श कराएँ।

यहाँ वर्णित खेल क्रियाएँ स्पर्श से इंद्रियों को प्रखर करने में सहायक होंगी। इनके द्वारा आप बच्चों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान कर सकते हैं। यह अवधारणा निर्माण में भी सहायक होंगी। खेल क्रियाओं को पढ़ते हुए यह मूल्यांकन करने का प्रयत्न करें कि जिस रूप में इन क्रियाओं का वर्णन है क्या आप उन्हें उसी रूप में बच्चों के साथ आयोजित कर पाएँगे? या उनमें आप आवश्यकतानुसार कोई परिवर्तन करके अपनी स्थिति के अनुरूप बनाना चाहेंगे।

बच्चे जिन वस्तुओं से खेलते हैं, उन्हें स्पर्श भी करते हैं, यह निश्चित करें कि आपने केंद्र के लिए जो सामग्री चुनी है। वह भिन्न-भिन्न चीजों से बनी हो जैसे- लकड़ी, कपड़ा, धातु, मिट्टी इत्यादि। जब बच्चे सामग्री के साथ खेलते हैं, आप उसकी बनावट के बारे में बात कर सकते हैं। उनसे पूँछे कि चीजों को स्पर्श करने पर वह क्या महसूस करते हैं। इससे वे कोमल, सख्त-नरम, कड़े जैसे शब्दों से परिचित होंगे और यह क्रिया इन अवधारणाओं के अर्जन में सहायक होंगी।

सूँघने संबंधी क्रियाएँ-

सूँघना, गंध पहचानना, उनमें अंतर करना तथा नाम बताना।

उदाहरण- खुशबूदार फूल, सड़ी हुई सब्जियों आदि की गंध पहचानकर उसका नाम बताना।

सामान्यतः हमें सूँघने का प्रयास नहीं करना पड़ता। यदि किसी चीज की विशिष्ट गंध होती है, तो हमें एकदम पता चल जाता है। सूँघने पर केंद्रित क्रियाएँ बच्चों को अवलोकन करने, संबद्ध अवधारणाओं और शब्द भंडार को विकसित करने में सहायक होती है। दिन-प्रतिदिन की क्रियाओं के दौरान गंध की चर्चा की जाएँ।

जैसे- बच्चे जब भोजन के लिए जाते हैं, खाने की सुगंध पर केंद्रित करके चर्चा करें। बच्चों को अदरक, लहसुन, प्याज, संतरे के छिलके, सरसों का तेल, नींबू के पत्ते, गुलाब और अन्य कुछ ऐसी चीजें दें, जिनकी अपनी एक विशेष प्रकार की खुशबू होती है। बाद में इन सभी को एक छोटे से बक्से में डाल दें और बच्चों को वस्तु को बिना देखे केवल उसकी खुशबू से ही उसकी पहचान करने के लिए कहें।

स्वाद संबंधी क्रियाएँ

चखना-

स्वाद पहचानना, स्मरण करना ,अंतर करना एवं प्रयोग कर नाम बताना। उदाहरण- पानी में एक-एक करके शक्कर नमक और नींबू मिलाकर चखना और स्वाद बताना। बच्चे को जो भी वस्तुएँ मिलती हैं वे उसे अपने मुँह में डाल लेते हैं। जो बच्चे बड़े होते हैं वे समझने लगते हैं कि, उन्हें हर चीज अपने मुँह में नहीं डालने चाहिए लेकिन फिर भी इससे हमें बहुत कुछ पता चलता है।

आप एक चार्ट लें और विभिन्न श्रेणियों, नमकीन मीठा, कड़वा, खट्टा के कालम में विभक्त कर दीवार पर लगा दें। बच्चों ने जो खाया उसका स्वाद कैसा था। इसके बारे में जैसे-जैसे बच्चे बताएँ, आप वस्तु का नाम स्वादानुसार उसी कालम में लिख सकते हैं या उस वस्तु का चित्र बना सकते हैं।

ताक पर रहने दो अपना रटंतवाद।

मत करो मेरे बचपन पर कुठाराघात।

अगर तुमको चखना है सफलता का स्वाद।

मेरी बचपन रूपी बगिया को रखना है आबाद,

तो फिर मुझमें डालो केवल प्रेम की खाद।

दृष्टि संबंधी क्रियाएँ-

देखना

बच्चे चीजों को देखकर, उसका अवलोकन करते हैं साथ ही साथ परिचय बताते हैं। जैसे- पशु-पक्षी, खाद्य पदार्थ, भौतिक संसाधन, मौसम, जलवायु परिवार, त्योहार का नाम बता पाने में सक्षम होते हैं। नाम बताना स्मरण करना, अंतर करना, समानता बताना, वर्गीकरण करना, क्रमबद्ध सोच, क्रमबद्ध चिंतन करना, विश्लेषण करना, समस्या समाधान के साथ-साथ सृजन करना होता है।

हमारी सभी क्रियाओं में सुनना व देखना शामिल होता है तथापि इन इंद्रियों पर आधारित कुछ विशिष्ट क्रियाओं की योजना बनाई जा सकती है।

विभिन्न खेल बच्चों को स्मरण करने के लिए कहें कि उन्होंने स्कूल आते समय रास्ते में क्या-क्या देखा।

सुनने संबंधी क्रियाएँ-

बोली हुई आवाज को सुनना, पशु-पक्षी की आवाज को सुनना, अंतर करना एवं दिशा बताना।

उदाहरण- आँख मिचौली का खेल, संकेत का खेल शब्द अंताक्षरी, ध्वनि को रुक-रुक कर बोलना।

नेता का अनुसरण करने वाला खेल, खेल सकते हैं। इस खेल के लिए एक बच्चा नेता चुना जाता है, नेता एक विशेष लय पर ताली बजाता है, चलता है या मुँह से कोई आवाज निकालता है तथा दूसरे बच्चे उसके द्वारा की गई क्रिया को दोहराते हैं। नेता के क्रिया बदलने पर बच्चों को भी क्रिया बदलनी होती है।

उपरोक्त वर्णित कुछ ऐसी खेल क्रियाएँ थी, जिन्हें आप बच्चों की संवेदी योग्यता और अवलोकन क्षमताओं को प्रखर करने के लिए आयोजित कर सकते हैं। यहाँ हम एक पहलू पर विशेष बल देना चाहेंगे। हमने अलग-अलग ज्ञानेंद्रियों से संबंधित खेल-क्रियाओं के बारे में बताया है। इससे ऐसा आभास होता है कि प्रत्येक इंद्रिय से संबंधित खेल क्रियाएँ अलग-अलग आयोजित होनी चाहिए। लेकिन वास्तव में ऐसा जरूरी नहीं है। वस्तुतः कई बार इस अंतर को बनाएँ रखना संभव भी नहीं होगा, जब आप बच्चों को गुलाब का फूल सूँघने के लिए कहेंगे, तो वे फूल को स्पर्श भी करेंगे और उसके आकार व रंग का अनुभव भी करेंगे। सामान्यतः संवेदी अनुभव ऐसा अनुभव है, जिसमें सभी इंद्रियाँ शामिल होती हैं अतः आप क्रिया किस प्रकार आयोजित करते हैं और उसके कार्यान्वयन के दौरान किस ज्ञानेंद्रिय के विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं या आपके उद्देश्य तथा आपके द्वारा आयोजित क्रिया पर बच्चों की प्रतिक्रिया इन दोनों पर निर्भर करेंगा। उदाहरण- जब आप बच्चों को विभिन्न फूलों का अन्वेषण करने के लिए कहें तो आप उन्हें केवल गंध तक ही सीमित रहने को कह सकते हैं या आप साथ ही साथ फूलों के स्पर्श, उसकी बनावट आदि के बारे में भी बातचीत कर सकते हैं। क्रिया आयोजित करते समय मोटे तौर पर यह ध्यान रहे कि आप जो भी करें बच्चों की रुचि को ध्यान में रखकर करें।

स्मरण शक्ति से संबंधित क्रियाएँ-

स्मरण शक्ति हमारी संज्ञा का अभिन्न हिस्सा है। हमारी रोजमर्रा की जिंदगी स्मरण शक्ति के बिना आगे नहीं बढ़ सकती है। स्मरण-शक्ति में सूचनाओं को क्षमता पूर्वक दिमाग में संचित करना और आवश्यकता पड़ने पर

उन्हें पुनः स्मरण योग्य कर पाना शामिल है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, सूचना को संचित करने और पुनः स्मरण की उनकी क्षमता बढ़ती है। कुछ खेल क्रियाओं में पुनः स्मरण शामिल है।

बच्चों के सामने तीन चार वस्तुएँ रखें और उन्हें ध्यान पूर्वक देखने के लिए कहें। फिर उन वस्तुओं को किसी कपड़े से ढक दें, और बच्चों को बिना बताए चुपचाप एक वस्तु उसमें से हटा दें। फिर वस्तुओं के ऊपर से कपड़ा हटा दें और बच्चों से उस वस्तु का नाम पूछें जो आपने हटाई है। बच्चों के साथ हाल ही में घटित घटनाओं पर बातचीत करें। उदाहरण के लिए उनसे पूछें कि कल कौन-कौन से बच्चे स्कूल नहीं आए थे।

संख्या पूर्व अवधारणा-

हम कुछ ऐसी क्रियाओं के बारे में पढ़ेंगे, जो बच्चों को मिलाने ,वर्गीकृत करने, सामान्य संबंधों को समझने, तुलना करने, क्रमबद्ध करने, मापने, कारण और प्रभाव को समझने की योग्यता को विकसित करने में सहायक होगी। इस भाग में वर्णित खेल क्रियाएँ प्रयुक्त योग्यताओं को सुदृढ़ करने के अतिरिक्त रंग, आकार, संख्या और आकृति जैसी अवधारणाओं के विकास में भी सहायक होगी।

मिलान करना-

- मिलान की योग्यता से हमारा तात्पर्य पूर्ण रूप में एक जैसी वस्तुओं को पहचानना और उन्हें एक साथ रखना है।
- मिलाने की क्रियाओं के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्रियों का प्रयोग करें ,ताकि बच्चों को तरह तरह के अनुभव प्राप्त हो सके। कंचें, डंडियाँ, गुटके, खिलौने, डिब्बे आदि अपने परिवेश में सुगमता से उपलब्ध वस्तुओं का प्रयोग करें।
- धीरे-धीरे जब बच्चे एक गुण के आधार पर वस्तुओं को मिलाने योग्य हो जाते हैं, तो दो गुणों के आधार पर वस्तुओं को मिलाने के लिए कह कर आप क्रिया की जटिलता को बढ़ाते जाएँ।
- जब वस्तुओं को मिलाने के कई अनुभव हो जाएँ, तब किस गुण या आधार पर यह मिला रहे हैं उसके बारे में बच्चों से बातचीत करें।

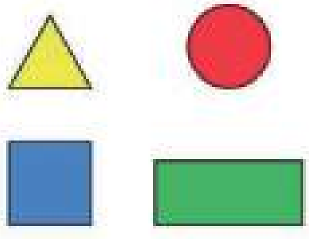

वर्गीकरण करना-

- वर्गीकरण या समूहीकरण में ऐसी चीजों का समूह बनाना, इकट्ठा करना अपेक्षित है, जिनमें कुछ विशेषताएँ समान हों। वर्गीकरण की क्रियाओं के दौरान बच्चे 'असमान', 'भिन्न' और 'संबद्धता' की अवधारणाएँ विकसित करेंगे। वर्गीकरण की योग्यता मिलाने की योग्यता से विकसित होती है और मिलाने की योग्यता को बढ़ावा देने के

लिए निर्मित अधिकांश खेल क्रियाओं को वर्गीकरण की क्रियाओं में विकसित किया जा सकता है। मिलाने वाली क्रियाओं में मिलाने योग्य वस्तुएँ सभी तरह से समरूप होनी चाहिए।

- प्रारंभ में विभिन्न प्रकार की सामग्री दें और इच्छा अनुसार उसका वर्गीकरण करने दें। जो वे करते है, उसके संबंध में बच्चों से बातचीत करें। इसके पश्चात बच्चों को स्थूल अभिलक्षणों (विशेषताओं,गुण) जैसे रंग आकार या बनावट के आधार पर वर्गीकृत करने के लिए कहें। उन्हें बताएँ कि उन्हें क्या करना है। उदाहरणतः उन्हें सभी लाल रंग की वस्तुओं को इकट्ठा रखने के लिए कहें। खेत में जो वस्तुएँ होती हैं, उन सभी को इकट्ठा रखें। इस ढेर में से उन सभी चीजों को ढूंढने के लिए कहें जो बढ़ई इस्तेमाल करता है, ऐसे निर्देश दें। शुरू-शुरू में आपको बच्चों को दिखाना पड़ेगा कि आपका क्या तात्पर्य है और क्रिया किस प्रकार करनी है।
- भोजन करने के दौरान मीठे-खट्टे या नमकीन खाद्य पदार्थों से संबंधित चर्चा करें। बच्चों को कपड़ों को उनके रंग या उनके कार्य के आधार पर अलग करने के लिए कहें। किसी सामान्य गुण के आधार पर कुछ वस्तुओं को समूह में रखें और बच्चों को समूह में रखा दिखाएँ। इसके पश्चात बच्चों से पूछें कि समूह में इकट्ठी रखी वस्तुओं में सामान्य गुण क्या है।

सामान्य संबंधों को पहचानना-

- सामान्य संबंधों को पहचानने का अर्थ है, ऐसी दो वस्तुओं के बीच निश्चित संबंध को समझना जो समरूप न हों। ये क्रियाएँ बच्चों की तर्कशक्ति को बढ़ाने में भी सहायक होंगी।
- जानवरों तथा उनके बच्चों के चित्र एकत्र करें या बनाएँ और बच्चों से कहें कि जानवरों से उनके बच्चों के चित्र मिलाएँ।
- कप, प्लेट, जूते, मौजे आदि वस्तुएँ लें और जोड़ों का संग्रह कर उन्हें मिला-जुलाकर एक डिब्बे में रख दें ,बच्चों से कहें कि वे वस्तुओं को एक-एक करके बाहर निकालें तथा उनकी जोड़ीं बनाएँ।

क्रमबद्ध करना

- दो या दो से अधिक वस्तुओं को आकार, आकृति, रंग या किसी अन्य गुणों के आधार पर क्रम में इस प्रकार रखना कि शुरू से लेकर अंत तक क्रम बना रहे। इसे क्रमबद्ध कर पाने की योग्यता कहते हैं।
- दो से अधिक वस्तुओं को क्रम में रख पाने की योग्यता से पूर्व बच्चों में तुलना कर पाने की योग्यता का होना अनिवार्य है। तुलना केवल दो वस्तुओं में की जाती है। इसमें दो वस्तुओं के बीच किसी विशिष्ट गुण जैसे- रंग, आकृति, आकार तथा वजन आदि के आधार पर संबंध स्थापित किया जाता है।
- तुलना संबंधी क्रियाएँ बच्चों को एक-एक की संगति को समझने में सहायक होती है। आप जानते हैं कि यह योग्यता गिनती का मूल आधार है। आगे वर्णित क्रिया जिसमें मात्रा की तुलना करना शामिल है, बच्चों को एक-एक की संगति को समझने में सहायक होगी। कुछ गत्ते या कोई भी अन्य सामग्री लें और दो समूहों में विभक्त करें ताकि एक समूह में चार गत्ते और दूसरे समूह में पाँच गत्ते हों। अब बच्चों से कौन से समूह में गत्ते ज्यादा हैं, यह बताने के लिए कहें। जो बच्चे गिन नहीं सकते हैं वे इस क्रिया को एक-एक की संगति के आधार पर करेंगे। यानी वे एक समूह के एक गत्ते को दूसरे समूह के एक गत्ते से मिलाएँगे और ऐसा करते करते यह देखेंगे कि कौन से समूह में गत्ते बचे रह गए। ऐसी क्रियाएँ 'उससे ज्यादा',' उससे कम ','कितनी 'और 'उसके जितनी' की अवधारणाओं को सुदृढ़ करते हैं।

क्रमबद्ध करने की क्रिया में प्रश्न यह होता है कि इसके बाद क्या आएगा?

क्रमबद्ध करने की क्रियाएँ आयोजित करते समय आप 'अंतिम', 'पहला', 'बीच में', 'पहले', 'बाद' और 'अगला' जैसे शब्दों का प्रयोग करेंगे इस प्रकार बच्चों में यें सभी अवधारणाएं विकसित होंगी। क्रमबद्धता संबंधी क्रियाएँ बच्चों को यह समझाने में भी सहायक होती हैं, कि वस्तुओं के गुण सापेक्षिक होते हैं। एक समूह में रखा जो बटन सबसे बड़ा हो सकता है। वही बटन दूसरे समूह के बटनों में सबसे छोटा हो सकता है। आकार के अनुसार क्रमबद्ध करने की क्रियाएँ 'उससे बड़ा', 'उससे लंबा', 'उससे छोटा' , 'सबसे बड़ा', 'सबसे छोटा' की अवधारणाओं को सुदृढ़ करने में सहायक होती हैं।

कारण और प्रभाव के संबंध को जानना-

- कारण और प्रभाव के संबंधों को जानने में सहायक क्रियाएँ कारण और प्रभाव को समझने की योग्यता सभी वैज्ञानिक जानकारियों और किसी भी प्रकार की जाँच का आधार होती हैं।
- जब शिशु पालने को हिलाने के लिए पैर मारते हैं या झुनझुनी को बजाने के लिए उसे हिलाते हैं तो वे यह दर्शाते हैं कि वे जानते हैं कि उनके द्वारा किए गए कार्य से परिणाम निकलता है। हालांकि इस अवस्था में बच्चे यह नहीं बता सकते कि कारण क्या है और प्रभाव क्या है। पर जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं वे कार्य, कारण प्रभाव को समझने लगते हैं।
- कक्षा में किसी घटना के कारण (कारणों) और प्रभाव (सुझावों) संबंधी चर्चा के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। वार्तालाप/चर्चा जो बच्चों को कारण तथा प्रभाव के बारे में बात करने के लिए और 'क्यों', 'क्या', 'कैसे', 'जैसे' प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करती है, बच्चों में कारण तथा प्रभाव की समझ को बढ़ाती है। उदाहरण के लिए, बच्चे जब पूछते हैं, "कपड़े कैसे सूखते हैं?" ऐसी स्थिति में आप दो प्रकार से अनुक्रिया दिखा सकते हैं। पहला, आप सीधा उत्तर दें कि कपडे धूप से सूख गए। दूसरा, आप बच्चे को स्वयं उत्तर खोजने के लिए प्रोत्साहित करें और उनके प्रश्न के उत्तर में स्वयं प्रश्न पूछें- 'तुम बताओ, कपड़े कैसे सूखते हैं।'

आकृति पहचाना

- कुछ ऐसी खेल क्रियाएँ हैं, जिन्हें आप आकृति की अवधारणा को सुदृढ़ करने हेतु आयोजित कर सकते हैं। पहले हमने अपेक्षाकृत सरल क्रियाओं को सूचीबद्ध किया है। धीरे-धीरे हम सरल से अपेक्षाकृत छोटी क्रियाओं की ओर अग्रसर होंगे। शुरुआत विभिन्न आकृतियों को मिलाने संबंधी क्रियाओं से करें।
- प्रारंभ में आकृति के नाम बताने की आवश्यकता नहीं है। बच्चों से कहें "समान दिखने वाले पत्तों को ढूँढो" या कपड़े का एक टुकड़ा दिखाते हुए कहें- इस ढेर में से इस कपड़े के टुकड़े की आकृति के जैसे और टुकड़े छाँटो।
- जब बच्चे उपर्युक्त प्रकार की क्रियाओं को करने में सक्षम हो जाएँ, तो अपेक्षाकृत जटिल क्रियाओं की ओर अग्रसर हो। विभिन्न आकृतियों की वस्तुओं को अलग-अलग समूहों में रखें और बच्चों से उनके समूहीकरण के आधार के बारे में पूछें। अर्थात्, उनसे पूछें कि प्रत्येक समूह में आकृतियाँ इकट्ठी क्यों रखी गई है।

आकार संबंधी अवधारणा

- प्रारंभ में बच्चे 'लंबा', 'छोटा', 'ऊँचा', नाटा', 'बड़ा' जैसे शब्दों का प्रयोग तो करते हैं, परंतु 'उससे लंबा', 'उससे छोटा', 'उस से ऊंचा', 'सबसे लंबा' या 'सबसे छोटा' जैसे तुलनात्मक शब्दों का प्रयोग नहीं करते बच्चों के लिए ऐसी खेल क्रियाओं की योजना बनाएँ, जिसमें दो वस्तुओं में तुलना सम्मिलित हो। ऐसी क्रियाएँ लंबे और छोटे, पतले और मोटे, छोटे और बड़े, गहरे और उठने की अवधारणा विकसित करने में सहायक होगी।
- जब बच्चे इन शब्दों से परिचित हो जाएँ तो ऐसी खेल क्रियाएँ प्रस्तुत करें। जिनमें दो से अधिक वस्तुएँ शामिल हों। मिलान करने की ऐसी खेल क्रियाएँ आयोजित करें, जिसमें बच्चों को वस्तुओं के ढेर में से 'इस छड़ी जितनी लंबी सभी छड़ियाँ', 'इस प्याले जितने बड़े सभी प्याले' ढूंढना आता हो। जब यह मिलान करें तो बच्चों द्वारा छोड़े गए प्यालों, छड़ियों की आपके द्वारा दिए गए नमूने, प्याले, या छड़ी के साथ तुलना करते हुए, 'इससे लंबी', 'इससे छोटी', 'सबसे लंबी', 'सबसे छोटी' जैसे शब्दों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करें।

संख्या संबंधी अवधारणा

मिलाने, वर्गीकरण करने, क्रमबद्ध करने और वस्तुओं को एक-एक की संगति में रखने की योग्यता संख्या की अवधारणा को विकसित करने का मूल आधार है।

एक-एक की संगति को समझना

एक शिक्षक ने एक लाइन में 10 कंकड़ रखें और मीना से कहा कि उन्हें हाथ लगाकर गिनते हुए बताएँ कि ये कितने कंकड़ हैं। उसने तीन बार गिना और तीनों बार अलग-अलग संख्या बताई इसका कारण था, मीना कंकड़ गिनते हुए या तो एक कंकड़ को छोड़ देती या एक कंकड़ को दो बार गिन लेती थी। कभी-कभी बच्चे प्रत्येक पत्थर को छूने और गिनने के पश्चात भी गिनती बोलना जारी रखते हैं जो बच्चे ऐसी गलतियाँ करते हैं, असलियत में उन्हें एक-एक की संगति की समझ ही नहीं होती। अभी उन्होंने यह विचार ग्रहण नहीं किया है कि गिनने के दौरान प्रत्येक वस्तु को केवल एक बार ही गिनना है और किसी भी वस्तु को छुए बिना आगे नहीं बढ़ना है, प्रत्येक पत्थर को छूते हुए केवल एक ही संख्या बोलनी है। सही प्रकार गिन पाने से पहले बच्चों को एक-एक की संगति में वस्तुओं को रखने का अनुभव होना अनिवार्य है। एक-एक की संगति को समझने के लिए बच्चों के लिए 'कई', 'उससे अधिक', 'उससे कम' जैसे शब्दों के अर्थ की समझ होना आवश्यक है।

समय संबंधी अवधारणा

- शाला पूर्व बच्चे मिनटों, घंटों, सप्ताहों, महीनों या वर्षों के रूप में समय को नहीं समझते। वे वर्तमान, तात्कालिक भूत, और तात्कालिक भविष्य के बारे में बातचीत कर सकते हैं। उन्हें सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि कल (पिछले दिन) आज और कल (अगले दिन) की समझ होती है। उन्हें कुछ समय पहले घटित प्रमुख घटनाएँ भी याद रहती हैं- जैसे कोई रोचक यात्रा या दुर्घटना जिसमें उन्हें चोट लगी थी। कक्षा 1 तक आते-आते बच्चों को घटनाएँ लंबे समय तक याद रहती हैं और किस प्रकार घटनाएँ समय पर घटित होती हैं। इसकी बेहतर जानकारी विकसित होती है।
- बच्चों में भूत, वर्तमान और भविष्य की जानकारी विकसित करने के लिए आप कुछ काल्पनिक स्थितियों की रचना कर सकते हैं। मान लो सुबह का समय है बताओ, अब हम क्या करेंगे? जो बच्चों ने कल (पिछले दिन) किया और जो वे कल (अगले दिन) करेंगे इस पर बातचीत करें।
- गति की अवधारणा समय से जुड़ी हुई है। जैसे बच्चे समय को समझना प्रारंभ करते हैं, वे तेज और धीमी वस्तुओं की भी बात करते हैं। उनसे तेज चलने वाले और धीमे चलने वाले जानवरों /वाहनों के बारे में बातचीत करें। बच्चों को किसी निश्चित बिंदु तक पहले धीरे और फिर तेज गति से जाने के लिए कहें, उनसे पूछें, किस गति में कम समय लगता है।

स्थान संबंधी अवधारणा

वस्तुएँ स्थान घेरती हैं, दूर और पास, ऊपर और नीचे, एक सिरे से दूसरे सिरे तक और बाहर का अंदाजा लगाना, ये सभी स्थान की अवधारणा की जानकारी में शामिल हैं। कई बाहरी और भीतरी खेल जिनके दौरान बच्चों को दौड़ने, ऊपर चढ़ने, और कूदने के अवसर मिलते हैं बच्चों में स्थान की अवधारणा को विकसित करने में सहायक होती है इन क्रियाओं के अलावा आप "दूर" और "पास", "बाहर" और "नीचे" की जानकारी को सुदृढ़ करने से संबंधित विशिष्ट खेल क्रियाएँ आयोजित करें।

माप संबंधी अवधारणा

माप गणितीय अवधारणाओं का अभिन्न हिस्सा है। माप की जानकारी में तीन पहलू शामिल हैं-

- माप की इकाई जिसके आधार पर वस्तुएँ मापी जाती हैं उसकी समझ।
- यह जानकारी कि माप को इकाइयों की किसी संख्या के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।
- विभिन्न इकाइयों द्वारा लिए गए माप की तुलना करना संभव नहीं है। जैसे- यदि आप 16 कदम चलने का निर्देश दें, तो अलग-अलग लोग उन 16 कदमों में अलग-अलग दूरी तय करेंगे और यह इस बात पर निर्भर करेंगा कि प्रत्येक व्यक्ति के एक कदम का माप क्या है?
- ताकि विभिन्न मापकों की तुलना की जा सके, इसके लिए मानकीकृत इकाई का होना अनिवार्य है। तथापि माप के इन सभी पहलुओं को बच्चों को समझाने के लिए बच्चों को मापने के अनौपचारिक और

सहज अनुभव की आवश्यकता होती है। स्वयं बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करें कि इन सिद्धांतों को स्वयं खोजने के उन्हें अवसर मिले। उनके दैनिक क्रियाकलापों में बच्चों से आकार (जो कि माप का एक हिस्सा है) जानने की आशा की जाती है। जब अध्यापक उनसे कहते हैं, 'मुझे सबसे छोटी पेंसिल दो' या जब बच्चा कहता है, 'मैं उससे लंबा हूँ'। बच्चे वस्तुओं की तुलना करते हुए और उन्हें क्रम में रखते हुए किसी मानक इकाई के आधार पर उन्हें नहीं मापते, फिर भी वे वस्तुओं में परस्पर संबंध स्थापित करते हैं। माप के लिए इकाई की जरूरत होती है, बच्चों को यह तथ्य जानने में मदद के लिए आप निम्नलिखित क्रियाएँ आयोजित कर सकते हैं ।

- बच्चों से कमरे की लंबाई नापने के लिए कहें। इस लंबाई को नापने के लिए उनसे कहे कि वे कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक चलें और बताएँ कि कमरे की लंबाई मापने में उन्हें कितने कदम चलना पड़ा। इसी तरह वे खेल के मैदान ,रसोईघर और अन्य स्थानों को माप सकते हैं। कथनों के संदर्भ में माप को व्यक्त कर खेल के मैदान, रसोईघर इत्यादि की लंबाई की परस्पर तुलना कर सकते हैं।

संख्या ज्ञान

गणित की सारी अवधारणाएँ अमूर्त हैं, जिसमें अंक भी अमूर्त हैं और अंकों के माध्यम से गिनती बनाई जाती है। जब गिनती को किसी वस्तु के साथ जोड़ देते हैं तब हम उसे वस्तुओं की संख्या कहते हैं। जैसे- जब हम कहते हैं यहाँ तीन बोतलें हैं, इसका मतलब है यहाँ बोतलों की संख्या 3 हैं। और जब हम उस गिनती को किसी वस्तु के साथ नहीं जोड़ते, तब वह केवल संख्याक होता है। जैसे-15 बोलने पर यह केवल एक संख्या है। यदि 15 केले कहें, तो 15 केलो की संख्या है। संख्या वास्तविक वस्तुओं से जुड़ीं होती है। अंक गणित में अंकों की संख्या 10 है। 0 से 9 तक उन्हीं के माध्यम से संख्याओं का निर्माण होता है। जब हम उन्हें अवयव के रूप में उपयोग करते हैं तो वह संख्या है।

गणित सीखने का क्रम-

मूर्त- ठोस वस्तुओं से।

अर्धमूर्त - चित्रों से।

अमूर्त –संख्याओं से।

संख्या ज्ञान के अंतर्गत वो अवधारणाएँ शामिल हैं जिन्हें शुरुआती सालों में बच्चों के लिए सीखना अनिवार्य है, जैसे -आकृति पहचान, रंगों की पहचान, स्थानीय समझ, आँकड़ों को पहचानना, पैटर्न को पहचानना व बनाना आदि। ये सभी अवधारणाएँ अक्सर हमारे दैनिक जीवन में प्रयोग होती हैं जैसे- कुछ वस्तुओं की गिनती करना, वस्तुओं के आकार की समझ जैसे- छोटा-बड़ा, किसी वस्तु का स्थान समझना जैसे दूर-पास आदि।

यह महत्त्वपूर्ण है कि इससे पहले कि बच्चे वस्तुओं को गिनना शुरू करें या संख्याओं की समझ विकसित करें, वे वर्गीकरण करने, क्रम देने, (एक एक करके वस्तुओं को गिनना) और संख्याओं के नाम जानने में सक्षम हो। तब हम बच्चों को संख्या पहचान के साथ साथ गिनना, जोड़ना घटाना सिखा सकते हैं। इसके लिए विभिन्न गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं।

1. एक से पाँच के क्रम में गिनना, चित्र की संख्या के अनुसार बॉक्स में गोल बनाएँ।
2. चित्रों को गिनो और अंक के साथ मिलाओ।

3. चित्रों को गिनों और लिखो।

4. चित्र में जितनी संख्या हैं उतनी ही बिंदी बनाएँ।

5. संख्या में रंग भरो।

6. चित्र और अंकों की जोड़ियाँ मिलाओ।

7. गिनो और लिखो।

8. एक-एक जोड़ना और आगे बढ़ना।

9. एक एक घटाओ और लिखो।

10. ठीक पहले और ठीक बात की संख्या बताना।

पर्यावरण जागरूकता और वैज्ञानिक सोच के विकास के लिए गतिविधियाँ-

बच्चे प्राकृतिक जिज्ञासा और दुनिया की व्याख्या करने और प्रतिक्रिया देने की जन्मजात क्षमता के साथ पैदा होते हैं। यह प्रत्यक्ष अनुभव और भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण के साथ बातचीत के माध्यम से मजबूत होता है। जब वे वयस्कों के साथ संवाद करते हैं या अपने आसपास के माहौल में बातचीत करते हैं तो उनकी शुरुआती शिक्षा मजबूत होती हैं। बच्चों को अवधारणाएँ बनाने में मदद करने में भाषा भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तुलना के आधार पर मिलान, क्रम या वर्गीकरण जैसे संज्ञानात्मक कौशल, अवधारणाओं को परिष्कृत करने और बच्चों को उच्च क्रम के संज्ञानात्मक ज्ञान के लिए एक ठोस आधार बनाने में मदद करते हैं। ये महत्वपूर्ण सोच, तार्किक, स्मृति और समस्या समाधान को बढ़ावा देतें हैं, जो आधुनिक सोच विकसित करने के आधार हैं। ये बाद में एक विषय के रूप में पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.) सीखने में मदद करतें हैं। ग्रेड- I और II में पर्यावरण अवधारणाओं को भाषा और गणित के साथ एकीकृत किया जाता है।

बाहरी खेल-

बच्चों को कम से कम 30 मिनट के लिए दैनिक आउटडोर(बाहरी खेल) खेल में शामिल होने का अवसर दिया जाना चाहिए। इससे उन्हें पर्यावरण का पता लगाने, समूहों में खेलने, एक दूसरे के साथ बातचीत करने और बड़ी मांपेशियों के समन्वय को विकसित करने में मदद मिलती है। आउटडोर खेल और गतिविधियों के मुक्त विकल्प जैसे -चढ़ाई या खेल के मैदान के उपकरण के साथ खेलना, संरचित गतिविधियों जैसे शारीरिक गति और संतुलन, और व्यावहारिक गतिविधियों जैसे- बागवानी खुदाई और रोपण आदि हो सकते हैं।

बाहरी खेल के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

• सुनिश्चित करें कि खेल क्षेत्र साफ और सुरक्षित है।

• सुनिश्चित करें कि बाहरी खेल सामग्री या उपकरण सभी बच्चों के लिए पर्याप्त है।

• आउटडोर खेल के दौरान समूह बातचीत के अवसरों की योजना बनाएँ।

• स्वयं शामिल हों और बच्चों के साथ खेलें।

• सभी बच्चों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें।

• अगली गतिविधि के लिए एक गीत या संकेत के साथ गतिविधियों को बदलें।

मुख्य सत्र : 6. कला, रचनात्मक और सौन्दर्य विकास

प्रशिक्षण की योजना :

मुख्य सत्र : पर्यावरण जागरूकता और वैज्ञानिक सोच के विकास के लिए गतिविधियाँ

मुख्य सत्र का नाम - पर्यावरण जागरूकता एवं वैज्ञानिक सोच कला, रचनात्मक और सौंदर्य विकास

उद्देश्य :-

1. वैज्ञानिक सोच विकसित कर पाएँगे।
2. अपने आसपास के पर्यावरण के बारे में जान पाएँगे।
3. रचनात्मक गतिविधियों को जान पाएँगे।

गतिविधि का नाम	समय	प्रक्रिया	आवश्यक सामग्री
स्वयं एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता		**बड़े समूह से चर्चा-** 1. प्रतिभागियों से प्रश्न करेंगे। 2. अपने पंसदीदा चींजों के नाम बताना। जैसे- उनकी रुचि, रंग, फूल, फल, पेंड़ आदि। 3. प्रयोग करना-कौन तैरेगा कौन नहीं, कौन घुलेगा कौन नहीं।	कंकड़ ,मिट्टी, कागज, पेन, नमक, शक्कर, पत्ती, लकड़ी
रचनात्मक कार्य		**छोटे समूह से चर्चा-** 1. प्रतिभागी को कुछ चित्र बनाने को देंगे जैसे- हाथी, मछली। उस पर पेपर कटिंग चिपकाने के लिए कहेंगे। 2. एक फूल का चित्र देकर उसमें रंग भरने के लिए कहेंगे। 3. क्ले/मिट्टी से खिलौने बनाना। 4. गतिविधि पुस्तक की कुछ गतिविधियों पर चर्चा। 5. प्रशिक्षक द्वारा अंतिम प्रस्तुतीकरण।	शिक्षक संदर्शिका , गतिविधि पुस्तिका की पुस्तक, पेपर कटिंग, रंगीन पेंसिल, क्ले/मिट्टी

रचनात्मक और सौंदर्य विकास के लिए कला और शिल्प गतिविधियाँ

- नाटक, गीत, नृत्य, कला और शिल्प के माध्यम से रचनात्मक और सौंदर्य बोध का विकास बच्चों में रचनात्मकता को बढ़ावा देने में मदद करता है। ये गतिविधियाँ उन्हें अपनी भावनाओं को और संचार-कौशल विकसित करने के अवसर प्रदान करती हैं। ये मोटर कौशल को विकसित करने, अभ्यास करने और सुधारने में भी मदद करता है, और चीजों को देखने के नए तरीके ढूँढती हैं। ये आगे बच्चों के आत्मविश्वास का निर्माण करती हैं और निर्णय लेने, समस्या को सुलझाने और महत्वपूर्ण सोच क्षमताओं का करने का प्रदान करती हैं। रचनात्मक और सौंदर्य सबंधी गतिविधियाँ कल्पना को बढ़ावा देती हैं। यह एक महत्वपूर्ण लेखन-पूर्व कौशल है। बच्चों को रेत/मिट्टी के खेल, पानी के खेल, चित्रकारी, कोलाज बनाने, कागज फाड़ने ,काटने ,चिपकाने आदि के अवसर प्रदान करना महत्वपूर्ण है। इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलेगी कि वास्तविक जीवन की वस्तुओं और घटनाओं को विभिन्न तरीकों से दर्शाया जा सकता है। कला और शिल्प का काम दीवारों पर उनकी आँखों के स्तर पर या एक मेज पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए। यह उन्हें उस गतिविधि को याद रखने में मदद करता है और उन्हें प्रोत्साहित करता है और उन्हें अधिक भागीदारी के लिए प्रेरित करता है। यह आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके काम को महत्व दिया जाता है।

- सभी बच्चे कलात्मक ज्ञान के साथ स्कूल आते हैं। बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्ति के प्रत्येक चरण को प्रोत्साहित करने में शिक्षक की भूमिका होती है। क्या शिक्षक इसका निर्वाह कर रहे हैं?क्या शिक्षक बच्चों के स्वभाव, अनुभव, भावनात्मक व बौद्धिक विकास के अनुरूप उनकी विशेष जरूरतों को पहचानते हैं, उनका सम्मान करते हैं, कला के अवसर रचते हैं? क्या हम अपने बच्चों के सांस्कृतिक संदर्भों को समझते हैं ?

- कला व्यक्तियों के माध्यम से समाज का निर्माण है। कला पर्यावरण से संबंधित है और प्राकृतिक संसाधन, सांस्कृतिक साधनों की नींव है। हमारे समाज में लोक -व्यवहार की शिक्षा का प्रचार-प्रसार कला की विभिन्न विधाओं के द्वारा सैकड़ों वर्षों से होता आ रहा है। इन विधाओं के द्वारा नैतिक शिक्षा ,सामाजिक मूल्य और उत्तम आचरण जैसे- गंभीर अध्यापन बिंदु बड़ी सरलता से और सहजता से प्रदर्शित किए जाते रहे हैं। ये विधाएँ समाज में शिक्षा का प्रसार करती हैं ।

- पूर्व प्राथमिक स्तर- पूर्व प्राथमिक स्तर पर कला माध्यम से शिक्षा देने का उद्देश्य मुख्यतः बच्चों में पाँचों इंद्रियों को विकसित करना है। आनंद की अनुभूति एवं परिवेश के प्रति बच्चो को संवेदनशील बनाना भी उद्देश्य होना चाहिए। इसलिए बच्चों को रंग, रोल-प्ले, मिट्टी, नृत्य, रेखांकन आदि की ओर आकर्षित करवाना होगा। उनकी रूचि के अनुसार उन्हें ताल, लय, ध्वनि के साथ संगत करने हेतु प्रोत्साहित करना होगा एवं सहायता भी देनी होगी। स्व-अनुभूति विकसित हो जाने पर उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अधिक सहजता से कार्य करने लगते हैं।

इस स्तर पर बच्चे की स्वस्फूर्त गतिविधियों को प्रोत्साहित करना होगा ,बच्चों को खेलने के अवसर देने होंगे जिससे उनकी सृजनात्मकता का विकास हो। उनकी मौलिक रचना को प्रोत्साहित कर उनमें आत्मसम्मान बढ़ाने में सहायता करनी होगी। इस बात का ध्यान रखना होगा कि उपलब्ध संसाधन बच्चों की पहुँच में हो, जिससे वे प्राकृतिक परिवेश के साथ-साथ मानव निर्मित वस्तुओं के प्रति भी जिज्ञासु बनें।

पूर्व प्राथमिक स्तर पर कहानियों के माध्यम से परिवेश का परिचय बच्चों को दिया जा सकता है। कहानी का चयन इस प्रकार हो कि वे स्वयं को उसका एक पात्र समझकर अभिभूत हो सकें।

- प्राथमिक स्तर-बच्चों के व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास मे योगदान देना कला समेकित शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। इस स्तर पर कला को सभी विषयों के साथ जोड़ें जाने के प्रयास करने होंगे। चित्रों के रंग, कविता के लयबद्ध और परिवेश मे उपस्थित प्राकृतिक रंगों के बोध आदि के लिए अभिव्यक्ति के अवसर उपलब्ध करवाने होंगे। यह भी महत्वपूर्ण है कि बच्चे परिवेश के प्रति संवेदनशीलता को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकें। यहाँ उनका परिचय स्थानीय लोक कलाओं से भी करवाना चाहिए जिसके लिए परिवेश में उपलब्ध कलाओं के प्रति निरीक्षण और अन्वेषण को बढ़ावा देना होगा। साथ ही स्थानीय परिवेश प्रचलित कविता, गीत, नृत्य आदि के साथ अभिनय करने के मौके देने चाहिए।

रचनात्मक कार्य की कुछ गतिविधियाँ जो स्कूल रेडीनेस विद्या आनंद अभ्यास पुस्तिका में शामिल किया गया है जो इस प्रकार है-

1. चित्र पर कागज के टुकड़े चिपकाओ।

2. पेंसिल फिराओ और रंग भरो।

3.चित्रों में रंग भरो।

4.दिए गए चित्रों को ट्रेस करो और रंग भरो।

5.बिंदु मिलाकर चित्र पूरा करो।

6. खाली जगह पर अपने और दोस्त के हाथ से छपाई कर फ्रेंडशिप ट्री बनाएँ।

खेलें-कूदें, नाचें-गाएँ,

कागज की नाव बनाएँ।

खेल-खेल में हमें सिखाएँ।

अध्याय-3 स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम का नियोजन और क्रियान्वयन

प्रशिक्षण की योजना

मुख्य सत्र का नाम- स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम का नियोजन एवं क्रियान्वयन

सत्र का उद्देश्य- 1. स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम की नियोजन की समझ बनाना।

2. स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम के क्रियान्वयन की समझ बनाना।

3. दैनिक व साप्ताहिक समय सारिणी की समझ बनाना।

सत्र का नाम	गतिविधि	समय	प्रक्रिया	आवश्यक सामग्री
1. साप्ताहिक समय सारिणी 2. दैनिक शिक्षण योजना	स्कूल रेडीनेस विद्या आनंद अभ्यास पुस्तिका में दिए गए दिशा निर्देश को साझा करेंगे।	50 मिनट	चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से सत्र की शुरुआत करेंगे।	स्कूल रेडीनेस विद्या आनंद अभ्यास पुस्तिका, पी.पी.टी. स्लाइड, गतिविधि पुस्तिका

मुख्य अपेक्षाएँ- स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम के नियोजन में मदद मिलेगी।

साप्ताहिक समय सारिणी बना पाए।

दैनिक समय सारिणी बना पाए।

मुख्य सत्र का नाम- कक्षा प्रबंधन

सत्र का उद्देश्य- 1) कक्षा प्रबंधन के द्वारा बच्चों की उपस्थिति में वृद्धि करना।

2) कक्षा में सीखने की अधिकतम परिस्थितियों का निर्माण करना।

3) कक्षा में गतिविधि के दौरान आने वाली समस्याओं का समाधान करना।

सत्र का नाम	**गतिविधि**	**समय**	**प्रक्रिया**	**आवश्यक सामग्री**
प्रिंट रिच वातावरण एवं सामग्री का रख-रखाव	कक्षा में प्रिंट रिच वातावरण के लिए सीखने के चारों कोनो का सामग्री निर्माण	50 मिनट	सीखने के चारों कोनों के सामग्री निर्माण के लिए प्रतिभागी को दिशा-निर्देश देंगे सामग्री के रख रखाव हेतु चर्चा की जाये।	ड्राइंग शीट, मार्कर, कलर पेंसिल, सफ़ेद कागज, टेप

अपेक्षाएँ- 1.कक्षा-कक्ष का प्रबंधन शिक्षक बेहतर ढंग से कर पाएँगे।

2. सामग्रियों का उचित रखरखाव कर पाएँगे।

3. कक्षा कक्ष को प्रिंट रिच वातावरण बना पाएँगे।

4. कक्षा कक्ष के लिए अन्य सामग्री निर्माण कर पाएँगे।

मुख्य सत्र का नाम- आकलन एवं मूल्यांकन

उद्देश्य- 1.आकलन एवं मूल्यांकन के महत्व को समझना।

२. आकलन एवं मूल्यांकन के माध्यम से बच्चों की अभिव्यक्ति और उनकी क्षमता का मापन करना।

3. आकलन एवं मूल्यांकन बच्चों के सीखने की जरूरतों को समझना।

4. आकलन एवं मूल्यांकन के माध्यम से बच्चों के दक्षता को बढ़ाना।

सत्र का नाम	गतिविधि	समय	प्रक्रिया	आवश्यक सामग्री
आकलन एवं मूल्यांकन	समूह में बनाकर प्रतिभागियों से प्रश्न के आधार पर चर्चा	50 मिनट	प्रतिभागियों को समूह में बाँटेंगे प्रत्येक समूह को एक- एक प्रश्न देकर समूहवार चर्चा आयोजित करेंगे प्रश्न इस प्रकार हो सकते हैं- • क्या आपके बच्चों के कार्य करने की गति अलग अलग अलग है?आप कैसे बता सकते हैं? • क्या आपको ऐसा लगता है की कुछ बच्चे अपना कम दिये गये समय में पूरा नहीं कर पाएंगे तो आप उनकी किस प्रकार से सहायता करेंगे? नोट- प्रशिक्षक और भी ऐसे प्रश्न स्वयं तैयार कर सकते हैं। गतिविधि पुस्तिका में सलंग्न आकलन प्रपत्र प्रदर्शित कर प्रत्येक बिंदु पर चर्चा।	पी.पी.टी. स्लाइड, पेपर, स्केच पेन/पेंसिल, चार्ट पेपर, आकलन प्रपत्र

अपेक्षाएँ-

1. आकलन एवं मूल्यांकन के महत्व को समझ पाएँगे।

2. इसके मध्यम से बच्चों की क्षमताओं का विकास कर पाएँगे।

3. आकलन प्रपत्र के बिंदुओं को समझ पाएँगे तथा आवश्यकतानुसार प्रपत्र का उपयोग कर सकेंगे।

स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम की कार्ययोजना :-

- बच्चों के साथ लक्ष्य आधारित गतिविधि का चयन करें।
- बच्चों के साथ गतिविधि नियमित तौर पर करने के लिए साप्ताहिक योजना बनाएँ।
- गतिविधि के माध्यम से बच्चों के साथ 3 से 4 घंटे जुड़कर बच्चों की समग्र विकास की प्रक्रिया में कार्य करेंगे।
- गतिविधि में सभी बच्चों को शामिल करें। बच्चों के साथ 30-35 मिनट की गतिवधि करें।
- बच्चों के साथ गतिविधि करते समय शिक्षक सहभागी बनें।
- साप्ताहिक योजना के तहत सभी बच्चों को सामग्री से जुड़ने के लिए मदद करें, साथ ही सीखने की प्रकिया में बच्चों के साथ जुड़ने का प्रयास करें।
- गतिविधि कराते समय गतिविधि से जुड़ी योजना शिक्षक द्वारा क्रियान्वित की जाएगी।
- बच्चों के सीखने के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करें। प्रतिदिन दैनिक क्रिया (नियम चार्ट)-(बच्चों के साथ अभिवादन, मुक्त खेल, गणितीय गतिविधियाँ, पर्यावरणीय एवं विज्ञान, भोजन अवकाश, मौखिक भाषा लेखन, बाहरी खेल, अलविदा समय) के आधार पर बच्चों को सिखाने की कोशिश करें। जैसा की दैनिक समय सारिणी में प्रदर्शित है।
- प्रयोग गतिविधि कि माध्यम से बच्चों के रुचि लेने वाले क्षेत्र को समझने/जानने की कोशिश करें।
- गतिविधि के माध्यम से बच्चों में रुचि निर्माण का कार्य भी करें, ताकि बच्चों के सीखने में रुचि निर्माण हो और केंद्र में बच्चों की संख्या बढ़ने में भी मदद मिल सके।
- बच्चों को खुशनुमा माहौल देने के लिए रुचि के अनुसार गतिविधि को प्राथमिकता दें।
- गतिविधि के माध्यम से बच्चों को अधिक सीखने का माहौल दिया जाए और अपने परिवेश से जोड़ने का प्रयास करें।

गतिविधि पुस्तिका के उपयोग हेतु सामान्य दिशा निर्देश:-

1. लक्ष्य आधारित कार्य की शुरुआत करने के पूर्व कार्यपुस्तिका को पहले पढ़ लें।
2. हर दिन कक्षा खत्म होने के बाद उस दिन की गतिविधियों के बारे में बातचीत करें और अगले दिन की योजना बनाएँ।
3. हर गतिविधि के लिए किस तरीके की सामग्री की आवश्यकता होगी, इस पर चर्चा की जाए और आवश्यक सामग्री भी एकत्रित कर लें।
4. मैदानी खेल के लिए बच्चों को मैदान में अनिवार्यतः ले जाकर गतिविधि कराएँ।
5. कक्षा-कक्ष में कार्यपुस्तिका में दिए गए गीत, कहानी के पोस्टर बच्चों की पहुँच में लगाएँ।
6. कार्यपुस्तिका में दिए गए कौशल, सीखने के प्रतिफल एवं दिशा-निर्देश को ध्यान में रखते हुए कार्ययोजना बनाएँ।

साप्ताहिक समय सारिणी- मॉडल

बच्चों के समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए बच्चों के साथ जुड़ने का उद्देश्य यह है कि, अभ्यास पुस्तिका में दिए गए कविता द्वारा बच्चे, कूदना, उछलना और दौड़ना सीखेंगे। साथ ही उनमें स्थान बोध जैसे-मेले की सैर, कविता, कहानी आदि की समझ उत्पन्न होगी। बच्चों में भाषाई एवं रचनात्मक विकास जैसे-कविता पर आधारित चित्रों को बनाने से बच्चों का सूक्ष्म गत्यात्मक विकास होगा।

साप्ताहिक समय सारिणी

सत्र का नाम	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
-स्वागत एवं अभिवादन **-स्वच्छता जाँच** **30 मिनट**	स्वागत- हाथ मिलाकर/बच्चों से बातचीत कर/सामान्य दिनचर्या के प्रश्न पूछकर स्वच्छता जाँच- बाल, नाख़ून, कपड़ों की स्वच्छता, स्वच्छ दिखने वाले बच्चों के लिए ताली बजवाना स्फूर्तिदायक क्रियाएँ, (गतिविधि - शेर जी-शेर जी, अंदर कूदो बाहर कूदो, रुमाल झपट्टा, प्यारी पूसी) टीप - शिक्षक बच्चों की रूचि एवं स्थानीय सामग्री की उपलब्धता के आधार पर अन्य गतिविधि करवा सकते है					पालकों से संपर्क बाग-बगीचों के काम, व्यायाम, स्वच्छता पर बातचीत, बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए अवसर तैयार करना, समय-समय पर बच्चों को पुरस्कृत करना, सप्ताह भर की गतिविधियों का
उछल-कूद एवं मुक्त खेल 30 मिनट	खेल में सहभागिता - खेल कोना, भाषा कोना, रचनात्मक कोना, संख्यात्मक एवं पर्यावरण कोना	अलग-अलग जानवरों का नाम जोड़ते हुए कविता की गतिविधि	Let's play	काँव-काँव, पक्षियों की आवाज निकालना	कंचा/सिक्का डालो खेल, मोती पिरोना	
संख्यात्मक, पर्यावरण जागरूकता और वैज्ञानिक सोच (शिक्षक की पल पर) **30-35 मिनट**	दृष्टि बोध पेंसिल फिराओ और रंग भरो, घटना का क्रम बताओ	ध्वनि की जागरूकता के लिए गतिविधि	स्पर्श की अनुभूति- कौन खुरदुरा कौन चिकना गतिविधि ठंडा-गरम/नरम-कठोर संबंधी	गंध की अनुभूति- प्याज, लहसुन, धनियाँ की गंध आदि सब्जियों के साथ एवं फूलों की गंध आदि की जाँच गतिविधि करें	स्वाद की अनुभूति- स्वाद को जाने एवं आओ कविता दुहराएँ	

रचनात्मक और सौंदर्य विकास/खेल कूद का विकास एवं कला गतिविधियाँ 30-35 मिनट	कागज से नाव, हवाई जहाज, कागज के फूल (पेपर क्राफ्ट), देखो और पूरा करो	पत्ती और अँगूठे का पैटर्न	आकृति में Wrappers के टुकड़े चिपकाना	नमूने एकत्र करना एवं उनसे विभिन्न आकृतियाँ बनाना	मिट्टी के खिलौने बनाना, चित्र उकेरना	अवलोकन कर आकलन हेतु आकड़ें
भोजन अवकाश 30 मिनट						
भाषा और साक्षरता कौशल (शिक्षक ने बड़े समूह की शुरुआत की) 30-35 मिनट	चित्रों पर बातचीत मेले की सैर और कविता कहानी का उपयोग (शिक्षक अपने अनुभव का उपयोग करें)	बाग एवं बगीचों की सैर, स्कूल परिवेश का भ्रमण, खेत की सैर	हाव-भाव के साथ गीत भावों को पहचानकर मिलान करो गतिविधि, परिवेश में उपलब्ध आकृतियों पर बातचीत	एक जैसे ध्वनि वाले वर्णों पर गोला लगाना, पेंसिल फिराओ	भाषा का अर्थ पूर्ण उपयोग- वर्णों को जोड़कर पढ़ो और लिखो समान आकृतियों को मिलाओ, चित्र देखकर लिखो	
कक्षा के बाहर के खेल (शारीरिक खेल) 30-35 मिनट	रस्सा खीँच, खो-खो, मैदान में दौड़ना, कूदना	चम्मच दौड़, जलेबी दौड़ आदि	झुला झुलना, कुर्सी दौड़, लुका छुपी	नदी पहाड़, रस्सी कूद, चक्का फेक, रिंग फेक	रिले रेस एवं दौड़ से संबंधित खेल	
अलविदा समय 30-35 मिनट	• शिक्षक को बच्चों को अगले दिवस की गतिविधियों के लिए तैयार करना चाहिए। • शिक्षक को बच्चों से उस दिन की गई गतिविधियों को फिर से याद करने में मदद करनी चाहिए। • स्व-नियमन की जानकारी दी जानी चाहिए जैसे- क़तार में खड़े हो जाओ, निश्चित दूरी में खड़े हो, घेरा बनाओ आदि। • बच्चों ने उस दिन क्या किया? उसे माता-पिता (अभिभावक) के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।					

दिन - सोमवार

सत्र का नाम	अभिवादन समय 30 मिनट	स्वत्रंत/ मुक्त खेल (छोटे समूह) 30 मिनट	संख्यात्मक एवं पर्यावरण जागरूकता 30-35 मिनट	रचनात्मक एवं कलात्मक गतिविधियाँ 30-35 मिनट		भाषा एवं साक्षरता कौशल 30-35 मिनट	बाह्य शारीरिक खेल 30-35 मिनट	अलविदा समय 30 मिनट
सोमवार	स्वागत- हाथ मिलाकर/बच्चों से बातचीत कर/सामान्य दिनचर्या के प्रश्न पूछकर स्वच्छता जाँच- बाल, नाख़ून, कपड़ों की स्वच्छता, स्वच्छ दिखने वाले बच्चों के लिए ताली बजवाना स्फूर्तिदायक क्रियाएँ, (गतिविधि - शेर जी-शेर जी, अंदर कूदो बाहर कूदो, रुमाल झपट्टा, प्यारी पुसी) टीप - शिक्षक बच्चों की रूचि एवं स्थानीय सामग्री की उपलब्धता के आधार पर अन्य गतिविधियाँ करवा सकते हैं।	खेल में सहभागिता - खेल कोना, भाषा कोना, रचनात्मक कोना, संख्यात्मक एवं पर्यावरण कोना	दृष्टि बोध पैंसिल फिराओ और रंग भरो, घटना का क्रम बताओ।	बच्चों के द्वारा कागज से नाव, हवाई जहाज, कागज के फूल (पेपर क्राफ्ट), देखो और पूरा करो।	भोजन अवकाश 30 मिनट	चित्रों पर बातचीत, मेले की सैर और कविता कहानी का उपयोग (शिक्षक अपने अनुभव का उपयोग करें)	रस्सा खींच, खो-खो, मैदान में दौड़ना, कूदना	• शिक्षक को बच्चों को अगले दिवस की गतिविधियों के लिए तैयार करना चाहिए। • शिक्षक को बच्चों से उस दिन की गई गतिविधियों को फिर से याद करने में मदद करनी चाहिए। • स्व-नियमन की जानकारी दी जानी चाहिए, जैसे- क़तार में खड़े हो जाओ, निश्चित दूरी पर खड़े हो, घेरा बनाओ आदि। • बच्चों ने उस दिन क्या किए उसे माता-पिता (अभिभावक) के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

शिक्षकों के लिए निर्देश :

- साप्ताहिक योजना में सभी गतिविधियाँ स्कूल रेडीनेस विद्या आनंद गतिविधि कार्यपुस्तिका में दिए गए लक्ष्यों पर आधारित बनाएँ।
- प्रत्येक दिन बच्चों के साथ गतिविधि के माध्यम से जुड़ना अनिवार्य है। प्रत्येक गतिविधि कुल 30-35 मिनट की लें।
- साप्ताहिक योजना का आधार लेकर दिए गए सत्र के नाम के आधार पर सभी मुद्दों को एक ही दिन में लेना अनिवार्य नहीं है। जैसे- भाषायी विकास में मौखिक, पठन, लेखन यह तीन बिंदु हैं, तो एक दिन मौखिक, दूसरे दिन पठन, और तीसरे दिन लेखन पर कार्य कर सकते हैं क्योंकि रचनात्मक गतिविधि में हम बच्चों को ज्यादा अवसर प्रदान करते हैं। चित्रकारी करना, कुछ बनाना इससे बच्चों के सूक्ष्म मांसपेशियों के लिए अवसर प्रदान करते हैं।
- बच्चों के साथ गतिविधि करते समय सबंधित गतिविधियों के आधार पर आवश्यक सामग्री का चयन करें।
- शिक्षक स्कूल रेडीनेस विद्या आनंद कार्यपुस्तिका के अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर उपलब्ध परिवेशीय सामग्री का उपयोग अवश्य करें।

सीखने का कोना

एक अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाने और बच्चों के लिए सामग्रियों को सुलभ कराने के लिए स्कूल में सीखने के कोनों को व्यवस्थित करना होगा। कक्षा-कक्ष को बक्से/अलमारियों की एक उपयुक्त व्यवस्था के साथ सीखने/गतिविधि के कोनों में विभाजित करेंगे। यह ध्यान में रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि, भौतिक-कक्षा का स्थान, बच्चों को प्रदान की गई सामग्री और उपयोग के साथ, सीखने के माहौल के अनुकूल हो। एक भौतिक स्थान को छोटे क्षेत्रों में विभाजित करेंगे, जहाँ बच्चे अपनी रुचि के अनुसार चीजों को प्राप्त कर प्रयोग कर सकते हैं और उनका उपयोग कर सकते हैं। सीखने का कोना कक्षा के भीतर का वह क्षेत्र हैं, जहाँ बच्चे गतिविधियों द्वारा विशिष्ट विषयों के बारे में सीखते हैं। खेल, सीखने का एक सक्रिय रूप है। जिसमें संपूर्ण आत्मसंतुष्टि शामिल है। कक्षा की स्थितियों के आधार पर और विषय के अनुसार सीखने के कोनों को कक्षा में बदलाव के आधार पर स्थापित किया जा सकता हैं। ये कोने बच्चों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों मे सक्रिय होने में मदद करते हैं।

सीखने का कोना बनाने में शिक्षकों की भूमिका-

1. शिक्षक कक्षा में कोनों को तार्किक रूप से व्यवस्थित कर सकते हैं।
2. कोनों के लिए आकर्षक सामग्री प्रदान कर सकते हैं।
3. नियमित रूप से सीखने के कोने से संबंधित अवसर प्रदान कर सकते हैं।

सीखने का कोना हम ऐसे बना सकते हैं :- कोने को नाम या लेबल लगाकर स्थापित किया जा सकता है तथा संबंधित कोने में आवश्यक सामग्री रख सकते हैं।

उदाहरण:-

- भाषा का कोना बनाने के लिए उस कोने में शिक्षक कहानी एवं कविता की किताबों की व्यवस्था कर सकते हैं, जिससे बच्चों का समूह उस कोने में मगन होकर कार्य करेगा।

- फर्श पर पेंट की सहायता से कोनों को विभाजित कर, कार्ड बोर्ड/पर्दे, सीमांकन/आबंटन कर स्थापित किया जा सकता है। इसी तरह सामग्री को स्थायी रूप से कोनों में स्थिर सेटअप के साथ व्यवस्थित किया जा सकता है।

1) भाषा और साक्षरता कोना (कहानी एवं चित्र किताब कोना)

भाषा एक ऐसा कौशल है जो शब्दों का वाक्यों में निरंतर उपयोग/मॉड्यूलेशन के साथ विकसित होता है। भाषा के विकास हेतु अवसर प्रदान करने के लिए हम बच्चों से बातचीत करते है और कहानियाँ सुनाते हैं। भाषा के कोने को इस प्रकार व्यवस्थित और उपयोगी बनाया जा सकता है कि छोटे बच्चों को किताबों को छूने, महसूस करने का अवसर मिले। पुस्तकों के संपर्क में आने पर, बच्चे पुस्तक को आगे और पीछे से पहचान करना शुरू करते हैं और सीखते हैं कि पृष्ठों को कैसे उलटना है। कक्षा में एक कहानी सुनाने के बाद यदि शिक्षक पुस्तक के कोने में किताब की एक प्रति छोड़ता है तो बच्चों के लिए कौतूहल का विषय होता है। इस प्रकार, बच्चों को पुस्तक को फिर से देखने में रुचि लेते है। क्योंकि वे समझने लगते हैं कि यह पुस्तक क्या है? बच्चों के लिए पुस्तकों के साथ बातचीत करना आवश्यक है, क्योंकि वे इस तरह के अनुभवों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के पूर्व साक्षरता कौशल हासिल करते हैं। जैसे- पुस्तकों में दिए गए विभिन्न प्रकार के चित्र,शब्द, कहानी, गीत, कविता, गणितीय अवधारणाओं से अवगत होते हैं।

शिक्षक की भूमिका

- अवसर बढ़ाने के लिए, बच्चों के साथ कहानी/निर्देशित बातचीत सुनाने के बाद कहानी/चित्र पुस्तक/फ्लैश कार्ड भाषा के कोने में रखें और बच्चों को उनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- यह बच्चों को आकर्षक छवियों को देखने और कहानी/बातचीत को अपने शब्दों में सुनाने में मदद कर सकता है।
- बिखरे हुए किताबें/फ्लैश कार्ड को क्रम में रखने एवं उसपर बातचीत करने का अवसर प्रदान करें ।

सामग्री: स्टोरीबुक्स, पिक्चर बुक्स, बातचीत के लिए चार्ट्स, स्टोरी/फ्लैश कार्ड्स और न्यूजपेपर कटिंग्स इत्यादि।

टीप:- बच्चों में रुचि बनाए रखने के लिए हर 15 दिनों में सामग्री को बदलना आवश्यक है।

2) **संख्यात्मक कोना**

ब्लॉक के साथ खेलते हुए बच्चे, आकार और रंगों के बारे में जानने लगते हैं। वे ब्लॉकों की तुलना कर सकते हैं, उन्हें कुछ आकृतियों (जैसे- रेल्वे ट्रैक) में व्यवस्थित कर सकते हैं या विस्तृत त्रि-आयामी संरचनाएँ बना सकते हैं। ब्लॉक बच्चों को रचनात्मक तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करते हैं क्योंकि वे विभिन्न प्रकार की संरचनाएँ बनाते हैं। इसके अलावा, कभी-कभी बच्चे सामूहिक रूप से एक संरचना का निर्माण करते हैं, जिससे उन्हें एक-दूसरे के साथ संवाद करने और एक समूह के रूप में काम करने की आवश्यकता होती है।

उदाहरण:- गणित हमारे जीवन का आवश्यक घटक है। हमने देखा है कि बच्चे अक्सर अपने दैनिक जीवन में गणित की अवधारणाओं का उपयोग करते हैं। जैसे- अधिक, कम, बड़ा, छोटा, आदि।

सामग्री:- इस कोने में विभिन्न रंगों, आकृतियों और आकारों के ब्लॉक होने चाहिए। पहेलियाँ, मिलान-कार्ड, थ्रेडिंग स्ट्रिंग्स और बीड्स को भी शामिल किया जाना चाहिए। छोटे खिलौने जैसे- कार, ट्रक, जानवर, लोगो की आकृति और अन्य खिलौने शामिल करें जो बच्चों के वर्तमान हितों और पर्यावरण से संबंधित हो। अंक लिखे बिंदु मिलाओ और रंग भरो गतिविधि, रास्ता ढूँढ़ो, मोती पिरोना।

3) रचनात्मकता का कोना

यह एक ऐसा कोना है, जहाँ बच्चे अपने दैनिक अनुभवों जैसे पारिवारिक बातचीत, खेती, उत्सव, अस्पताल आदि में देखे गए व्यवहारों की भूमिका निभाते है। बच्चे अपने अनुभव से स्कूल और उनके घर/सामुदायिक के बीच संबंध बनाते हैं। बच्चे अक्सर शिक्षक, माता-पिता, पुलिसकर्मी या डॉक्टर बनने का नाटक की भूमिका निभाते हैं, अर्थात् मूल चरित्र की भावना को समझने के लिए शिक्षक इस कोने का उपयोग करते हैं। शामिल हुए बच्चों को खेल सामग्री के साथ खेलने के लिए पूरी तरह से संलग्न करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अपने परिवेश में वे जो देखते हैं, उस भूमिका को निभाकर वे अपनी समझ को विकसित करते हैं। इससे बच्चों में समस्या समाधान और परिवेश को समझने का कौशल उत्पन्न होता है।

उदाहरण: डॉक्टर की भूमिका निभाना, बच्चों की देखभाल (गुड़िया), खाना बनाना, बाजार आदि।

सामग्री : किचन सेट, छोटी गुड़िया (गुड़िया के आकार का फर्नीचर), डॉक्टर सेट, किराना/सब्जी मॉडल, खाना-पकाने के बर्तन (व्यंजन, चम्मच आदि), भोजन (सब्जियों या मिट्टी से बने फल), ड्रेस-अप कपड़े (जैसे दुपट्टा) टोपी, चोटी, छोटी साड़ी, कपड़े के लंबे टुकड़े, कंघी और एक दर्पण आदि।

4) खेल कोना

स्कूल रेडीनेस विद्या आनंद पुस्तिका में दो प्रकार के खेलों को महत्व दिया गया है-

1. कक्षा के भीतर की गतिविधि- इसके अंतर्गत निम्न गतिविधियाँ करायी जा सकती हैं

- बिंदु मिलाना और रंग भरना
- ड्रॉइंग बनाना
- मोती पिरोना
- फाड़ना, उकेरना, मिट्टी के खेल,
- रास्ता ढूँढना
- चिड़िया उड़
- अक्कड़-बक्कड़ बंबे बो

- स्टोन पेपर सिजर
- अटकन-बटकन
- गोटा खेलना

सामग्री:- प्लास्टिक के खिलौने, रबर के खिलौने, चार्ट पेपर, मोती, धागे, कलर पैंसिल आदि।

2. कक्षा के बाहर की गतिविधि - बाहरी वातावरण की विशेषता यह है कि वह बच्चों को शारीरिक रूप से विकसित होने के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाती है एवं बच्चों को खेलने के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करती है।

बाहरी खेल उपकरण

सुरक्षित बाहरी स्थान की उपलब्धता के आधार पर यदि संभव हो, तो शिक्षक परिसर में बाहरी खेल उपकरण जैसे झूला, स्लाइडर देख-देखकर व्यवस्थित कर सकते हैं और अन्य विकल्प दो टायर को भी पेड़ से बाँधकर व्यवस्थित कर सकते हैं।

कक्षा के बाहर की गतिविधि:-

1. बचकर चलना
2. रस्सी खींचना
3. कूदो आर-पार
4. बॉल पकड़ो नाम बोलो
5. पिट्ठूल, खो-खो, गिल्ली डंडा, फुटबॉल
6. मिट्टी के खेल,
7. पौधे लगाना
8. कंचे का खेल
9. बिल्लस

दैनिक समय सारिणी चार्ट :-

ग्रीटिंग टाइम

अभिवादन समय संचार की वह क्रिया जिसमें व्यक्ति एक-दूसरे को अपनी उपस्थिति से अवगत कराते हैं और एक दूसरे के उपस्थिति को स्वीकारते हैं। अभिवादन के कई तरीके होते हैं। बच्चों में एक दूसरे के लिए सम्मान एवं अच्छी आदतों को वे आत्मसात करते हैं। स्कूल एक ऐसी जगह हैं जहाँ बच्चे इन सभी परिस्थितियों से अवगत होते हैं और बच्चे नियमित तौर पर सीखते हैं। अभिवादन से शिक्षक बच्चों को खुशी प्रदान करते है। ताकि बच्चे इन आदतों को अपने जीवन में आत्मसात करे।

ग्रीटिंग समय का बच्चों के लिए महत्व

बच्चे घर परिवार एवं समुदाय से स्कूल में आते हैं। कई बच्चे मानसिक रूप से सकरात्मक या नकारात्मक परिस्थति के साथ स्कूल में प्रवेश करते है या परिवेश से गुजरते समय ऐसी कई घटनाएँ घटती हैं। जिससे बच्चे के मन में डर, नकारात्मक भाव एवं असहज महसूस करने लगता है। बच्चों के मन से इस नकारात्मकता को निकालने के लिए एवं बच्चों को खुशी प्रदान करने के लिए अभिवादन एक माध्यम है। जिससे बच्चों को खुशहाली का माहौल देने का प्रयास करते हैं।

अभिवादन के तरीके

बच्चों को गोलाकार खड़े करवा लें प्रत्येक बच्चा अपना नाम बोलते हुए अपने बगल वाले बच्चे को **Hello, good morning,** नमस्ते आप कैसे हैं**?,** पूछें इसी तरह सभी बच्चे एक**-**दूसरे के साथ यह क्रिया करते हैं| कक्षा शुरू होने से पहले शिक्षक बच्चों का **"Greet and Meet"**अभिवादन**"** करते हैं**,** प्रार्थना करना बच्चों के मन:स्थिति को शांत करने में मदद करता है, ताकि बच्चे का यह दिन खुशनुमा जाए। यह बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण बेंचमार्क का काम करता है। बच्चे हमेशा सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं**,** जब शिक्षक हैलो तुम कैसे हो**?** पूछते हैं**,** शिक्षक उन्हें नाम से बुलाते हैं। इसके अलावा**,** जो शिक्षक व्यक्तिगत रूप से भी उनकी परवाह करते हैं**,** और शिक्षक की यही व्यक्तिगत रुचि बच्चों को कक्षा में बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है।

टीप- शिक्षक अपने विचार एवं सुविधानुसार कक्षा में बच्चों के साथ अभिवादन की रणनीतियाँ बना सकते हैं। अभिवादन से जुड़े कक्षा में कुछ पोस्टर या चित्र लगा सकते हैं।

1. सर्कल टाइम

बड़े समूह की गतिविधियों के दौरान कक्षा की व्यवस्था (जैसे- सर्कल टाइम) सुबह के सर्कल के समय, बच्चों के बीच पर्याप्त जगह छोड़ दें। इस तरह जो बच्चे देर से आएँगे वे आसानी से मंडली में शामिल हो सकेंगे और कम से कम व्यवधान के साथ गतिविधियों में भाग ले सकेंगे। इस दौरान बच्चे शिक्षक के साथ एक घेरे में बैठते हैं। सर्कल समय का उपयोग बच्चों को चर्चा में शामिल करने, किताब पढ़ने या गाने/तुकबंदी आदि गाने के लिए किया जा सकता है। एक मंडली में बैठने से सभी बच्चे एक-दूसरे के सामने रहते हैं। स्पष्ट रूप से सामना कर सकते हैं। इस सेटअप में बच्चे और प्रशिक्षक सभी एक दूसरे का सामना करते हैं, जो पूरी कक्षा के साथ-साथ व्यक्तिगत रूप से भी समर्थन कर सकते हैं। जब कक्षा में अधिक संख्या में बच्चे उपस्थित हों, तो हम डबल सर्कल बैठने की व्यवस्था का उपयोग कर सकते हैं, जो एक आंतरिक और बाहरी सर्कल है।

2. कक्षा/समूह गतिविधि व्यवस्था में दो घेरा

कक्षा में इस प्रकार के दो वृत्त आयु विशेष या समूह गतिविधियों के दौरान उपयुक्त होते हैं। यह शिक्षक को समान आयु/क्षमताओं/रुचि वाले बच्चों को छोटे समूह की गतिविधियों में संलग्न करने की अनुमति देता है। इस तरह की व्यवस्था शिक्षक को किसी एक समूह पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देती है, साथ ही उसे यह देखने की अनुमति देती है कि दूसरा समूह क्या कर रहा है। यह शिक्षक को पाठ्यक्रम के लक्ष्यों को पूरा करने के साथ-साथ बच्चों की जरूरतों को पूरा करने की अनुमति देता है। बच्चों के लिए यह सीखने की अनुमति देगा कि कैसे सहयोग करना है।

3. अर्ध वृत्ताकार (सेमी-सर्कल)

जब कक्षा में सभी बच्चे शिक्षक की ओर कमरे के सामने की ओर मुख करके बैठते हैं, तो शिक्षक के दोनों ओर स्थान छोड़ना एक अर्ध-वृत्ताकार आकार होता है। शिक्षक प्रत्येक छात्र को आसानी से देख सकते हैं और बच्चे शिक्षक को| शिक्षक को यह ध्यान रखना होगा कि उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली निर्देशात्मक सहायता सभी बच्चों तक सहजता से पहुँचे। शिक्षक आसानी से कमरे में घूम सकें और सभी के काम की निगरानी कर सकें।

4. 'U' - आकार

कक्षा में बच्चों की संख्या अधिक है और अर्धवृत्त पर्याप्त नहीं है कि सभी आराम से बैठ सकें| तब अगला विकल्प बच्चों को 'यू' आकार में बैठाना है। इस प्रकार की व्यवस्था से अर्धवृत्ताकार के समस्त लाभ भी प्राप्त होंगे।

❖ **बैठक व्यवस्था का महत्व**

1. कक्षा में ज्यादा आनंदपूर्ण वातावरण/माहौल बनेगा |
2. शिक्षक और बच्चे, बालक और शिक्षक, बच्चे और बच्चे के बीच प्रभावी बातचीत को बढ़ावा देना।
3. शिक्षक प्रत्येक बच्चे को आसानी से देख सकते हैं और इसके विपरीत बच्चे शिक्षक को भी आसानी से देख सकते हैं।
4. गतिविधि आधारित सामग्री को देखने में बच्चों को सुविधा होती है और सभी बच्चों को सामग्री देखने का अवसर मिलेगा।
5. बच्चों का ध्यान केंद्रित करने में आसानी होगी।
6. शिक्षक के समय की बचत होगी।
7. बच्चों का ध्यान भटकने पर शिक्षक जल्द ही भाँप लेते हैं और वापिस उसे केंद्रित करते हैं।
8. कक्षा के लिए देर से आने वाले बच्चों के लिए आसानी से जगह उपलब्ध हो जाती है।

कक्षा प्रबंधन

बच्चे स्कूल के समय में बहुत थका हुआ महसूस करते हैं कठिन विषयों को सीखते हुए छात्रों को एक ही कक्षा और डेस्क में 6-7 घंटे बैठना बहुत चुनौतीपूर्ण लगता है। दूसरी ओर शिक्षकों के लिए छात्रों की रूचि बनाए रखना एक कठिन कार्य है। निःसंदेह छात्रों के लिए प्रतिदिन एक रोमांचक वातावरण प्रदान करने के लिए नए तरीके खोजना एक चुनौती है।

यहाँ निम्नलिखित कुछ तरीके हैं जो एक कक्षा प्रबंधन में शिक्षकों का मार्गदर्शन करती हैं-

1. छात्रों के साथ चिट-चैट

अपनी कक्षा को अपने साथ जोड़े रखने का सबसे अच्छा तरीका है की आप बच्चों के साथ थोड़ी चिट-चैट (बातचीत) करें। छात्रों से पढ़ाई और भविष्य की योजना के बारे में अपने विचार साझा करने के लिए कहें। आप उनसे पसंद की संगीत और टेलीविजन शो के बारे में भी बातचीत कर सकते हैं।

2. समूह असाइनमेंट

छात्रों को एक-दूसरे के साथ अच्छे संबंध बनाने के लिए ग्रुप असाइनमेंट (समूह गतिविधि) सबसे अच्छा तरीका है। इसमें शिक्षक बच्चों के स्तर अनुरूप जटिल एवं चुनौतीपूर्ण कार्य देकर बच्चों को समूह में विभाजित कर सकते हैं तथा कार्य पूर्ण होने पर उसकी प्रस्तुतीकरण समूहवार करवाई जा सकती है। यह बच्चों के लिए एक रोमांचकारी गतिविधि होगी।

3. मौखिक प्रश्नोत्तरी

शिक्षक कक्षा के अंदर बच्चों को 3-5 के समूह में बाँटकर इनको प्रश्न पूछने और सर्वोत्तम उत्तर देने के लिए समय दे सकते हैं, जिससे उनके अंदर से भय एवं झिझक की भावना दूर हो सकती है। इस प्रकार की गतिविधियों से बच्चे खुशनुमा वातावरण में चीजों को सीख सकते हैं।

4. नवीन तकनीक तथा उपकरणों का उपयोग

कक्षा-कक्ष में जितना हो सके नवीन तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे बच्चे रोचक जानकारियों को उत्साह के साथ जान सकें। जैसे- प्रोजेक्टर, ऑडियो माध्यम, कंप्यूटर आदि।

5. हर छात्र से नजरें मिलाए रखें

जब कोई हमारी तरफ देखता है तो स्वाभाविक है कि हमारा ध्यान भी उधर जाता है एवं हम अधिक चौकस महसूस करते हैं और हम उस व्यक्ति पर अधिक ध्यान देते हैं। कक्षा के दौरान जब शिक्षक नजरें मिलाते हैं तो छात्रों को महसूस होता है कि हम उनकी ओर ध्यान दे रहे हैं, जिससे फिर वे अधिक सतर्क होकर गतिविधि में भाग लेते हैं व उनका ध्यान कक्षा के बाहर नहीं जाता है।

शिक्षा का है सरोकार,

बुनियादी शिक्षा है सबका अधिकार

अध्याय-4 आकलन, 21वीं सदी का शिक्षण शास्त्र, समावेशी शिक्षा

सीखना-सिखाना एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक और बच्चों के बीच निरंतर वार्तालाप चलता रहता है। इस वार्तालाप में शिक्षक और बच्चे एक-दूसरे को परखते रहते हैं और एक दूसरे से सीखते रहते हैं। बच्चों का आकलन इसी वार्तालाप का एक अंग है।

बच्चे अपने स्तर के अनुरूप सीख रहे हैं, इस बात का सतत आकलन करते रहना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जब हमें उन कठिनाइयों के बारे में पता चलेगा जो बच्चों के सीखने में बाधक बन रही हैं, तभी हम उन्हें सुधारने का प्रयास कर सकते हैं। यह स्पष्ट है कि आकलन का लाभ तभी मिल सकता है जब आकलन के आधार पर बच्चे को अतिरिक्त अभ्यास करा कर समझा कर या अन्य किसी रूप से सीखने के लिए प्रेरित किया जा सके। अतः आकलन शिक्षण की पूरी प्रक्रिया का एक अंग है जो दिशा देता है की भविष्य में किस प्रकार का शिक्षण हो।

बच्चों का आकलन मात्र बच्चों का ही नहीं होता। जब शिक्षक कक्षा में आकलन करते हैं, तो एक तरह से वे अपना आकलन कर रहे होते हैं। यदि कक्षा के अधिकतर बच्चे पाठ्यक्रम को सही रूप से समझ पा रहे हैं और दक्षता प्राप्त कर रहे हैं, तो निश्चित ही शिक्षक बधाई के पात्र हैं। यदि किसी प्रकार की दक्षता अधिकतर बच्चे प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं तो शिक्षक को सावधान हो जाना चाहिए और देखना चाहिए कि उनके सीखने के तरीके प्रभावी है अथवा नहीं।

आकलन- सीखने का एक साधन

हमारा उद्देश्य है सभी बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करना और एक निश्चित स्तर तक पहुँचाना। इस संकल्प तक पहुँचने के लिए हम आकलन को सीखने के साधन के रूप में देखते हैं। सिर्फ यह पता लगा लेना या जाँच कर लेना कि कितने बच्चों का शैक्षिक स्तर क्या है, पर्याप्त नहीं है। आकलन के द्वारा बच्चों का सीखना-सिखाना प्रभावी बनाना ही मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् आकलन को हम सीखने के उपकरण (learning tool) के रूप में महत्व देते हैं, मात्र बच्चों की उपलब्धि स्तर जानने के उपकरण के रूप में नहीं।

आकलन प्रक्रिया की एक और विशेषता यह है कि हम प्रत्येक बच्चे की प्रगति की तुलना उसकी अपनी पिछली स्थिति से करेंगे दूसरे बच्चों की प्रगति से नहीं। इसका एक कारण है सभी बच्चों के सीखने की गति व समझ विकसित करने का समय एक नहीं होता। कुछ बच्चे जल्दी पढ़ने, समझने व बोलने लगते हैं, पर कठिन अवधारणाएँ समय आने पर ही समझते हैं। कुछ बच्चे जल्दी समझ लेते हैं, पर लिखने के प्रारंभिक दिनों में कठिनाई आती है, परंतु हमें कुछ ही (अर्थात् जल्दी सीखने वाले बच्चों को ही नहीं सिखाना है, वरन प्रत्येक बच्चे को सीखने के लिए प्रेरित करना है। इसके लिए शिक्षक को बच्चों की विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए सभी को सीखने के अवसर देने होंगे।

आकलन की आवश्यकता क्यों?

हमारा जोर बच्चों की क्षमताओं का विकास करना है, जैसे भाषा पढ़ने-लिखने, बोलने के कौशल, गणित सीखने के कौशल पर्यावरण की जानकारी प्राप्त करने के कौशल आदि। अब हम एक सीमित जानकारी हासिल करने पर जोर नहीं देते। हमारा उद्देश्य यह देखना नहीं है बच्चों को कोई एक पाठ्यवस्तु अच्छे से याद हो गई या नहीं, बल्कि यह देखना है उस स्तर के कोई भी पाठ्यवस्तु को बच्चे वह समझ लेते हैं या नहीं। जब हमारा उद्देश्य दक्षताओं अथवा कौशल को विकसित करना है तो आकलन भी दक्षताओं का ही करना है, पाठ्यवस्तु का नहीं।

सतत आकलन में बच्चों का 'टेस्ट' न लिया जाकर यह बारीकी से देखा जाए कि बच्चे में निर्धारित दक्षता और कौशलों का विकास हुआ है या नहीं? भाषा, गणित या पर्यावरण अध्ययन की अवधारणात्मक समझ विकसित हुई या नहीं। किस स्तर तक दक्षताएँ और अवधारणाएँ विकसित हुई हैं। क्या वह बिल्कुल नहीं समझा, कुछ कुछ समझा या अच्छी तरह समझ गया। हम बच्चों के बदलते व्यवहार, परिपक्व होते दृष्टिकोण का भी आकलन करना चाहते हैं।

आकलन की रूपरेखा

आकलन की योजना की रूपरेखा निम्नानुसार है-

- कक्षा के सभी बच्चों का शिक्षक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान, सतत् अवलोकन करें जिससे सतत रूप से सुधारात्मक प्रयास चलते रहे। बच्चों का औपचारिक आकलन होगा, जिसका रिकॉर्ड शिक्षक रखेंगे।
- आकलन गतिविधि-आधारित होगा अर्थात् बच्चों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को कराकर उनके शैक्षिक स्तर की जानकारी ली जाएगी।
- एक बार में सभी बच्चों को ध्यान से देखना और आकलन कर सुधार की दृष्टि से बारीकियों को नोट करना कठिन होगा, इसलिए शिक्षक को यह सलाह है कि एक बार में 5-6 बच्चों पर ध्यान केंद्रित करें। आकलन बच्चों को टोलियो में बिठाकर या पृथक-पृथक किया जा सकेगा।
- आकलन रिकार्ड करने के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक एक आकलन रजिस्टर बनाएँगे।
- आकलन की टीप स्पष्ट सटीक और विश्लेषणात्मक होगी, जिससे बच्चों को सिखाने के प्रयासों के लिए उनका उपयोग हो सके। प्रत्येक चरण में सभी बच्चों के आकलन के बाद सुधार की दृष्टि से आकलन प्रपत्र में से महत्वपूर्ण जानकारी निकाली जाएगी, जैसे- इस बच्चे को सीखने में कौन-सी कठिनाई आ रही है।
- आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर बच्चों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए उनके लिए पहले से अधिक प्रभावी योजना बनाई जाएगी।

आकलन कैसे करें?

आकलन करने का तरीका क्या हो? अर्थात् हम बच्चों को कैसे समझें, कैसे जानें कि उन्होंने क्या सीखा क्या नहीं? कैसे पता करें कि सीखने में कठिनाई कहाँ आ रही है और कैसे मुख्य बातों को रिकार्ड करें? और सबसे महत्वपूर्ण यह कि इन सब के आधार पर सीखने के बेहतर अवसर कैसे दें? उपरोक्त बिंदुओं पर स्पष्टता लाने की आवश्यकता है।

आकलन के दौरान हम कक्षा में ऐसी आनंददायी परिस्थितियाँ उत्पन्न करना चाहते हैं कि बच्चों को परीक्षा या मूल्यांकन का भय न हो। यह खासतौर पर प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए आवश्यक है। शिक्षक जो भी परीक्षण करें सामान्य परिस्थितियों में ही करें। आकलन के दौरान किसी प्रकार का मानसिक तनाव न हो। मानसिक तनाव में हम सब और विशेष रूप से बच्चे जाने हुए दक्षता भी भूल से जाते हैं। अंत में परीक्षा हमारी दक्षता की नहीं, हमारी तनाव सहन करने की शक्ति की ही होती है। अपने आकलन में शाला का वातावरण पुर्णतः भयमुक्त रखें। आपको बच्चों का अवलोकन करना है, उन्हें डराना नहीं है। वातावरण जितना सहज और भय मुक्त होगा, उतनी ही अच्छी तरह से बच्चों की यथास्थिति का पता चल पाएगा।

आकलन कब करें?

पहले चरण का आकलन जुलाई के अंतिम सप्ताह तक, दूसरे चरण का आकलन अगस्त के अंतिम सप्ताह तक, तीसरे चरण का आकलन सितम्बर के अंतिम सप्ताह तक, हर चरण के अंतिम सप्ताह में हम

आकलन की दृष्टि से गतिविधियाँ कराएँगे। वैसे तो सामान्य शिक्षण के दौरान कराई गई गतिविधियों के साथ-साथ शिक्षक अपने बच्चों को पहचानते व परखते जाएँगे ही, परंतु इन आकलन के दिनों में शिक्षकों को बच्चों को बारीकी से देखना व समझना होगा और फिर रिकार्ड करते जाना होगा।

आकलन प्रोत्साहन का एक अवसर

हमारी शिक्षण प्रक्रिया कुछ ऐसी रही है कि हम बच्चों को टोकते और डाँटते अधिक हैं, शाबाशी कम देते हैं। यही प्रवृत्ति हमारी मूल्यांकन व परीक्षा प्रणाली में समाहित है। बच्चों को डराना और उनकी गलतियाँ ढूँढना। सीखने-सिखाने की इस शिक्षण प्रणाली में इस प्रवृत्ति का कोई स्थान नहीं है। आकलन से भी इसे बाहर निकाल फेंकें। आकलन के समय बच्चों को डराएँ नहीं। जो वे कर पाते हैं, उसके लिए उन्हें शाबाशी दें। जो नहीं कर पाते, उन दक्षताओं को चुपके से नोट कर लें और आगे की योजना बनाएँ।

आकलन प्रपत्र

मासिक आकलन

(स्कूलों के लिए बच्चों की तैयारी की ट्रैकिंग)

- प्रथम माह -

उद्देश्यः स्कूल कार्यक्रम में रूचि विकसित करना और बच्चों को स्कूल के माहौल और सीखने में समायोजन करने में मदद करना।

नाम- ....,

वजन.., ऊँचाई- ....

व्यक्तिगत स्वच्छता-

कपड़े-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................, नाखून-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,

दाँत-(स्वच्छ/अस्वच्छ)..................................., कान-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,

बाल-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................, नाक-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,

समायोजन एवं दिनचर्या	शायद ही कभी	कभी-कभी	प्रतिदिन
1. खुशी से स्कूल आता है।	☐	☐	☐
2. अपने और साथियों के सामान की देखभाल करता है।	☐	☐	☐
3. अन्य व्यक्ति, शिक्षक और बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार रखता है।	☐	☐	☐
4. अपनी सामग्री अन्य बच्चों से साझा करता है।	☐	☐	☐
5. कार्य में अपनी बारी का इंतजार करता है।	☐	☐	☐
6. गतिविधि के दौरान सक्रिय रहता है और पहल करता है।	☐	☐	☐
7. खेल एवं प्रतिस्पर्धा के नियमों का पालन करता है।	☐	☐	☐
8. सरल निर्देशों का पालन करता है।	☐	☐	☐
खेल गतिविधि में भागीदारी	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. शरीर को संतुलित रखता है। (आड़े-तिरछे अथवा गोल रास्ते पर चलते हुए)	☐	☐	☐
2. धीमी और तेज गति से दौड़ता है।	☐	☐	☐
3. दोनों हाथों से गेंद को पकड़ता और फेंकता है।	☐	☐	☐
सूक्ष्म मांसपेशीय एवं गत्यात्मक तथा सृजनात्मक कला गतिविधि में भागीदारी	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. रंग और क्रम के अनुसार मोतियों की माला बनाता है।	☐	☐	☐
2. स्वतंत्र चित्रकारी कर सकता है।	☐	☐	☐
3. फाड़ने और चिपकाने की प्रक्रिया कर पाता है।	☐	☐	☐
4. गीली मिट्टी या आटे से वस्तु बना लेता है।	☐	☐	☐

गणितीय कौशल और पर्यावरण के प्रति जागरूकता	सहायता से करता है	कठिनाई से करता है	सरलता से करता है
1. पर्यावरणीय तत्वों के बारे में पता लगाने की उत्सुकता दिखाता है।			
2. इन्द्रियों (स्पर्श, गंध, स्वाद, दृष्टि, श्रवण) का उपयोग करके वस्तुओं की पहचान करता है।			
3. आकार,आकृति,रंग में से किसी एक विशेषता के आधार पर वस्तुओं को अलग करता है।			
4. दो चित्रों की तुलना कर अंतर ढूँढ पाता है।			
5. मूल रंगों के नाम और प्रकार के आधार पर वस्तु को छाँट सकता है।			
6. किसी वस्तु के पूरे और आधे भाग की समझ रखता है।			
मौखिक अभिव्यक्ति का प्रदर्शन	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. अन्य व्यक्ति अथवा बच्चों से स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत करता है।			
2. बोलकर या इशारे से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है और रूचि प्रदर्शित करता है।			
3. पूर्ण वाक्यों में स्पष्ट बोल पाता है।			
आकस्मिक पठन कौशल	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. चित्र, पुस्तक एवं मुद्रित सामग्री में संबंध स्थापित कर पाता है।			
2. कहानी एवं कविताओं को ध्यानपूर्वक सुनता है।			
3. वस्तु के चित्र को देखकर नाम बता पाता है।			
4. वाक्यों में पढ़े हुए शब्द को पहचान पाता है।			
5. तुकबंदी वाले शब्दों की समझ रखता है।			
आकस्मिक लेखन कौशल			
1. पेंसिल/पेन/क्रेयान सही तरीके से पकड़ता है।			
2. बालू या हवा में उंगलियों से लिख पाता है।			
3. अपने विचार, परिस्थिति आदि को चित्रित कर पाता है।			

भाषायी दोष यदि कोई हो तो हाँ नहीं

उपस्थिति नियमित हाँ नहीं

समयबद्धता हाँ नहीं

बच्चे की विशिष्ट रूचि एवं प्रतिभा ....

सामान्य विशेषता-..

....

कक्षा शिक्षक का हस्ताक्षर एवं दिनांक-

पालक का हस्ताक्षर-

प्रधानपाठक का हस्ताक्षर-

- द्वितीय माह -

उद्देश्यः स्कूल कार्यक्रम में रूचि विकसित करना और बच्चों को स्कूल के माहौल और सीखने में समायोजन करने में मदद करना।

नाम- ....,

वजन...,   ऊँचाई- ....

व्यक्तिगत स्वच्छता-

कपड़े-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,   नाखून-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,

दाँत-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,   कान-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,

बाल-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,   नाक-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,

समायोजन एवं दिनचर्या	**शायद ही कभी**	**कभी-कभी**	**प्रतिदिन**
1. समूह गतिविधियों में उत्साह के साथ भाग लेता है।	☐	☐	☐
2. गतिविधियों के दौरान पहल करता है।	☐	☐	☐
3. दूसरों की भावनाओं, कहानी अथवा चित्रों की भावनाओं को समझ पाता है।	☐	☐	☐
4. अन्य के साथ सामाजिक संबंध निभाता है।	☐	☐	☐
5. खेल की नियमों का पालन करता है।	☐	☐	☐
6. कक्षा व्यवहार और दिनचर्या के नियम का पालन करता है।	☐	☐	☐
7. संयुक्त निर्देशों का पालन करता है।	☐	☐	☐
8. कक्षागत जिम्मेदारियों और गतिविधियों का स्वतंत्रतापूर्वक निर्वहन करता है।	☐	☐	☐
9. पूरे ध्यान से कार्य को पूरा करने के लिए प्रतिबद्धता दर्शाता है।	☐	☐	☐
खेल गतिविधि में भागीदारी	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. पूर्व निर्धारित दिशा में गेंद फेंक पाता है।	☐	☐	☐
2. कम दूरी से फेंकी गई गेंद को पकड़ पाता है।	☐	☐	☐
3. बालू और पानी के खेल गतिविधि में स्वयं को शामिल करता है।	☐	☐	☐
4. पूर्व निर्धारित दिशा में फुटबॉल को पैर की सहायता से मार पाता है।	☐	☐	☐
5. योग, शारीरिक व्यायाम एवं नृत्य में शारीरिक चपलता दर्शाता है।	☐	☐	☐
6. आगे और पीछे की ओर फुदक सकता है।	☐	☐	☐
सूक्ष्म मांसपेशीय एवं गत्यात्मक तथा सृजनात्मक कला गतिविधि में भागीदारी	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. कागज मोड़कर सामग्री बना पाता है।	☐	☐	☐
2. कागज फाड़कर चिपका पाता है।	☐	☐	☐
3. चित्र की बारिकियों को बना पाता है।	☐	☐	☐
4. छोटे स्थानों में रंग भर पाता है।	☐	☐	☐
5. मोटे ब्रश से रंग भर पाता है।	☐	☐	☐
6. विभिन्न वस्तुओं के साथ मुद्रण (थंब प्रिंटिंग) कर पाता है।	☐	☐	☐
7. गीली मिट्टी या आटे से आकृति बना पाता है।	☐	☐	☐

गणितीय कौशल और पर्यावरण के प्रति जागरूकता	सहायता से करता है	कठिनाई से करता है	सरलता से करता है
1. सामान्य प्राकृतिक घटनाओं को समझता है और व्यक्त कर पाता है।	☐	☐	☐
2. एक से अधिक विशेषता (आकार,आकृति,रंग) के आधार पर वस्तु छाँट पाता है।	☐	☐	☐
3. ऊँचाई और लंबाई के क्रम में वस्तुओं को रखता है।	☐	☐	☐
4. पैटर्न को समझता है और पूरा करता है।	☐	☐	☐
5. आकृति के नाम बता पाता है (वृत्त, तिकोन, चौकोर)	☐	☐	☐
6. दो से चार बाधाओं के साथ पहेली को हल करता है।	☐	☐	☐
7. वस्तु के गायब भाग अथवा गलतियों को ढूँढता है यदि छुपा दिया गया हो।	☐	☐	☐
8. सरल अमानक मात्रक (बित्ता, अंगुल, हाथ) से स्वयं ही माप कर पाता है।	☐	☐	☐
9. छोटा, ऊँचा, बड़ा, हल्का-भारी जैसे शब्दों का उपयोग करता है।	☐	☐	☐
मौखिक अभिव्यक्ति का प्रदर्शन	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. सुनकर के छोटे शब्दों को बोल पाता है।	☐	☐	☐
2. देखे गए किसी घटना को छोटे वाक्यों में वर्णन कर पाता है।	☐	☐	☐
3. मिश्रण में से अक्षर को पहचान पाता है।	☐	☐	☐
4. सामान्य शब्द के प्रथम और अंतिम ध्वनि को अलग कर पाता है।	☐	☐	☐
5. रचनात्मक उत्तर या अभिव्यक्ति देता है।	☐	☐	☐
आकस्मिक पठन कौशल	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. अक्षर-ध्वनि संबंध को पहचान पाता है।	☐	☐	☐
2. शब्द को पढ़ने का प्रयास करता है।	☐	☐	☐
3. मुद्रित सामग्री के पठन का अभिनय करता है। जैसे बाँए से दाँए, ऊपर से नीचे की ओर पढ़ना।	☐	☐	☐
आकस्मिक लेखन कौशल	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. लेखन या चित्रण टूल्स को अच्छे से पकड़ता है।	☐	☐	☐
2. लेखन टूल (पेन, पेंसिल, क्रेऑन) का सही तरीके से उपयोग करता है।	☐	☐	☐
3. किसी सरल चित्र को देखकर चित्र बना पाता है।	☐	☐	☐

भाषायी दोष यदि कोई हो तो हाँ नहीं

उपस्थिति नियमित हाँ नहीं

समयबद्धता हाँ नहीं

बच्चे की विशिष्ट रूचि एवं प्रतिभा ....

सामान्य विशेषता-...

....

कक्षा शिक्षक का हस्ताक्षर एवं दिनांक-

पालक का हस्ताक्षर-

प्रधानपाठक का हस्ताक्षर-

- तृतीय माह -

उद्देश्यः स्कूल कार्यक्रम में रूचि विकसित करना और बच्चों को स्कूल के माहौल और सीखने में समायोजन करने में मदद करना।

नाम- ....,

वजन...,   ऊँचाई- ....

व्यक्तिगत स्वच्छता-

कपड़े-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,   नाखून-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,

दाँत-(स्वच्छ/अस्वच्छ)..................................,   कान-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,

बाल-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,   नाक-(स्वच्छ/अस्वच्छ)................................,

समायोजन एवं दिनचर्या	शायद ही कभी	कभी-कभी	प्रतिदिन
1. अच्छे एवं बुरे स्पर्श की समझ रखता है।	☐	☐	☐
2 अन्य के साथ सामाजिक संबंध बनाने का प्रयास करता है।	☐	☐	☐
3. गतिविधियों में भागीदारी निभाता है।	☐	☐	☐
4. किसी समस्या का समाधान सुझाता है और सामंजस्य बना पाता है।	☐	☐	☐
5. सही और गलत का फर्क समझता है।	☐	☐	☐
6. बच्चों के झगड़े सुलझाने के लिए बातचीत करता है।	☐	☐	☐
7. विद्यालय में शिक्षक, बच्चों या अन्य व्यक्ति की मदद करता है।	☐	☐	☐
8. बच्चों, दिव्यांग बच्चों की आवश्यकता का ध्यान रखता है और दूसरों की भावनाओं के लिए संवेदनशीलता दिखाता है।	☐	☐	☐
9. समूह और मित्रमंडली के बीच अपनी वस्तुओं को बाँटकर बंधुत्व दिखाता है।	☐	☐	☐
10. संयुक्त निर्देशों का पालन करता है।	☐	☐	☐
खेल गतिविधि में भागीदारी	**सहायता से करता है**	**कठिनाई से करता है**	**सरलता से करता है**
1. गेंद को किसी लक्ष्य तक फेंक पाता है।	☐	☐	☐
2. फुदकने के दौड़ में शामिल होता है।	☐	☐	☐
3. आत्मविश्वास के साथ सीढ़ी या रस्सी में चढ़ पाता है।	☐	☐	☐
4. खेल, नृत्य एवं योग की गतिविधियों में भाग लेता है।	☐	☐	☐
सूक्ष्म मांसपेशीय एवं गत्यात्मक तथा सृजनात्मक कला गतिविधि में भागीदारी	☐	☐	☐
1. कैंची की सहायता से चित्र काटकर चिपका पाता है।	☐	☐	☐
2. उंगली की मदद से मुद्रण (थंब प्रिंटिंग) कर पाता है।	☐	☐	☐
3. बिंदु मिलान करके चित्र बनाकर रंग भर पाता है।	☐	☐	☐
4. चित्र कोलॉज बनाता है।	☐	☐	☐
5. धागे और मोती की सहायता से विभिन्न पैटर्न बना पाता है।	☐	☐	☐

गणितीय कौशल और पर्यावरण के प्रति जागरूकता	सहायता से करता है	कठिनाई से करता है	सरलता से करता है
1. सामान्य प्राकृतिक घटनाओं को समझता है और वर्णन करता है।			
2. पूछने पर 1 से 10 को क्रम से बताता है।			
3. 1 से 10 के बढ़ते क्रम की समझ दर्शाता है।			
4. किसी भी अंक से शुरू करके 10 तक गिन पाता है।			
5. समूह के वस्तुओं की मात्रा को कम-ज्यादा के रूप में बता पाता है।			
6. ठोस वस्तुएँ जैसे बटन, बीज आदि को रखते हुए अंकों का आकार बना पाता है।			
7. 1 से 10 तक की अंकों को लिख पाता है।			
8. पैटर्न को बढ़ाता है और नए पैटर्न बनाता है।			
9. जटिल पहेली या भूल-भूलैया को हल कर लेता है।			
10. वस्तु एवं घटनाओं को क्रम से सोचता है और अभिव्यक्त करता है।			

मौखिक अभिव्यक्ति का प्रदर्शन	सहायता से करता है	कठिनाई से करता है	सरलता से करता है
1. सुनकर के जवाब देता है या विस्तार करता है।			
2. सुनी हुई कहानी को पूर्ण वाक्यों का उपयोग करते हुए वर्णन करता है।			
3. सार्थक बातचीत में हिस्सा लेता है।			
4. शब्द के शुरूआती, मध्य और अंतिम ध्वनि का पहचान करता है।			
5. अक्षरों को जोड़कर अथवा हटाकर नए शब्द बना पाता है।			
6. रचनात्मक प्रश्न पूछता है अथवा उत्तर देता है।			

आकस्मिक पठन कौशल	सहायता से करता है	कठिनाई से करता है	सरलता से करता है
1. मुद्रित सामग्री में विराम चिह्न जैसे- पूर्ण विराम, अल्प विराम को पहचान पाता है।			
2. सामान्य पाठ को स्वतंत्रता पूर्वक पूर्ण वाक्यों में पढ़ता है।			
3. सुनी गई कहानी को प्रारंभिक, मध्य और अंतिम घटनाओं के क्रम में सुना पाता है।			
4. पुस्तकों के समूह या पुस्तक कार्नर में से पुस्तक चुन पाता है।			
5. चित्र और सार्थक शब्दों को विस्तारित कर पाता है।			

आकस्मिक लेखन कौशल	सहायता से करता है	कठिनाई से करता है	सरलता से करता है
1. अपने विचारों को शब्द या चित्र के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास करता है।			
2. अक्षरों और अंकों को लिखने का प्रयास करता है।			
3. चित्र में टूल्स के उपयोग करते हुए सार्थक संदेश देने का प्रयास करता है।			

भाषायी दोष यदि कोई हो तो हाँ नहीं

उपस्थिति नियमित हाँ नहीं

समयबद्धता हाँ नहीं

बच्चे की विशिष्ट रूचि एवं प्रतिभा ....

सामान्य विशेषता-...

....

कक्षा शिक्षक का हस्ताक्षर एवं दिनांक-

पालक का हस्ताक्षर-

प्रधानपाठक का हस्ताक्षर-

मुख्य सत्र का नाम- 21वीं सदी के कौशल और अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे

सत्र का उद्देश्य-

1) 21वीं सदी के कौशलों को जानना।

2) 21वीं सदी के कौशलों का नई शिक्षा नीति में महत्व समझना।

3) 21वीं सदी के कौशलों को कक्षा शिक्षण के दौरान उपयोग करने में सक्षम होना।

सत्र का नाम	**गतिविधि**	**समय**	**प्रक्रिया**	**आवश्यक सामग्री**
21वीं सदी के कौशल	चर्चा	55 मिनट	**चरण 1** बच्चों को खुद से सीखने के लिए प्रेरित करना • क्या बच्चे खुद से सीख सकते हैं? • बच्चों के खुद से सीखने पर में शिक्षक की भूमिका **चरण 2** बच्चों को स्वयं से अधिक सीखने पर चुनौती दें • बच्चों को कौन-सी चुनतियाँ दी जा सकती हैं? • बच्चों को कब-कब चुनौती दे सकते हैं? **चरण 3** पियर लर्निंग • सीखने के लिए जोड़ी किन-किन के साथ बनाई जा सकती हैं? • पियर लर्निंग के क्या फायदे हैं ? **चरण 4** जिज्ञासा का सम्मान करें • कैसे और क्यूँ? **चरण 5** प्रोद्योगिकी का उपयोग • कैसे और क्या लाभ? **चरण 6** सेल्फी विथ सक्सेस • शिक्षक की भूमिका	ड्राइंग शीट, मार्कर, कलर पेंसिल, सफ़ेद कागज, टेप

अपेक्षाएँ-

1. 21वीं सदी के कौशलों का क्रियान्वयन कक्षा में शिक्षक बेहतर ढंग से कर पाएँगे।
2. बच्चों को स्वयं सीखने के लिए प्रोत्साहित कर पाएँगे।
3. अन्य शिक्षकों को प्रेरित कर पाएँगे।
4. शिक्षक सौ प्रतिशत बच्चों को सिखाने में सक्षम हो पाएँगे।

21 वीं सदी के कौशलों को प्राप्त करने के छह बिंदु-

(1) पियरलर्निंग, ग्रुप लर्निंग, विषय-मित्र बनाएँ

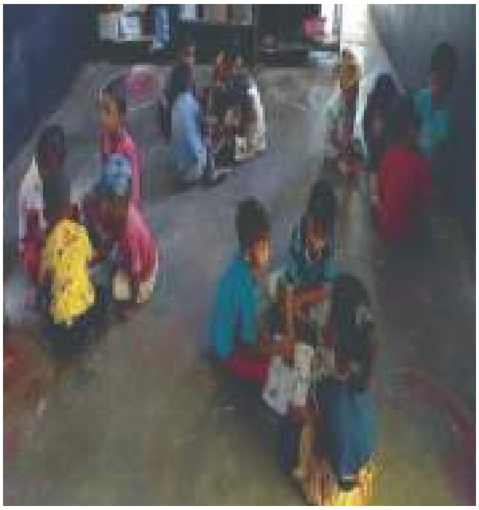

सक्रिय अधिगम के विषय में प्राचीन काल में भी बहुत चिंतन हुए हैं। भारतीय परंपरा में उपनिषद काल में ऐसे बहुत से कथानक मिलते हैं जिनमें यह दर्शाया गया है की सीखने की पहल और उसके द्वारा किए गये प्रयासों के बाद ही उसे ज्ञान की प्राप्त होती हैं। छान्दोग्य उपनिषद में वर्णित उद्दालक-श्वेतकेतु का आख्यान, कठोपनिषद में वर्णित यम-नचिकेता का आख्यान इनमें से मुख्य है। भारतीय परंपरा में सीखने का कार्य एक चौथाई आचार्य से, एक चौथाई अपनी मेधा और प्रयासों से, एक चौथाई सहपाठियों के सहयोग से तथा एक चौथाई परिस्थिति आने पर समय के साथ होता है। सीखने वाले के द्वारा अपने मेधा और अपने प्रयासों से सक्रिय अधिगम की ओर ही संकेत कर रहा है। आइए, देखते हैं कि यह कक्षा में कैसे संभव है-

पियर लर्निंग

बच्चे एक-दूसरे की मदद से बहुत अच्छे से सीखते हैं। स्वाभाविक रूप से सोचें तो बच्चे को यह आसान लगता है। पियरलर्निंग से बच्चों को अपनी गति से और अपने वांछित समय पर सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं। पिअरलर्निंग से अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप जोड़ियां बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए कक्षा में बच्चों की जोड़ी स्कूल के बच्चों की जोड़ी, आवश्यकतानुसार जोड़ी आदि पिअर का अर्थ है कि सीखने की प्रक्रिया में दोनों की समान हिस्सेदारी होनी चाहिए। अर्थात् कभी पहला जोड़ीदार दूसरे को सिखा रहा है तो कभी दूसरा जोड़ीदार पहले को सिखा रहा है।

कक्षा के बच्चों की जोड़ी

इनमें एक ही कक्षा के दो लड़के-लड़कियों के जोड़ी की अपेक्षा की जाती है। कक्षा में बच्चों को विभिन्न स्तरों में विभाजित किया गया है। उनकी अलग-अलग आकलन की क्षमताएँ है, एक-दूसरे के अध्ययन के लिए पूरक होती है। जिन बच्चों की कक्षा में अच्छी अध्ययन गति है, उनका उपयोग उनकी तुलना में पिछड़ने वाले बच्चों के लिए किया जा सकता है। कक्षा में होने वाली दैनिक अभ्यास में इन बच्चों को हमेशा एक-दूसरे को मदद होती है।विभिन्न पहलुओं में आने वाली कठिनाइयाँ और स्वयं अध्ययन में एक दूसरे की पूरक होती है।

स्कूली बच्चों की जोड़ी

बड़ी कक्षा वाले के साथ छोटी कक्षा वाले बच्चों की जोड़ी। बहुकक्षा शिक्षण वाले स्कूलों में इसका उपयोग अधिक व्यापक रूप से किया जा सकता है। जब बच्चे घर पर होते हैं तो कक्षा का सहपाठी पड़ोसी भी

हो यह जरूरी नहीं है। इसलिए स्कूल की जोड़ी बनाते समय पड़ोसियों की जोड़ी बनाना अच्छा हो सकता है पड़ोसियों की जोड़ी गली मित्र के रूप में भी काम करता है। जब कक्षा के बच्चे उच्च वर्ग की क्षमताओं या बड़े बच्चों की आदतों और रीति-रिवाजों को विकसित करना चाहते हैं तो इस तरह की जोड़ी मदद करती है।

आवश्यकता अनुसार जोड़ी

आपसी चर्चा, दो लोग मिलकर की जाने वाली परियोजना, या कोई लक्ष्य बातें पूरी करनी हो तो ऐसी जोड़ी बनाई जा सकती है। ऐसे विभिन्न प्रकार की जोड़ियों का उपयोग करने से कमा बच्चों का अन्य बच्चों के साथ अधिकतम संपर्क आता है। साथ ही एक ही जोड़ी के भरोसे रहे बिना विविधता समझ में आती है। उसी प्रकार, किसी बच्चे को एक साथी से सीखने में कठिनाई हो रही हो तो अन्य संभावनाएँ तलाश सकते हैं, इससे सीखने के अवसर बढ़ते हैं।

पियर लर्निंग योजना लागू करते समय आने वाली चुनौतियाँ-

बच्चा सहयोग नहीं करता, समझाने पर भी उसे नहीं समझता है। **(बच्चे एक दूसरे की शिकायत करते हैं)**

बच्चों का विचलन, ज्यादा समय तक उनका ध्यान केंद्रित नहीं रहना।

दो साथियों में से एक साथी का अनुपस्थिति आदि।

पियरलर्निंग की चुनौतियों को दूर करना-

पियरलर्निंग की आदत नहीं है इसलिए चुनौतियाँ हैं। एक बार आदत बन जाने के बाद सभी चुनौतियाँ दूर हो जाएँगी।

*धैर्य और निरंतरता बनाए रखें।

आवश्यकता अनुसार विभिन्न जोड़ियाँ बनाना। (कभी-कभी जोड़ी में परिवर्तन करने से अध्ययन की गति बढ़ सकती है)

*बच्चे की रुचि की चुनौती के साथ काम करना शुरू करें। (पाठ्यपुस्तकों के अलावा कार्य देना।)

*जोड़ी के रूप में काम की शुरुआत के समय ध्यान केंद्रित करे लगातार प्रेरित करते रहना।

*बच्चों को पिअर में उनकी भूमिका और जिम्मेदारी समझाने में मदद करना।

*पियरलर्निंग से मिलने वाली खुशी का अनुभव करने दें। मिलने वाली सफलता दिखाकर और आनंद लेना सिखाएँ।

*जोड़ी में हमेशा सीखने की ही भूमिका ना होकर, सीखने सिखाने की भी भूमिका हो ऐसी व्यवस्था करना।

ग्रुप लर्निंग

अध्ययन अध्यापन की जरूरतों के अनुसार एक ही कक्षा के या विभिन्न कक्षाओं के बच्चों का समूह बनाना। समूह में 3 से 4 बच्चे होते हैं। मिश्रित अध्ययन गति वाले बच्चों का समूह होने से बच्चों को एक दूसरे से लाभ होता है। बच्चों को शिक्षक की मदद किए बिना अंतहीन सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं ।

विषय मित्र योजना

एक बच्चे की दूसरे बच्चों से सीखने की गति व पद्धति अध्यापक से सीखने की तुलना में बेहतर होती है। पढ़ाई करते समय आने वाली शंका एवं समस्याओं का हल बच्चे शिक्षक से डर या अपमानित होने की भावना से नहीं पूछते। फिर मन में शंकाएं लेकर अध्ययन का सफर शुरू होता है, जिस रास्ते में एक पड़ाव आता है जिसका नाम है पिछड़ने की स्थिति। आवश्यकता होने या रुचि होने इन दो स्थितियों में ही शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। तनावमुक्त मानसिक स्थिति, शिक्षा के लिए मूल आवश्यकता होती है। सभी बच्चों के सीखने की गति एक जैसी कभी भी नहीं हो सकती। कुछ बच्चों को एक बार कह दो तो वे समझ जाते हैं कुछ को वही बात दो बार तीन बार लगातार समझाना पड़ता है हर बच्चे की अपनी प्राकृतिक गति होती है। अधिक दर्ज संख्या या अध्यापक की संख्या कम होने की स्थिति में अध्यापक बच्चों के साथ न्याय नहीं कर सकता। बहु या द्विअध्यापिकीय स्कूलों को देखा जाए तो साधारणतया 80% सरकारी स्कूल में यही स्थिति है। ऐसे स्कूलों में विषय मित्र की अवधारणा एक वरदान साबित हो सकती है। इसके लिए बड़ी कक्षाओं के होशियार और उत्साही बच्चों से मदद लेनी पड़ती है। साधारण तौर पर 6 से 12 बच्चों का चुनाव करके उनके पसंद के विषय की जिम्मेदारी उस बच्चे या समूह को दी जाती है। दर्ज संख्या के अनुसार 1, 2, या फिर 3 बच्चों को जिम्मेदारी दी जाए तो वे अपनी पढ़ाई के साथ-साथ जिस विषय की जिम्मेदारी दी गई है उसकी भी पढ़ाई पूरी कर लेते हैं और अपने सहकारी विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान आवश्यकता अनुसार कहीं भी और कभी भी करते हैं। किसी भी कक्षा के बच्चे को किसी भी विषय में प्रश्न उपस्थिति होता है या वह संबंधित विषय मित्र से पूछ कर शंका का समाधान कर लेते हैं। बच्चे बिना किसी डर या हिचकिचाहट के पूछते हैं। विषय मित्रों को भी सिखाने में बहुत खुशी होती है। बच्चे शंका का समाधान होने तक बार-बार सवाल पूछ सकते हैं। यह बात अध्यापक के साथ बच्चे नहीं कर सकते।

अध्यापक की अनुपस्थिति या जब वे किसी अन्य कार्य में व्यस्त हों या फिर ऐसे कुछ न भी हो तब भी केवल अलग अनुभव के लिए विषयमित्र बच्चों को आधारभूत संकल्पनाएँ भी सिखा सकते हैं। इसी तरीके से

अगर बच्चों को अवसर दिए जाएँ तो अच्छे परिणाम आते हैं। अध्यापन का अनुभव बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ आत्मविश्वास प्रदान करता है तथा बच्चे सहजता से सीख भी जाते हैं ।

विषय मित्र योजना से स्कूल में एक समांतर व्यवस्था तैयार होती है, जिससे अध्यापक के बिना पढ़ना-पढ़ाना, शंका-समाधान, सृजनशीलता आदि सहज ही शुरु रहता है। स्कूल के अलावा गृह अभ्यास करते समय यदि कोई शंका उत्पन्न हो जाए तो बच्चों के अधिकार की एक समानांतर व्यवस्था गाँव में उपलब्ध रहती है।इससे शिक्षा के बारे में डर का वातावरण निश्चित रूप से कम होता है और एक बाल केंद्रित वातावरण का निर्माण होता है।

विषय मित्रों के चुनाव करने के बाद बच्चों को उनसे विषयानुसार अवगत करना पड़ता है, स्कूल के समय सारणी में हर कक्षा में कम से कम एक पीरियड विषय मित्र के लिए उपलब्ध करना पड़ता है। केवल बौद्धिक और शैक्षिक ही नहीं अपितु सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक स्तर पर भी विषय मित्र योजना लाभदायक होता है। विषय मित्र योजना हमें जनतांत्रिक मूल्य सिखाता है और ये मूल्य बच्चों के नस-नस में भर जाता है जिसके भरोसे उन्हें जीवन जीना होता है।

प्रमुख विषयों के साथ-साथ उप विषय के लिए भी विषय मित्र की नियुक्ति की जा सकती है स्कूल में बच्चों को भाव विश्व से जोड़ने वाली ऐसी समांतर व्यवस्था निर्माण करने से स्कूल का अपना उद्देश्य पूर्ण करने में मदद होता ही है साथ ही हम बच्चों को आनंद भी दे सकते हैं।

विषय मित्र योजना लागू करते समय चुनौतियाँ

* विषय मित्र तैयार करने के लिए समय आवश्यक है।
* बच्चों को शिक्षकों से ही सीखने की आदत में कमी लानी होगी।
* प्रारंभ में, विषय मित्र द्वारा पारंपरिक तरीकों से विषय को बढ़ाना।
* विषय मित्र के बारे में दूसरे बच्चों से आने वाली शिकायतें। (अधिकारी जैसा व्यवहार, दंडित करने की आदत)।
* विषय मित्र द्वारा दूसरे बच्चों के विरुद्ध की जाने वाली शिकायतें। (मेरी बात नहीं सुनता, प्रश्नों का जवाब नहीं देता, बार-बार सिखाने पर भी नहीं सीखता, आदि)

चुनौतियों का सामना ऐसे करें

कुछ भी नया और सकारात्मक करने में समय लगता है, लेकिन अपने कौशल का उपयोग करके लगने वाली अवधि को छोटा किया जा सकता है।

बच्चे शिक्षक से ही सीखते हैं इस सोच को बदलना। तभी बच्चों की शिक्षक पर निर्भरता कम होगी और यही स्वअध्ययन की शुरुआत होगी।

विषय मित्र शिक्षकों की मदद के लिए नहीं बल्कि बच्चों को सहज सीखने के लिए, बच्चों को सीखने में मदद हो इससे उद्देश्य से यह योजना लागू किया गया है। जब अन्य बच्चों को पता चलता है कि विषय मित्र उनके मदद के लिए है, तो एक दूसरे के बारे में आने वाली शिकायतें बंद हो जाती हैं विषय मित्र शुरू में उनके शिक्षक ने उन्हें जैसे पढ़ाया वैसे ही पढ़ाता है, क्योंकि शिक्षक के रूप में या उनकी अध्यापन की समझ शिक्षक के अनुकरण से ही बनी है विषय मित्र की भूमिका जिम्मेदारी और अन्य विद्यार्थियों की उनसे अपेक्षाएं समझने मैं मदद की, कि यह शिकायतें कम हो जाएँगी।

*विषय मित्र योजना लागू करने में शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है।

*धैर्य रखें। (यह समझना की चर्चा, साझेदारी, धींगा-मस्ती का खेलना एक सीखने की प्रक्रिया है।)

*निरंतरता बनाए रखना।

*शुरुआत में बच्चों के साथ ज्यादा समय बिताएँ। उन्हें आदत पड़ गई तो अपनी भागीदारी कम करते जाना।

*विषय मित्रों और बच्चों को प्रोत्साहित करें।

*प्रत्येक चरण में सूक्ष्म रूप से निरीक्षण करें।

उपरोक्त चुनौतियाँ आपकी और बच्चे की इस प्रकार की आदत नहीं होने के कारण है। जैसे-जैसे काम आगे बढ़ता है, ये चुनौतियाँ गायब हो जाती हैं और खुशी संतुष्टि मिलनी शुरू हो जाती है। पियरलर्निंग, ग्रुप स्टडी और विषय मित्र इन तीनों के उपयोग से बच्चों के स्वयं अध्ययन की गति को तेज किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए अगला पाठ बच्चों को घर से पढ़ कर आने के लिए कहना। जब बच्चे सुबह स्कूल पहुंचे, तो अपने पिअर के साथ पाठ पर चर्चा करें। कक्षा शुरू होने के बाद, समूह में बैठे और पाठ के अज्ञात भागों को समझे। वास्तविक कक्षा शुरू हो जाने के बाद, पूरी कक्षा एक बड़ा समूह के रूप में कार्य करेगा उसमें शेष प्रश्नों पर अनसुलझे क्षेत्रों पर चर्चा करें। इस स्तर पर शिक्षक भी सहभागी हो।

इन तीनों स्तरों की चर्चाओं के बाद बचे हुए प्रश्न और समझ में ना आए क्षेत्रों पर विषय मित्र की मदद ले। इस प्रकार के एक पाठ हो जाने पर पाठ्य पुस्तक में आगे के पाठों का अध्ययन के लिए अवसर प्रदान करें। इसका मतलब है कि बच्चों को स्वयं अध्ययन, पियरलर्निंग, ग्रुप लर्निंगऔर विषय मित्र इस क्रम में सिखाना अपेक्षित है।

(2) बच्चों की जिज्ञासा का सम्मान करें

वास्तव में, प्रत्येक बच्चे में एक जन्मजात जिज्ञासा होती है। हर बच्चा जन्म के साथ ही जिज्ञासा लाता है। उन्हें जानना होता है कि, दुनिया कैसी चलती है? और कैसे काम करती है? लेकिन इस प्रकृतिक जिज्ञासा को अक्सर हम नजरअंदाज कर देते है। पालक, शिक्षक, मित्र और परिवार बच्चों में जिज्ञासा पैदा करने के लिए संघर्षरत रहते हैं, हालांकि बाहरी प्रेरणा से भी जिज्ञासु रवैया बनता है लेकिन वह ज्यादा टिकता नहीं है। इसके विपरीत बच्चे की आंतरिक इच्छा ही जिज्ञासा का स्वरूप है। इसी के चलते हर बच्चा दुनिया में और उसके आसपास होने के विभिन्न अनुभवों को ग्रहण करने के लिए संघर्ष करता है। उदाहरण के लिए प्रत्येक बच्चा अपनी पंच इंद्रियों से विभिन्न ध्वनियों, आकृतियों, रुचि की वस्तुओं को देखता सुनता स्पर्श करता है, और अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करता है। इन अनुभवों के माध्यम से बच्चों का आत्मविश्वास मजबूत होता है। तो हम सभी को समझना होगा, '**Every Child is Curious**.' हर बच्चे में जिज्ञासु रवैया होता है, उसे जागृत करने के लिए अलग अलग अनुभव और वातावरण देना पड़ता है।

जिज्ञासा एक विशेष दृष्टिकोण है जो बच्चे को कोई भी नई बात को ढूँढने में सहायता करता है। इससे विभिन्न नवाचारों की खोज उत्सुकता निर्माण करने तथा आश्चर्यचकित करने वाली बातों की खोज हमेशा करते रहता है। हालांकि यहां जिज्ञासा उम्र और स्तर के अनुसार अलग-अलग होती है और पूरी तरह से इच्छा पर आधारित होती है।

इच्छा जैसे भिन्न होती है वैसे ही जिज्ञासा भी भिन्न होती है इसलिए अगर हर बच्चे के बारे में सोचें तो पहले पता लगाना होगा कि उनकी दिलचस्पी किसमें है इससे जिज्ञासा जगाने की ओर आगे बढ़ सकते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में जिज्ञासा एक महत्वपूर्ण कारक है। इस जिज्ञासा को क्रियाकलाप में लाने के लिए शिक्षा क्षेत्र में कई तरह के प्रयोग और चिंता मुक्त भयमुक्त वातावरण बनाने की आवश्यकता है।

इस जिज्ञासु रवैया को जगाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना होगा।

रुचि पैदा करना

रूचि जिज्ञासा की कुंजी है, इसलिए बच्चे अपनी इच्छा और पसंद का पीछा करें इसलिए प्रत्येक बच्चे की पसंद, उत्सुकता को जानते हुए बच्चे को स्कूल में सभी प्रकार के काम करने की स्वतंत्रता दी जानी जरूरी है। रुचि निर्माण करना और मूल रूप से रूचि होना ये दो अलग-अलग बातें हैं। बच्चे की प्रकृति उसे तेजी से आगे बढ़ाती है, जो निर्माण की नई रुचि भी सही वातावरण देने पर उतना ही प्रभावी हो सकता है, इसलिए प्राकृतिक रूचि को बरकरार रखते हुए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से पैदा की गई रुचि को क्रियान्वित करना होता है। हर बच्चे के पृष्ठभूमि का विचार करें। बच्चे की पृष्ठभूमि ज्ञात होने से बच्चा किन परिस्थितियों से आया है? उनकी पृष्ठभूमि क्या है? इससे बच्चे की रुचि और जिज्ञासा का अनुमान लगाया जा सकता है।

मुक्त (खुले) प्रश्नों का उपयोग

गीत, कहानी, कथा, संवाद, पाठ, कविता, खेल इत्यादि पर खुले प्रश्न पूछना, प्रश्न बनाना और उत्तर देना, उत्तर खोजना आदि गतिविधि क्रियान्वित कर सकते है।

दिनचर्या बदलें

बच्चों और शिक्षकों की दैनिक गतिविधियाँ उबाऊ हो जाती है। उसमें बदलाव लाकर बच्चों की रुचि और उत्सुकता पैदा करने वाली बातें कर सकते हैं। 'कार्य में परिवर्तन ही विश्राम है' जिसमें विविधता ला सकते है। स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए और स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए पर्याप्त समय देना आवश्यक है।

पुस्तकालय का अधिकतम उपयोग

बिना पुस्तकालय वाले स्कूल को बिना इंजन का जहाज कहा जाता है इसलिए स्कूल में पुस्तकालय, पुस्तकों, पत्रिकाओं, पुरानी पुस्तकों के लगातार प्रदर्शन और पठन-लेखन से जिज्ञासा पैदा हो सकती है।

आश्चर्यचकित करने वाली बातें करना

नई चीजों में अंतर्निहित होता है यह समझकर अभिनव प्रयोग सृजनशीलता के साथ बच्चों को आश्चर्यचकित करने वाली बातें कक्षा, स्कूल के वातावरण में घटित होने चाहिए।

मन में आने वाले प्रश्नों के उत्तर खोजना

यहाँ तक कि अगर आपके पास और भी प्रश्नों के जवाब हैं तब भी बच्चों को अपने स्वयं के प्रश्न के उत्तर खोजने के लिए प्रेरित करें। ज्यादातर प्रश्नों के जवाब बच्चों को ही खोजने के लिए कहें। ऐसे अवसर बार-बार प्रदान करें।

बच्चों को पूछने के लिए प्रेरित करें

बच्चों को सतर्क रहने के अलावा उन में चिकित्सक सोच की क्षमता विकसित हो इसके लिए उन्हें लगातार प्रश्न पूछने के लिए उकसाये। क्यों? कैसे? किस लिए? क्या? कौन-सा? समय आने पर इस तरह के सवाल आसानी से पूछना आना चाहिए।

यात्रा करने और नए स्थानों दौरे के लिए प्रोत्साहन (विजिट)

बच्चों को नई जगहों पर जाना, यात्रा करना, स्कूल में होते रहना चाहिए।

बच्चों के रूचि का अवलोकन

यह मामला हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है और यदि उनकी पसंद समझ में आए तो उस प्रकार की विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रमों, परियोजनाओं, अनुसंधान आदि को अंजाम दे सकते हैं।

“मन में नया विचार आ गया, तो वह कभी भी अपने मूल आकार में नहीं लौटता है।“....अल्बर्ट आइंस्टीन

ये सभी बातें कक्षा में, स्कूल में, हर बच्चे के साथ होते रहने के लिए हम हमें भी उत्सुकता का निर्माण करने की आवश्यकता है।

ध्यान रहे बच्चों की जिज्ञासा उनके सीखने का आधार है। ऐसे में शिक्षक को बच्चों के प्रश्नों उत्तर देकर ही समझाना जरूरी नहीं है वरन कई बार उन प्रश्नों के उत्तर बच्चे कैसे ढूँढ पाएँगे, यह बताकर उनकी जिज्ञासा का अधिक सम्मान होगा। इससे बच्चे स्वयं ही मन के अंदर उठने वाले प्रश्नों के उत्तर खोजकर अधिक सीखने की ओर प्रवृत्त होंगे।

(3) सीखने की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी का उपयोग

शिक्षा प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में सोचते ही वाई-फाई से जुड़ी डिजिटल क्लास दिमाग में आता है। लेकिन प्रौद्योगिकी में तेजी से विकास बच्चों के सीखने में प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए पूरक साबित हो रहा है।

मोबाइल ने सीखने को बहुत आसान बना दिया है। साथ ही, यह कहा जाता है कि पाठ्यक्रम सीमित होता है, तथा वे बच्चों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार नहीं करते। भविष्य में क्या या किन बातों को करने की आवश्यकता होगी? आज कोई नहीं बता सकता। ऐसी स्थिति में एक चीज अवश्य की जा सकती है, और वह यह है कि, बच्चों को तकनीक की मदद से कैसे सीखते हैं? यह सिखाना एक बार जब बच्चा "सीखना कैसे है" यह सीख जाते हैं, तब बच्चे खुद से बहुत कुछ सीख सकते हैं। प्रौद्योगिकी खुद से सीखने का एक प्रभावी तरीका है आपको समझना होगा कि एंड्राइड मोबाइल केवल एक मोबाइल नहीं है, अपितु वह सीखने का एक खजाना है। कुछ ऐप को डाउनलोड करने के बाद इंटरनेट की आवश्यकता नहीं होती। वह ऑफलाइन चलता है, यह सभी लाभ हमें मोबाइल के माध्यम से मिल रहे हैं और इसलिए हमें सीखने की प्रक्रिया में इनका उपयोग करना चाहिए। बहुत सारी अलग-अलग चीजें हैं मीडिया में उपलब्ध हैं इसलिए जब बच्चे मोबाइल का उपयोग करते हैं तो उन्हें चिकित्सकीय सोच की आदत पड़ जाती है, साथ ही जिन चीजों के बारे में शिक्षक को पता नहीं है, जो चीजें शिक्षक नहीं कर सकते वे प्रौद्योगिकी के माध्यम से की जा सकती हैं। शिक्षक को सब कुछ याद नहीं रख सकता लेकिन बच्चों को भविष्य की बातें जानना जरूरी है। गूगल, यूट्यूब सर्च या शिक्षा के लिए अलग-अलग ऐप.. इन सभी की मदद से बच्चों के सीखने की गति बढ़ने वाला है और हमें इसे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसलिए शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग आवश्यक है।

इसके लिए शिक्षको को व्हाट्सएप/टेलीग्राम ग्रुप जरूर बनाया जाना चाहिए क्योंकि शिक्षक अपनी कक्षा की गतिविधियों सफलताओं को ग्रुप में शेयर कर सकेंगे।

व्हाट्सएप/टेलीग्राम ग्रुप में क्या-क्या शेयर करें?

* अपनी सफलता को शेयर करें।
* कठिनाई और समस्याओं को शेयर करें तथा उन कठिनाइयों समस्याओं का समाधान भी शेयर करें।
* बच्चों को दी जाने वाली चुनौतियाँ भी शेयर करें।
* चुनौतियों की सूची शेयर करें।
* किसी भी पाठ को पढ़ाने के पहले उस पाठ में दी जाने वाली चुनौतियाँ एवं पाठ से बाहर की चुनौतियाँ भी शेयर करें।

सीखने की प्रक्रिया में उत्सुकता को बढ़ाती है। जब आप उपरोक्त चीजें शेयर करेंगे तो, हम सभी शिक्षक एक दूसरे से सीखने सिखाने का काम कर अपनी कक्षा को समृद्ध करेंगे और धीरे-धीरे हमारा व्हाट्सएप ग्रुप एक दूसरे से सीखने सिखाने वाले समाज और संस्कृति के रूप में परिवर्तित होता चला जाएगा।

(4) बच्चों को स्वयं से अधिक सीखने के लिए चुनौती दें

यदि मानव मस्तिष्क को लगातार एक चुनौतीपूर्ण कार्य दिया जाए, तो यह लगातार प्रवाह की स्थिति में रहता है। बच्चे स्वाभाविक रूप से विभिन्न चुनौतियों की तलाश में रहते हैं, क्योंकि उन्हें लगातार सीखते रहना पसंद होता है। हमेशा नए की तलाश करना और उसे पूरा करना यही उनकी जीवन की गति होती है। इसलिए बच्चों को चुनौती देने का अधिक संबंध उनके मस्तिष्क के कार्य से होता है। मस्तिष्क, लगातार जागते हुए अपने कार्यों को सजगता से पूर्ण करने वाला अंग है। जिस प्रकार व्यक्ति को भोजन की आवश्यकता होती है, उसी तरह मस्तिष्क को प्रवाह में रखने के लिए चुनौती की भी आवश्यकता होती है। इसके लिए हमें मस्तिष्क को पूरक क्रिया देने की आवश्यकता होती है। आधुनिक मस्तिष्क अनुसंधान से पता चला है कि मस्तिष्क के विभिन्न भागों के विशिष्ट कार्य होते हैं। भाषा, गणित, रचनात्मक कार्य, नये विचारों के लिए मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्र कार्य करते हैं। मस्तिष्क के जो क्षेत्र पूरे दिन कार्य करते हैं, नींद के बाद भी वही क्षेत्र उत्तेजित होते हैं। इसका मतलब यह है कि मस्तिष्क के सभी क्षेत्रों को हावर्ड गार्डनर के बहु-बुद्धिमता के सिद्धांत के अनुसार काम में लगाया जाना चाहिए। मस्तिष्क को चुनौती देने का अर्थ, मस्तिष्क को वह भोजन देना है, जो उसकी आवश्यकता है। बच्चों को चुनौती देते समय आपको निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है : -

चुनौती स्वीकार करने के लिए तैयारी और रवैया : -

पहले बच्चों के व्यवहार और उनकी आदतों का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है, साथ ही बच्चों को चुनौती स्वीकार करने के लिए बच्चों की आदत और दृष्टिकोण को विकसित करना है।

स्वयं प्रयास की खुशी

सीखने की प्रक्रिया में बच्चों का स्वयं प्रेरणा से सीखना, उन्हें सबसे ज्यादा आनंद प्रदान करता है। वे विभिन्न चुनौतियों में ऐसा आनंद खोजने लगते हैं। वे समय के साथ छोटी-छोटी चुनौतियों का आनंद लेते हैं, बड़ी से बड़ी चुनौतियों को आसानी से पूरा कर सकते हैं।

स्नेह और अपनेपन का अनुभव

बच्चे स्नेह और साहचर्य से प्रेम करते हैं, क्योंकि उनकी भावना से निकट का संबंध होता है। जहाँ भी प्रेम की नमी होती है, वहाँ अपने आप बच्चों की भीड़ देखेंगे। सीखने की प्रक्रिया में भावनात्मक पक्षों को अधिक महत्व दिए जाने पर भावनात्मक बुद्धिमता विकसित होती है।

खेल और व्यायाम-

हमारे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा का लगभग 20% अकेले मस्तिष्क में जाता है। इसलिए बच्चों को खेलों से सीखने के साथ-साथ, व्यायाम का भी अवसर देना जरूरी है। खेल और व्यायाम को चुनौती में बदलना और उसे पूरा करने के लिए लगातार मदद करना, आपका काम है।

नई चीजें : बच्चों को लगातार नया करना पसंद होता है। यही वजह है कि छोटे बच्चे इस तरह की चीजें जल्दी सीखते हैं। इसलिए नई-नई चुनौतियाँ देते रहना महत्वपूर्ण है।

विविधता :-चुनौती में विविधता लाकर, मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों को क्रियाशील करने से, बच्चों में समग्र विकास होता है। जिससे कला, खेल, संगीत का आनंद, साहित्य का मनोरंजन, पठन आदि कई शौक का पालन किया जा सकता है।

रोजमर्रा की जिंदगी से जोड़ना : बच्चों को रोज-रोज एक जैसी बातें, एक जैसा काम अच्छा नहीं लगता। नतीजन उनकी नकारात्मकता बढ़ती है। उदाहरण के लिए पाठ्यपुस्तक से कॉपी करना, बार-बार परीक्षा देना, पाठ को दोहराना, उन्हें पसंद नहीं है, क्योंकि इसमें चुनौती शून्य है।

अध्ययन को चुनौती से जोड़ें : बच्चों के दैनिक अध्ययन को चुनौतियों के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों परियोजनाओं, शौक, जुनून को जोड़ा जाए और उनसे मिलने वाले आनंद लेने दिया जाए तो चुनौतियों का परिणाम दुगुना हो जाता है।

आनंददाई वातावरण और बच्चों की सुरक्षा : चुनौतियाँ देते समय आनंददायी वातावरण और बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखना चाहिए। वास्तव में, ऐसी चुनौतियों का एक बार माहौल बन जाने के बाद बच्चे स्वयं इसकी माँग करेंगे।

बच्चों की माँगों पर ध्यान दें : अधिकांश समय हम बच्चों की माँगों पर ध्यान नहीं देते और उन्हें भी चुनौतियाँ देते हैं जो हम चाहते हैं। हालांकि बच्चों को क्या चाहिए इसे देखते हुए कोई भी चुनौती दिए तो उसका पूरा होने या उसके पीछे की सफलता के प्रति 100% आश्वस्त हो सकते हैं। इसलिए अगर बच्चों की माँगों के अनुसार चुनौती दी जाती है, तो परिणाम अधिक मिलेगा।

विभिन्न चुनौतियों की सूची बनाना : शिक्षक और पालक भी, बच्चों या विद्यार्थियों को कौन-सी चुनौती देना उचित रहेगा, उसको क्या करना चाहिए इत्यादि को सोच समझकर पहले सरल फिर मध्यम और अंत में कठिन चुनौतियाँ देते जाएँ तो बच्चों की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता बढ़ती है, और सीखने की गति भी तेज होती है।

21 वीं सदी के कौशल : 21वीं सदी के कौशल विकास के लिए चुनौतियाँ दी जानी चाहिए| जैसे- रचनात्मक सोच (creative thinking), तार्किक सोच (critical thinking), संवाद कौशल (communication skill), सहयोगात्मक सोच (collaborative thinking), सहानुभूति (compassion), विश्वास (confidence)आदि।

यदि आप बच्चों की उम्र, विषय, चाहत और वर्ग के आधार पर चुनौतियों की सूची बनाते हैं, तो उन्हें अलग-अलग चुनौतियाँ दी जा सकती है। वास्तव में, चुनौती देना ही अब एक बड़ी चुनौती है। इसलिए चुनौतियाँ देते समय सभी को सतर्क रहना चाहिए। इसके लिए हमें भी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होने की जरूरत है। चुनौतियों को स्वीकार करें ताकि आप जीत के आनंद को महसूस कर सकें।

(5) बच्चों को खुद से सीखने के लिए प्रेरित करें-

बच्चे को खुद से सीखने के लिए प्रेरित करने की कुंजी इस सिद्धांत पर विश्वास करना है कि बच्चा खुद सीख सकता है। एक बच्चा बिना शिक्षक के सिखाए सीख सकता है, यह शिक्षकों और समुदाय के लिए वर्तमान में विश्वास करना कठिन हो सकता है। बच्चे ने स्कूल आने से पहले कई बातें सीखी है। बच्चों को कई ऐसी चीजें

आती हैं जो स्कूल में सिखाई नहीं जाती हैं। इसका अर्थ यह है, बच्चा स्वयं से सीखता है। शिक्षक की भूमिका, बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करना है। बच्चों को भविष्य के लिए तैयार होना है। लेकिन भविष्य कैसा होगा, यह शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को ही नहीं पता है। ऐसे समय में बच्चों के लिए खुद से सीखना, अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है इसलिए सीखने का मतलब **Learning to learn** है।

बच्चों की सीखने की प्राकृतिक प्रक्रिया में हस्तक्षेप न हो, एक मार्गदर्शक के रुप में, यह हमारी जिम्मेदारी है। बच्चों से बात करने से पता चलता है उनको जो बातें अच्छी लगती हैं, सीखने की आवश्यकता महसूस होती है, उसमें एक उद्‌देश्य होता है, इसमें नवीनता होती है, एक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण और बच्चे के लिए इसकी उपयोगिता होती है, तो ये बच्चे इसे स्वतः तीव्र गति से सीखते हैं।

हालाँकि शिक्षक के सामने असली चुनौती बच्चे की प्रेरणा को जगाना होता है। जीवन में अंतः प्रेरणा, बाहरी प्रेरणा से बहुत अधिक मूल्यवान साबित होता है। इस संबंध में हम हमेशा भीतर की आवाज, अंदर की आग इत्यादि शब्द अक्सर सुनते हैं।

इसलिए, बच्चों का सीखना केवल पाठ्यपुस्तक और दी जाने वाली परीक्षाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके व्यवहार, आचरण और समाज द्वारा सीखने का परिणाम दिखता है।

यहाँ पर पाठ्यपुस्तक की सीमाओं से परे जाकर सीखने और सिखाने की प्रक्रिया होने की उम्मीद है। जैसा कि शिक्षा शास्त्री वायगोत्सकी द्वारा ZPD (Zone Of Proximal Development) में उल्लेख किया गया है कि बच्चा जो जानता है और जो नहीं जानता, उसकी बीच का क्षेत्र बच्चे के लिए उपयुक्त होता है। इस क्षेत्र में मार्गदर्शक की भूमिका MKO (More Knowledgeable Other) होती है। अतः शिक्षक की भूमिका अधिक जानकार के रूप में होती है, बच्चे को जो ज्ञात नहीं है, उसे सीखने के लिए राह दिखा कर आवश्यक सुविधा मुहैया कराना और मदद करना है मार्गदर्शक की जवाबदारी होती है।

(6) सेल्फी विद सक्सेस-

शिक्षा प्रणाली को देखते हुए एक शिक्षक के रूप में यह महसूस किया जाता है कि शिक्षा क्षेत्र या शिक्षक के बारे में नकारात्मक पहलू बहुत तेजी से फैलते हैं। समाज में इसकी चर्चा होती है लेकिन जिस हद तक नकारात्मक मामलों पर चर्चा होती है। उतने ही शिक्षा के सकारात्मक पहलुओं पर नहीं होता जब इन कारणों की तलाश करते हैं, तो पता चलता है कि शिक्षा प्रणाली एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में मैं एक शिक्षक खुद को प्रचार से दूर रखता हूँ और इसलिए मेरे द्वारा की जाने वाली सकारात्मक चीजें अन्य लोगों तक पहुँचते ही नहीं है। परिणाम तो अच्छी बातों का प्रचार-प्रसार नहीं हो सकता और बुरी बातें फैलती रहती हैं। सेल्फी विद सक्सेस को इन सभी चीजों के समाधान के रूप में देखा जा सकता है। सफलता आने पर सेल्फी सिर्फ एक पब्लिसिटी नहीं है बल्कि शिक्षा प्रणाली के एक घटक के रूप में मेरा कर्तव्य है मैं अच्छा करूं और उसमें सफलता आए तो वह मुझे दूसरों तक पहुँचानी चाहिए, इससे अन्य लोगों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरणा मिलती है। सेल्फी विद सक्सेस के शानदार परिणाम आ रहे हैं, इसका उपयोग आप के साथियों के सीखने के लिए हो रहा है। शिक्षा प्रणाली में कितना भी प्रशिक्षण दें। कितने ही समय के लिए ट्रेन इसकी सीमा अवश्य है फिर भी प्रशिक्षण की आवश्यकता समाप्त नहीं होगी। उस आवश्यकता रोज पूरा करने काम सेल्फी

विद सक्सेस करता है। आप व्हाट्सएप के माध्यम से सेल्फी लेकर अपनी कक्षा की सफलता अपनी कक्षा में आने वाले अनुभव सेल्फी विद सक्सेस से साझा करते हैं। दोस्त आपकी सफलता और प्रक्रिया को समझते हैं और वे उसे अपनी कक्षा में भी क्रियान्वित करते हैं। अपनी कक्षा में क्या किया जाना चाहिए आपको कौन-सी गतिविधि करनी चाहिए और क्या करने से सफलता प्राप्त होती है यह सभी बातें को सेल्फी विद सक्सेस से पता चलते रहता है। इस लिहाज से सेल्फी विद सक्सेस एक मजेदार गतिविधि है।

आइए हम एक और स्कूल की मैडम का उदाहरण देखते हैं कक्षा पहली की एक लड़की सब की सेल्फी ले गई जब उसकी सेल्फी नहीं ली जा रही थी तो लड़की ने कहा मेरी सेल्फी लो उसे बताया गया कि यदि वह अध्ययन करती है तो उसकी भी सेल्फी ली जाएगी वह उस रात 10:00 बजे तक पढ़ती रही अगली सुबह वह आई और बोली आपने जो कुछ भी कहा वह मैंने पूरा किया है अब आप के साथ मेरी सेल्फी लीजिए खास बात यह है कि यह लड़की पहली कक्षा की छात्रा थी बच्चों को शिक्षक के साथ सेल्फी लेना अच्छा लगता है। शिक्षकों को यह समझने की आवश्यकता है कि नकारात्मक चीजों का प्रचार करने की आवश्यकता नहीं पड़ती लेकिन सकारात्मक चीजों का जानबूझकर प्रचार किया जाना चाहिए, इसके लिए व्हाट्सएप ग्रुप एक प्रभावी साधन है। शिक्षकों को शैक्षणिक उपलब्धि पर समूहों में सेल्फी साझा करना चाहिए इससे अन्य शिक्षकों को काम करने की दिशा मिलती है। कक्षा के बच्चों को प्रेरणा मिलेगी और साथ ही शिक्षा में हो रही अच्छी चीजों का समाज में प्रचार प्रसार होगा सब मिलाकर सकारात्मक माहौल बनाने के लिए सेल्फी विद सक्सेस बहुत ही उपयोगी हो सकता है।

एक रोचक उदाहरण दैनिक अभ्यास के बाद रोज बच्चों की सेल्फी लेते हुए देख कर पहली कक्षा की छात्रा पायल ने एक पेज भर लिखा और मुझे दिखाया। मैंने कहा, कि ठीक है, और वह बैठ गई। एक बार फिर उसने मुझे एक से सौ तक संख्या लिखकर दिखाई। मैंने उसे बहुत अच्छा कहा वह मुस्कुराई और बैठ गई। थोड़ी देर बाद उसने एक पर फूल बनाया और मुझे दिखाया। मैंने उससे कहा कि वह आज पायल बहुत अध्ययन कर रही है। वह मुस्कुराई और फिर बैठ गई बाद में बीच की छुट्टी हुई। उस छुट्टी में भी उसने बाहर बोर्ड पर नंबर लिख कर दिखाया। मैंने उसे बहुत बढ़िया वेरी गुड कहा। वह हँसी और अपने जगह पर जाकर बैठ गई। चार बजे वह मेरे पास आई और कहा, मैंने आज खूब पढ़ाई की है, मेरे साथ सेल्फी कब लेंगे? मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। फिर मैंने उसके साथ सेल्फी ली वह बहुत खुश हुई। मुझे भी बहुत खुशी हुई।

व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षक की भूमिका-

- शिक्षकों का व्हाट्सएप टेलीग्राम ग्रुप बनाना।
- ग्रुप की हर पोस्ट को ध्यान से पढ़ना।
- व्हाट्सएप ग्रुप के लिए कम से कम एक से डेढ़ घंटा समय रोज दें। अपनी उपलब्धियों को समूह में साझा करना।
- कक्षा की दैनिक अध्यापन या कक्षा के क्रियाकलाप समूह में साझा करना।
- व्हाट्सएप / टेलीग्राम ग्रुप में होने वाली चर्चा में भाग लेना।

- पोस्ट लिखना कभी-कभी बड़ा काम लगता है। इस काम को सरल करने के लिए speech Note जैसे ऐप का उपयोग करें।

समावेशी शिक्षा -

यह एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है, जिसमें सभी तरह के बच्चों (दिव्यांग, सामान्य, प्रतिभाशाली) को नियमित स्कूल में शिक्षा दी जाती है। जहाँ विशिष्ट बच्चों, विभिन्न क्षमता वाले बच्चों का सामान्य बच्चों के साथ एक ही कक्षा में शिक्षा प्रदान की जाए। धर्म, जाति, लिंग समाज परिवार आदि के आधार पर बिना भेदभाव के एक ही कक्षा में शिक्षा देना समावेशी शिक्षा कहलाता है।

समावेशी शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से समावेशी शिक्षा बच्चों के लिए एक ऐसा अवसर प्रदान करता है, जिसमें दिव्यांग बालक-बालिकाओं एवं सामान्य बालक-बालिकाओं के साथ मानसिक रूप से प्रगति प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

दिव्यांग बच्चों की जरूरतों को पूरा करें-

- उन्हें अपने स्तर पर सभी गतिविधियों में शामिल करें, ताकि वे स्वयं को योग्य महसूस कर सकें।
- बच्चों को स्वेच्छा से उनकी मदद करने के लिए संवेदनशील बनाएँ, न कि दया की भावना या इसे बोझ महसूस करने के लिए।
- उन्हें अन्य बच्चों के साथ अपने समस्यायों को सुलझाने के लिए प्रोत्साहित करें।
- कक्षा की समस्याओं को हल करने में उन्हें मंडली के समय का हिस्सा बनाएँ।

- ऐसे बच्चों के माता-पिता को घर पर पालन-पोषण और सहायता के लिए परामर्श देना और उनका मार्गदर्शन करना। उन्हें अपने बच्चे की ताकत की सराहना करने के लिए कहें, इस बारे में बात करें कि घर पर पूरा परिवार कैसे सहयोग कर सकता है?
- ऑटिस्टिक और अतिसक्रिय बच्चों को विशिष्ट देखभाल प्रदान करने के लिए एक विशेषज्ञ शिक्षक की मदद लें। शिक्षक को उसके बारे में पता होना चाहिए और विशेषज्ञ द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए।

कक्षा में समावेशी वातावरण का निर्माण कैसे करें- कक्षा में सामान्य व विशेष बच्चों में भेदभाव न हो। दिव्यांग बच्चों की सहायता उनके समीप बैठने वाले संगी-साथी करें। अधिगम प्रक्रिया में दोनों प्रकार के बच्चे सहभागी हों। दिव्यांग विद्यार्थी के प्रति शिक्षक व सामान्य विद्यार्थियों की संवेदनशीलता हो। यदि धीमी गति से सीखने वाले या अधिगम बाधित बच्चे को कोई बात समझ में न आई हो तो शिक्षक उसे बार-बार बताएँ। कक्षा के प्रतिभाशाली बच्चे को भी ऐसे बच्चों की सहायता हेतु तैयार करें। शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों को अभिप्रेरणा दें। दिव्यांग विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुरूप कक्षा शिक्षण हो। ये सब बातें कक्षा में समावेशी वातावरण का निर्माण करती हैं।

शिक्षक की भूमिका-

- विशिष्ट बच्चे एव सामान्य बच्चों को एक साथ पढ़ने के लिए शैक्षिक संस्थाओं में विशेष व्यवस्था करनी चाहिए।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे वे बच्चे होते हैं जिन्हें विशेष देखभाल की आवश्यकता होती हैं, इन्हें शिक्षक कुछ ज्यादा समय दें तो ये बच्चे सामान्य बच्चों की तरह हो सकते हैं। उदाहरण- तारे जमीं पर (फिल्म)
- बच्चों के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जाए।
- शिक्षण गतिविधि में एक साथ शामिल करने के लिए कार्ययोजना बनाएँ।
- बच्चों में शामिल कला, गुण कौशल आदि का पता लगाएँ। इन्हीं कौशलों के आधार पर बच्चों को अधिक सीखने के अवसर उपलब्ध कराएँ।
- कक्षा में ऐसे गतिविधि लें जिससे बच्चों को एक-दूसरे की जरूरत और भागीदारी की जरूरत महसूस हो। जिससे बच्चे में एक-दूसरे की सहायता की भावना निर्मित होने में मदद मिल सके।
- बच्चों को विशेष चुनौती वाले (दिव्यांग) वाले बच्चों को शामिल करने के लिए प्रेरित करें।
- धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की समस्या का पता लगा कर उनका निवारण करना।
- बच्चों में जागरूकता की भावना निर्माण करना।
- सभी बच्चों को शिक्षित कर देश की मुख्य धारा से जोड़ना।
- बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना।
- सभी बच्चों की भ्राँतियों को दूर करना।

समावेशी शिक्षा में शिक्षक की कार्ययोजना-

- माता-पिता, समुदाय, के साथ विशिष्ट बच्चों को अवसर प्रदान करें।
- इसके सीखने के बारे में बताने हेतु पालकों से गृह भेंट की कार्ययोजना बनाएँ।
- ऐसे बच्चों का घर जो एक-दूसरे के पास हो, उन्हें विशिष्ट बच्चों को स्कूल में लाने के लिए प्रेरित करें।
- सत्र की योजना में सभी बच्चों की मदद से सभी बच्चे सीखे ऐसी योजना बनाएँ।

समावेशी शिक्षा का महत्व :-

समावेशी शिक्षा निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है-

1. शारीरिक दोष मुक्त विभिन्न बच्चों की विशेष आवश्यकताओं की सर्वप्रथम पहचान करना तथा निर्धारण करना।
2. शारीरिक दोष गंभीर स्थिति को प्राप्त हो, उसके पहले उनकी रोकथाम के लिए उपाय किए जाने चाहिए। बच्चों के सीखने की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए कार्य करने की विभिन्न नवीन विधियों द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना।
3. शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बच्चों का पुनर्वास कराया जाना।
4. शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बच्चों को शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्रदान करना।
5. शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बच्चों को शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्रदान करना तथा सुधार हेतु सामूहिक संगठन की तैयारी किया जाना।
6. बच्चे की असमर्थताओं का पता लगाकर उनके निवारण के प्रयास करना।

परिवार एवं समुदाय की भूमिका-

प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों का जुड़ाव बनाए रखने के लिए विभिन्न खेल गतिविधियों के साथ-साथ पालकों की सहभागिता भी आवश्यक है। अभिभावकों का विश्वास एवं भागीदारी होने पर बच्चों को स्तरानुसार सीखने के प्रतिफल की संप्राप्ति व गुणवत्ता प्राप्त करने में काफी सहजता होती है। सजग रणनीतियाँ एवं सहयोगात्मक कार्यविधियाँ ही स्कूल रेडीनेस और समुदाय के अंतर्सम्बंध व समन्वय को प्रगाढ़ करती है|

पालकों की सहभागिता बनाने के लिए चिह्नित कुछ महत्वपूर्ण तरीके इस प्रकार हैं:-

अभिभावकों द्वारा स्कूल रेडीनेस में आयोजित होने वाली गतितिधियों में भाग लेने के परिणामस्वरूप बच्चे की अधिकाधिक उपस्थिति, शैक्षणिक प्रक्रिया का अधिक संदर्भित होना पाया जाता है, इसके अतिरिक्त केंद्र के बाहर भी बच्चों को मिलने वाले अनुभवों में निरंतरता बनी रहती है।

प्रत्येक बस्ती या मुहल्ले में माताओं के समूह का गठन उन बच्चों के लिए किया जा सकता है, जो स्कूल रेडीनेस के अंतर्गत आते हैं। वे समूह समय-समय पर बच्चों के साथ-साथ विभिन्न शिक्षण गतिविधियों (बुनियादी पठन और अंकगणितीय गतिविधियों) को पूरा करने के लिए समय-समय पर मिल सकते हैं| यह समूह शिक्षक को व्यापक रूप से मदद करने में सहायक होगा तथा समय-समय पर संपर्क बनाने के लिए समुदाय को मार्गदर्शन प्रदान करेगा। शाला प्रबंधन समिति, शिक्षक माता-पिता और समुदाय के बीच जागरूकता पैदा करने में एक सक्रिय भूमिका अदा करती है। ब्लॉक स्तर पर, सरपंच/वार्ड सदस्य को सम्मिलित करते हुए पालकों के साथ विभिन्न बुनियादी गतिविधि आयोजित करते हुए कार्य किया जा सकता है जिसमें एक साथ पढ़ना, एक साथ सीखना, खेलना और विभिन्न गतिविधियों का संचालन करने के लिए एफ.एल.एन. नोडल व्यक्ति से संपर्क कर सकते हैं। यह समुदाय/बच्चों को एफ.एल.एन. के भाग के रूप में नई चीजें सीखने में सहायता करता है।

यह आवश्यक नहीं कि सिर्फ माता-पिता को ही बुलाया जाए। समय-समय पर बच्चों के दादा-दादी या अन्य सक्रिय लोगों को स्कूलों/केंद्रों में बुलाकर बच्चों को कहानी सुनाने की सक्रिय गतिविधियाँ कराते हुए आनंदायी शिक्षा व सीखने सिखाने की नई चुनौतियाँ दी जा सकती हैं|

अन्य प्रभावी गतिविधियाँ-

- विभिन्न प्रकार के कौशल और कार्य (एक्सपोजर) के संबंध में बच्चों को उन्मुख करना (बढ़ई, दुकानदार, दर्जी, डॉक्टर आदि) गाँव में बच्चों को अपने पास बुला सकते हैं, जिससे बच्चों की विभिन्न जिज्ञासाओं का भी समाधान किया जा सकता है।
- समुदाय आँगनबाड़ी केंद्र की गतिविधियों के महत्व से परिचित हैं, परिणामस्वरूप आँगनबाड़ी केंद्र के सेवाओं की अधिक माँग आती हैं। समुदाय का सहयोग स्कूल रेडीनेस की गतिविधियों में सहभागिता तथा भौतिक संपत्तियों के रखरखाव में भी सहयोग प्रदान करेगा, जिससे समुदाय का केंद्र से जुड़ाव ज्यादा बेहतर तरीके से हो पाएगा।
- प्रभावी सामुदायिक प्रतिभागिता को सुनिश्चित करना, समुदाय का स्कूल की गतितिधियों में सम्मिलित होना आईसीडीएस के घोषित उद्देश्यों में से एक है। पालकों की सहभागिता से स्कूल में पालकों के योगदान संबंधी समस्त उद्देश्यों (देखरेख एवं शिक्षा) की पूर्ति होती है।

- अभिभावकों और सामुदायिक सदस्यों को इस बात की पहचान बनाने में सम्मिलित होने दें, बच्चे के लिए क्या सीखने योग्य है तथा यह निर्णय लेने दें कि इस कार्य को किस प्रकार किया जा सकता है। इससे शिक्षकों को एक कार्य को विविध तरीके से करने के अनेक अवसर भी प्राप्त होंगे। साथ ही शिक्षक व पालकों के बीच बाल मनोविज्ञान की अवधारणा को समझने में भी सरलता होगी।
- समुदाय को अपने बच्चे के विकासपरक और शैक्षिक आवश्यकताओं के बिंदुओं को बैठक के विभिन्न एजेंडों में शमिल करना होगा। जिससे कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे बच्चे के विकास हेतु उपयुक्त तरीके ही अपनाएँ।
- अभिभावकों को अपने घर में प्रेरक वातावरण के निर्माण हेतु सक्षम बनाएँ, जिससे कि वे बच्चों का उचित मार्गदर्शन आनंददायी शिक्षा को बढ़ावा देने में कर सकें। बाल मनोविज्ञान को समझने हेतु पालकों को बुलाकर बच्चों के साथ विभिन्न गतिविधियाँ करते हुए कार्य करने की विभिन्न चुनौतियाँ खेल गतिविधि द्वारा की जा सकती है।
- पालकों द्वारा खेल-खेल में घर में भी बच्चों की समस्त जिज्ञासाओं को शांत करना परम आवश्यक है। जिससे कि प्रारंभिक अवस्था में बच्चे के मस्तिष्क का पूर्ण विकास हो सके।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि पालकों का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग हमें स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम में बहुआयामी मदद करता है। बाल मनोविज्ञान को समझते हुए पालकों के सहयोग से हम स्कूल रेडीनेस में बच्चों का उत्तरोत्तर विकास कर सकते हैं।

परिशिष्ट
ऊर्जा का संरक्षण

ऊर्जा प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिया गया एक उपहार है किंतु यह भी सत्य है कि यह संसाधन सीमित है और इसके बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वर्तमान समय में मनुष्य की निर्भरता इसके प्रति बढ़ती ही जा रही है। मानव जीवन को आरामदेह बनाने के लिए दिन प्रतिदिन नवीन उपकरणों की खोज और इनके प्रति मनुष्य की निर्भरता इसकी खपत को बहुत अधिक बढ़ाते जा रहे हैं। बढ़ते हुए वाहनों की संख्या ने पेट्रोल एवं डीजल की खपत को बहुत अधिक बढ़ा दिया है तथा बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव में भोजन पकाने के इन दिनों की खपत में भी बहुत ज्यादा वृद्धि की है। साथ ही साथ सुविधा प्रदान करने वाले विद्युत उपकरणों की होड़ में मनुष्य भी विद्युत के प्रति निर्भरता और उसकी खपत को मात्र एक दशक में कई गुना ज्यादाः बढ़ा दिया है। बढ़ती हुई खपत के साथ–साथ यह बात भी निश्चित है कि ऊर्जा का यह भंडार धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। इन स्रोतों को बचाने के लिए हमें अपने व्यवहार को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। ऊर्जा की बचत के लिए हमें संवेदनशील होना होगा क्योंकि ऊर्जा का संरक्षण हमारी अगली पीढ़ी के लिए हमारा उत्तरदायित्व है।

सौर ऊर्जा विद्युत संरक्षण का एक महत्वपूर्ण विकल्प – सूर्य की ऊर्जा का उपयोग करना ऊर्जा के संरक्षण का एक बहुत बेहतर विकल्प है। इसके लिए हम सोलर प्लेट के माध्यम से बैटरी में सूर्य की ऊर्जा को परिवर्तित कर विद्युत ऊर्जा के रूप में एकत्रित कर सकते हैं एवं विद्युत के समस्त उपकरण जैसे पंखे, लाइट, पंप आदि पर उपयोग कर सकते हैं। यह ऊर्जा संरक्षण का सर्वोत्तम विकल्प है। भोजन पकाने के लिए सोलर कुकर नामक यंत्र बनाए गए हैं, जिसके माध्यम से सूर्य की रोशनी की उपस्थिति में सौर ऊर्जा का उपयोग कर भोजन को आसानी से पकाया जा सकता है और एक बड़ी मात्रा में ऊर्जा का संरक्षण किया जा सकता है। ठीक इसी तरह पवन चक्की के द्वारा वायु ऊर्जा को बैटरी के माध्यम से विद्युत ऊर्जा के रूप में एकत्रित कर उसका उपयोग भी किया जा सकता है। यह भी एक ऊर्जा संरक्षण का उत्तम विकल्प है।

ऊर्जा के संरक्षण के लिए क्या करें?

1. पंखे एवं लाइट को बंद करने की आदतों का विकास बच्चों में करना चाहिए। इस हेतु शिक्षकों को कक्षा के मॉनिटर को जागरूक करना चाहिए, कि वह उपयोग के पश्चात पंखे एवं लाइट बंद करना सुनिश्चित करें। शिक्षकों को भी अपने व्यवहार से यह संदेश देना चाहिए कि वे ऊर्जा संरक्षण के प्रति संवेदनशील है। आवश्यकता के पश्चात् कार्यालय में चलने वाले पंखे एवं लाइटों को उन्हें बंद करना चाहिए।

2. कंप्यूटर में कार्य पूरा होने के पश्चात उसे बंद कर दें। यदि फिर भी उसे चालू रखना आवश्यक है तो मॉनिटर को ऑफ करके सिर्फ कंप्यूटर को चालू रखें। इससे बिजली की बचत की जा सके।

3. साधारण बल्बों की जगह एल.ई.डी बल्ब का प्रयोग करें।

4. सूर्य के प्रकाश का हर संभव स्थान पर उपयोग करके, बिजली से जलने वाली लाइट का प्रयोग कम करें।

5. कूलर एवं पंखों में रेगुलेटर का प्रयोग करें।

6. धोने योग्य कपड़ों को एकत्र कर वाशिंग मशीन की पूरी क्षमता का उपयोग करते हुए कपड़े को धोना चाहिए।

7. वाशिंग मशीन में गर्मियों के दिन में ड्रायर का उपयोग नहीं करना चाहिए।

8. आयरन 1000 वाट विद्युतीय उपकरण है मात्र 1–2 कपड़े प्रेस करने के लिए इसका उपयोग नहीं करना चाहिए।

9. खाना पकाते समय चौड़ी सतह के बर्तनों का प्रयोग करना चाहिए।

10 खाना पकाने के पूर्व दाल एवं चावल को भिगो लेना चाहिए। इससे भी ईंधन बचत होती है।

11. खाना पकाते समय आवश्यकतानुसार पानी का प्रयोग करना चाहिए, अधिक पानी नहीं लेना चाहिए, छोटे चूल्हे का प्रयोग करना चाहिए। इससे कम ईंधन की खपत होती है।

12. फ्रिज को ठंडे स्थान पर रखना चाहिए एवं छोटे–छोटे कार्यों के लिए बार–बार नहीं खोलना चाहिए।

चलो हम बिजली बचाएँ,

देश को आगे बढ़ाएँ।

बेवजह बल्ब न जलाएँ।

देशहित में ईंधन बचाएँ।

जल संरक्षण

भारत ही नहीं अपितु पूरे दुनिया में शुद्ध पेयजल की कमी एक बहुत बड़ी समस्या है। वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता जल का है। भू–जल जो कि मानव जीवन से जुड़ा हुआ एक विशेष पहलू एवं जल का सहज स्त्रोत है, उनमें भी लगातार गिरावट आती जा रही है। वर्षा जिसके माध्यम से भूमि के अंदर जल का संरक्षण होता है वह भी कंक्रीट जंगल और लगातार वर्षों की होने वाली कमी के कारण कम होता जा रहा है। आज आवश्यकता है कि हम वर्षा के जल को जितना अधिक से अधिक हो सके भूमिगत करके संरक्षित छोटे–छोटे नालों में बहने वाले जल को छोटी बाध परियोजना से रोके एवं घरों के निर्माण में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को बढ़ावा देकर जल स्त्रोत में वृद्धि करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। हम विद्यालय स्तर पर छोटे–छोटे प्रयास कर सकते है जिसमें हम अपने बच्चों को जल संरक्षण के प्रति सजग बना सकते है –

विद्यालय/घर में किए जाने वाले प्रयास

- घर/विद्यालय की टंकी अगर ओवर हो रहा है तो हम इस बात का ध्यान रखें कि कितने समय में टंकी भर जाएगा और समय से पहले ही पंप बंद कर दें।
- यदि किसी नल से पानी टपक रहा है तो उसे तुरंत ठीक करवाएँ।
- ग्लास में पीने के लिए उतना ही पानी में जितनी हमे प्यास हो। व्यर्थ में पानी बर्बाद न करें।
- बर्तन धोने के बाद एवं सब्जियों को धोने के बाद उस पानी का प्रयोग हम पेड़ पौधों में सकते हैं।
- कार/बाईक आदि को कपड़े से साफ करें, पानी से साफ करके पानी की बर्बादी न करें।
- Rainwater Harvesting को हमें अनिवार्यता अपनाना करना चाहिए एवं बच्चों को विज्ञान विषय के माध्यम से उसके महत्व को बताना चाहिए।
- कहीं भी पानी की बर्बादी न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- शौचालय में अनावश्यक पानी की बर्बादी ना करें।
- अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें जिससे भू–जल का स्तर बढ़े।
- नदी,तालाब,कुँओं आदि के पानी को भी स्वच्छ रखे।
- कहीं भी यदि नल खुले हो तो उसे बंद करें।

भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में शुद्ध पेयजल की कमी एक बहुत बड़ी समस्या है। वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता जल का संरक्षण है भू–जल जो कि मानव जीवन से जुड़ा हुआ एक पहलु एवं जल का सहज स्त्रोत है। उसमें भी लगातार गिरावट आती जा रही है। वर्षा जिसके माध्यम से भूमि के अंदर जल का संरक्षण होता है। आज आवश्यकता है कि हम वर्षा के जल का जितना अधिक से अधिक हो सके भूमिगत करके संरक्षित करें एवं छोटे–छोटे नालों में बहने वाले जल को छोटी बांध परियोजना में रोके एवं घरों के निर्माण वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को बढ़ावा देकर जल स्रोत में वृद्धि करने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ।

पर्यावरण संरक्षण एवं सतत् ग्रामीण विकास

सफाई सभी को पसंद है, यहाँ तक कि जानवर भी अपने स्थान को साफ करके बैठते हैं लेकिन जब हम सार्वजनिक स्थानों पर जाते हैं तो हम यह भूल जाते हैं कि सार्वजनिक स्थानों को साफ रखना भी हमारी जिम्मेदारी है, हमें आदत बनानी होगी कि हमारा परिवेश साफ सुथरा रहें। पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधे, जीव–जंतु, और मानव इसकी तरफ कदम उठाए जाना अत्यंत आवश्यक है यदि हम विद्यालय स्तर पर प्रयास करें तो किचन गार्डन, हर्बल गार्डन आदि विद्यालय में बनाए जा सकते है।

- प्रत्येक बच्चे/समूह/कक्षा को एक–एक की जिम्मेदारी दी जा सकती है।
- एस.एम.सी. एवं पंचायत सदस्यों द्वारा गाँव/स्कूल में वृक्षारोपण करके उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु कदम उठाए जाने चाहिए।
- विद्यालय में जिनका भी जन्मदिन हो शिक्षक/विद्यार्थी उनके द्वारा एक पौधारोपण होना चाहिए।
- बच्चों को पेड़ पौधों के संरक्षण व देखभाल के लिए लगातार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- शिक्षक को स्वयं बच्चों के लिए पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में प्रेरणा/उदाहरण बनाना चाहिए।
- हमारे प्रदेश में विद्यालय जून माह से शुरू होता है उस समय मानसून आ जाता है। यदि हम चाहे तो प्रत्येक बच्चों से प्रवेश के समय ही पौधा लगवा सकते है, इससे बच्चों में विद्यालय एवं पौधों के प्रति लगाव बढ़ेगा कि हमें भी कुछ जिम्मेदारी दी गई है।
- पुराना पुस्तकों का पुनः उपयोग भी पर्यावरण संरक्षण ही है।

संदर्भ सूची

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एमएचआरडी भारत सरकार, एमएचआरडी 2020।
2. निपुण भारत–कार्यान्वयन के लिए दिशा–निर्देश। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, एम.ओ.ई (2021ए)।
3. पूर्व–प्राथमिक पाठ्यचर्या राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, दिसंबर 2019।
4. पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के लिए दिशा–निर्देश राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, दिसंबर 2019।
5. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली।
6. विद्या प्रवेश, एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली 2021।
7. प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र प्रथम संस्करण 2010 एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
8. बुनियादी साक्षरता कौशल और संख्यात्मक ज्ञान डी.आर.जी. प्रशिक्षण मॉड्यूल, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन दिल्ली।
9. प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण और अकादमिक सहयोग, कोर्स मॉड्यूल–1, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन दिल्ली।
10. बहुभाषी शिक्षण की नींव, कोर्स हैंडबुक, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन दिल्ली।

चुनौती

बच्चों को चुनौती देने का मतलब है,
हम उनके दिमाग को उकसाते हैं।
तभी तो बच्चे उनको पूरा करके,
आत्मविश्वास से इतने सुंदर मुस्काते हैं।
इसी तरह वे चुनौतियाँ पूरी करते,
सीखते हुए आगे बढ़ जाते हैं।
अब आप ही बताएँ साथियो, बच्चे,
इतना तेज किस तरीके से सीख पाते हैं।

पहला दिन-FLN, NIPUN BHARAT और NEP-2020 परिप्रेक्ष्य				
सत्र	विवरण	समय	अवधि	आवश्यक सामग्री
	पंजीयन	15 मिनट	10.00-10.15AM	स्टेशनरी
सत्र-1	NEP-2020, निपुण भारत ,FLN मिशन पर समझ बनाना	1 घंटे	10.15-11.15AM	NEP-2020, NIPUN BHARAT और FLN मिशन का चार-चार पेज का प्रिंटेड कापी (आलेख 1,2,3),कोरा कागज,स्केच पेन
चाय 15 मिनट 11:30-11:15 AM				
सत्र-2	विकासात्मक लक्ष्य और क्षमता आधारित शिक्षण	1 घंटे	11:30-12:30 AM	
सत्र-3	स्कूल रेडीनेस	1 घंटे	12.30-12.30 PM	
भोजनावकाश 1 घंटे 1:30-2:30 PM				
सत्र-4	वर्तमान परिदृश्य में स्कूल रेडीनेस की आवश्यकता	1 घंटे	2:30-3:30 PM	
चाय 15 मिनट 3:30-3:40 PM				
सत्र-5	बच्चे कैसे सीखते हैं और सीखने की चुनौतियाँ	1:30 घंटे	3:40-5:10 PM	
	समेकन	20 मिनट	5:10-5:30 PM	

दूसरा दिन स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम में शामिल प्रमुख शिक्षण सत्र और गतिविधियाँ (सर्कल टाइम, खेल और संख्या पूर्व व संख्यात्मक कौशल)				
क्रम	**सत्र**	**अवधि**	**समय**	**आवश्यक संसाधन**
	फीडबैक	**15 मिनट**	**10.00 -10.15 AM**	
सत्र-1	**सर्कल टाइम- बच्चों का स्वागत और दिन की शुरुआत अलविदा समय-दिन के समापन की गतिविधियाँ**	**1 घंटे**	**10.15-11.15 AM**	
चाय 15 मिनट 11:30-11:15 AM				
सत्र-2	**आरंभिक बाल्यावस्था और खेल का महत्त्व**	**1 घंटे**	**11:30-12:30 AM**	
सत्र-3	**खेल का पैटर्न और नियोजन - 1. मुक्त खेल और निर्देशित खेल 2. कक्षा के अन्दर (इनडोर) और बाहर मैदान में (आउटडोर) खेले जाने वाले खेल**	**1 घंटे**	**12.30-12.30 PM**	
भोजनावकाश 1 घंटे 1:30-2:30 PM				
सत्र-4	**संख्या पूर्व और संख्यात्मक कौशल**	**1 घंटे**	**2:30-3:30 PM**	
चाय 15 मिनट 3:30-3:40 PM				
सत्र-5	**संख्या पूर्व और संख्यात्मक कौशल पर्यावरण और वैज्ञानिक सोच**	**1:30 घंटे**	**03:40-5:10 PM**	
समेकन		**20 मिनट**	**5:10-5:30 PM**	

तीसरा दिन (भाषा और साक्षरता कौशल; पर्यावरण जागरूकता एवं वैज्ञानिक सोच)				
क्रम	सत्र	अवधि	समय	आवश्यक संसाधन
	फीडबैक	15 मिनट	10.00 -10.15 AM	
सत्र-1	मौखिक भाषा और अभिव्यक्ति मौखिक भाषा विकास सुनने की समझ शब्दावली विकास रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति	1 घंटे	10.15-11.15 AM	
चाय 15 मिनट 11:30-11:15 AM				
सत्र-2	पढ़ना आओ पढ़ें ध्वनि जागरूकता प्रिंट चेतना शब्द पहचान और चित्र देखकर अर्थ बताना	1 घंटे	11:30-12:30 AM	
सत्र-3	लिखना हवा में लिखो चित्रकारी करो	1 घंटे	12.30-12.30 PM	
भोजनावकाश 1 घंटे 1:30-2:30 PM				
सत्र-4	लेखन किताबों के साथ जुड़ाव डिकोडिंग	1 घंटे	2:30-3:30 PM	
चाय 15 मिनट 3:30-3:40 PM				
सत्र-5	पर्यावरण जागरूकता एवं वैज्ञानिक सोच	1:30 घंटे	03:40-5:10 PM	
समेकन		20 मिनट	5:10-5:30 PM	

चौथा दिन - दैनिक शिक्षण योजना एवं आकलन				
क्रम	सत्र	अवधि	समय	आवश्यक संसाधन
	फीडबैक	15 मिनट	10.00 -10.15 AM	
सत्र-1	स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम की साप्ताहिक और दैनिक शिक्षण योजना	1 घंटे	10.15-11.15 AM	
चाय 15 मिनट 11:30-11:15 AM				
सत्र-2	स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम की साप्ताहिक और दैनिक शिक्षण योजना	1 घंटे	11:30-12:30 AM	
सत्र-3	स्कूल रेडीनेस और आकलन आकलन प्रपत्र	1 घंटे	12.30-12.30 PM	
भोजनावकाश 1 घंटे 1:30-2:30 PM				
सत्र-4	स्कूल रेडीनेस और आकलन आकलन प्रपत्र	1 घंटे	2:30-3:30 PM	
चाय 15 मिनट 3:30-3:40 PM				
सत्र-5	स्कूल रेडीनेस और आकलन आकलन प्रपत्र	1:00 घंटे	03:40-4:40 PM	
समेकन	फीडबैक	50 मिनट	04:40-5:30 PM	

पांचवा दिन – इक्कीसवीं सदी के कौशल एवं समावेशी शिक्षण				
क्रम	सत्र	अवधि	समय	आवश्यक संसाधन
	फीडबैक	15 मिनट	10.00 -10.15 AM	
सत्र-1	प्रिंट रिच वातावरण और सामग्री का रखरखाव सीखने और गतिविधि के कोने	1 घंटे	10.15-11.15 AM	
चाय 15 मिनट 11:30-11:15 AM				
सत्र-2	प्रिंट रिच वातावरण और सामग्री का रखरखाव सीखने और गतिविधि के कोने	1 घंटे	11:30-12:30 AM	
सत्र-3	21 वीं सदी के कौशल	1 घंटे	12.30-12.30 PM	
भोजनावकाश 1 घंटे 1:30-2:30 PM				
सत्र-4	समावेशी शिक्षा	1 घंटे	2:30-3:30 PM	
चाय 15 मिनट 3:30-3:40 PM				
सत्र-5	स्कूल रेडीनेस में पालकों व समुदाय की भूमिका	1:00 घंटे	03:40-4:40 PM	
समेकन	फीडबैक	50 मिनट	04:40-5:30 PM	

100 प्रतिशत बच्चों को सिखाने के लिए छह बिंदु-

1. पियर लर्निंग, ग्रुप लर्निंग, विषय-मित्र बनाएँ।
2. बच्चों की जिज्ञासा का सम्मान करें।
3. सीखने की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी का उपयोग करें।
4. बच्चों को स्वयं से अधिक सीखने के लिए चुनौती दें।
5. बच्चों को खुद से सीखने के लिए प्रेरित करें।
6. सेल्फी विथ सक्सेस लें।

कब लें सेल्फी विद सक्सेस

सीखने के लिए दी आपने कोई चुनौती,
चुनौती पूरी कर लेने का आया कोई केस।
तो उसके साथ लें सेल्फी विद सक्सेस।

बच्चे ने कोई जिज्ञासा व्यक्त की, फिर,
समाधान भी लाया मुश्किलों को करके फेस,
तो उसके साथ लें सेल्फी विद सक्सेस।

जब बच्चा खुद से ही सीखने के लिए,
खुद ही खुद से करने लगे रेस,
तो उसके साथ लें सेल्फी विद सक्सेस।

शिक्षण शास्त्र के पाँच बिंदुओं में से,
किसी में भी बच्चे ने किया विशेष,
तो उसके साथ लें सेल्फी विद सक्सेस।

21 वीं सदी का शिक्षण शास्त्र